आर्यकुल-कमल हिन्दू-सूर्य्य महाराजाधिराज

महाराणाजी श्री सर भूपालसिंहजी बहादुर

जी० सी० एस० आई०

के० सी० एस० आई०

उदयपुर

के

पवित्र

चरण कमलों में

सादर श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक

'लंदन में भारतीय विद्यार्थी' नामक कृति

समर्पित

विनीत दास—

मानसिंह
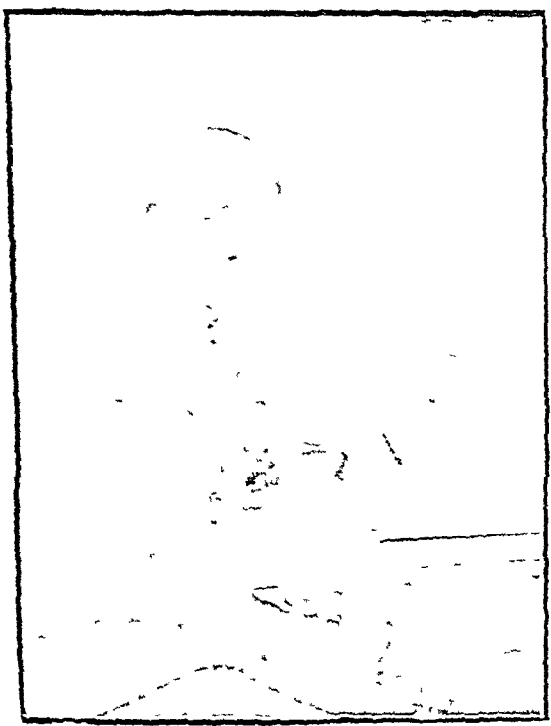
प्राक्कथन

पुस्तक के प्रारम्भ में प्राक्कथन लिखने की प्रथा बहुत पुरानी है। मैं केवल उक्त परिपाटी को निभाने की दृष्टि से ही ये शब्द नहीं लिख रहा हूं वरन् प्रस्तुत पुस्तक का विषय ही कुछ ऐसा है कि मुझे सन्देह होता है कि बिना कुछ कहे पाठक गण मेरे असली उद्देश्य को अतिरिक्त रूप में न समझ बैठें। इस पुस्तक के लिखने का मुख्य उद्देश्य यह है कि हिन्दुस्थान से इंगलैंड जाने वाले विद्यार्थी और उनके अभिभावक वहां की स्थिति को समझें, परखें और उससे जीवन-निर्माण में सहायता ले सकें।

पुस्तक को रोचक बनाने के लिये यद्यपि इसे उपन्यास की शैली में लिखा है, पर घटनायें यथा सम्भव ऐसी ही दी गई हैं जो प्रवासी भारतीय विद्यार्थियों के साथ नित्य-प्रति घटती रहती हैं। हाँ! पात्रों के नाम अवश्य कल्पित रक्खे गये हैं। इसके अतिरिक्त मैंने इसमें पारस्परिक वाद-विवाद के रूप में दोनों देशों के रस्म रिवाजों को इस ढंग से वर्णन करने का प्रयत्न किया है कि जिससे भारतीय विद्यार्थी जो उच्च-शिक्षा प्राप्ति के उद्देश्य से विलायत जावें, इन बातों की जानकारी प्राप्त कर वहाँ रहने की दशा में लाभ-प्राप्त कर सकें।

पुस्तक का प्रकाशन अत्यन्त शीघ्रता में हुआ है। यहाँ तक कि प्रूफ भी मैं नहीं देख सका। इसी से यत्र तत्र अशुद्धियाँ और कुछ परस्पर विरोधी भावों का समावेश हो गया है। यदि पुस्तक के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन का अवसर आया तो, मैं उन सब त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न करूँगा।

राजपूताना साहित्य मंडल के संचालक पं० बल्देवप्रसाद शर्मा ने पुस्तक को शीघ्र प्रकाशित करने में यथेष्ट श्रम किया है अतः वे धन्यवाद के पात्र हैं।

यदि पाठक गण मेरे उद्देश्य को कुछ भी समझ सके और जिन भावनाओं से यह पुस्तक लिखी गई है उनको दृष्टि में रखते हुए कुछ भी लाभ उठा सके तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा अन्त में मैं श्रीयुत काशीप्रसाद जी जायसवाल एम० ए० बार-एट-ला पटना का भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने पुस्तक के लिए 'दो बात' लिखने की कृपा की है।

बनेड़ा ता० २०-४-२५ ई०

—लेखक

दो बात

श्री राजकुमार मानसिंहजी सच्चे सिसोदिया वंशज हैं। इंगलैंड में इनकी सुचरित्रता मशहूर थी। साथ ही इनकी आँख तेज़ और बुद्धि प्रखर है। इस सामाजिक उपन्यास में इन्होंने भारतीय विद्यार्थियों की कठिनाइयों को जिनका इंगलैंड-प्रवास में उन्हें मुकाबला करना पड़ता है, योग्यता से, चित्रित किया है। पढ़ने से मालूम होगा कि आप फिल्म देख रहे हैं। इस चित्रण में सिर्फ कल्पना ही नहीं; सचाई है। इसे पढ़ कर लोग आगाह हो जायँगे कि वहाँ हमारे युवकों को क्या देखना और झेलना पड़ता है। सच कहना पुण्य है। राजकुमार साहब ने सच्चा खाका खींच कर उपकार किया है। यह भी कहना आवश्यक है कि बहुत से, कोई तीस फी सदी, विद्यार्थी वहाँ सही सलामत रह जाते हैं। जो वहाँ से ठीक निकल आया वह इस देश का गौरव बढ़ाता है। इंगलैंड लड़कों का भेजना इस तरह कुछ जुआ सा खेलना है। बिना हिम्मत किये जीत हार नहीं होती। इससे मेरी राय लड़कों को वहाँ तालीम देने की है पर समझ बूझ कर और टटोल बजा कर लड़कों को वहाँ जाने के लिए चुनना चाहिए। राजकुमार ने सच कह कर उपकार ही नहीं पुण्य कार्य किया है। हमारे भाइयों को ठीक ठीक वहाँ का पता लगाना आवश्यक है। वहाँ की समाज संस्था हमारे विचारों से बिल्कुल पृथक् है।

भारतीय अब विदेश बहुत जाते हैं पर यात्रा पुस्तक बहुत कम लिखी जाती हैं। जापान में इसका उल्टा है। इतना खर्च किया जाता है उसका उपयोग यह भी है कि विदेश वर्णन यहाँ देश भाषाओं में हमारे भाई लिखें। इस दृष्टि से भी राजकुमार का ग्रन्थ आदरणीय है।

इन्दौर	काशीप्रसाद जायसवाल
(हिन्दी साहित्य सम्मेलन)	एम० ए० (ओक्सन)
तारीख २१ अप्रेल १९३५	बार-एट-ला पटना

रहे हैं। 'राजस्थान साहित्य मन्दिर' हमारी योजनाओं का एक मु-
ख्य लक्ष्य है। हमारी हार्दिक आकांक्षा है कि प्रान्त के लेखकों द्वारा ऐसे साहित्य का निर्माण हो जिसके द्वारा प्रान्त में ज्ञान प्रसार और आत्म जागृति पर्याप्त रूप में होवे। हमारे मत में अनेक आकांक्षाएँ पर ये तभी सफल हो सकती हैं जब कि प्रान्त के लेखक, सुशि- साधन-सम्पन्न व्यक्ति अपना सहयोग देने की उदारता करें।

राजस्थान साहित्य मन्दिर के प्रथम पुष्प के रूप में '[illegible] नीय विचारों' नामक पुस्तक हम हिन्दी भाषा भाषी जनता की सेवा में रख रहे हैं। पुस्तक हिन्दी साहित्य में अपने विषय की प्रथम ही है। य- हम पुस्तक के गुण दोष विवेचन में पड़ना नहीं चाहते। यह कार्य हम विद्वान् लेखकों एवम् विचारशील सम्पादकों पर ही छोड़ते हैं। प्रस्तु- पुस्तक प्रारंभ में अंग्रेजी में लिखी जाकर प्रकाशित की जाने की तैया- हो रही थी। लंदन की एक विख्यात फर्म उचित पुरस्कार देकर प्रकाशित करने को प्रस्तुत थी किन्तु हमारी प्रार्थना पर उदारतापूर्वक लेख- ने हिन्दी में इसकी रचना की। प्रस्तुत पुस्तक के विद्वान और अनुभ- लेखक श्रीमान् राजकुमार मानसिंहजी भारत के राजकुमारों में प्रथम बैरिस्टर हैं। जिन व्यक्तियों को कभी राजकुमार मानसिंहजी से मिल- का अवसर मिला है वे जानते हैं कि उनके हृदय में देश, जाति, साहित्योत्थान की भावनायें किस गहराई तक प्रविष्ट हो चुकी हैं हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि प्रस्तुत विषय पर पुस्तक लि- के लिये राजकुमार से अधिक योग्य व्यक्ति शायद ही कोई हो सकता था आपके भारत लौटते समय लंदन के एक पत्र ने आपके विषय में अप- विचार करते हुए लिखा था —

'While he was here he did more for the occidental understanding of the Oriental mind than all the White Papers and Blue Books in

existence..................." अर्थात् "......राजकुमार ने यह रहते समय पूर्वीय सभ्यता के रूपको जितनी अच्छी तरह से पाश्चात्य मनुष्यों के सामने रखने का प्रयत्न किया, उतनी अच्छी तरह इस विषय को समझाने का प्रयत्न आज तक............

उक्त पत्र के इन भावों को देखकर हम कह सकते हैं कि जो व्यक्ति पूर्व का वास्तविक रूप पश्चिम के सामने रख सकता है वही पश्चिम के आचार विचारों को पूर्वीय देशों को भी समझा सकता है। हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि विद्वान लेखक द्वारा निकट भविष्य में भी साहित्य की वृद्धि होती रहेगी।

पुस्तक अत्यन्त ही शीघ्रता में प्रकाशित हुई है, अतएव पर्याप्त श्रम करने पर भी शीघ्रता के कारण कई अशुद्धियाँ रह गई हैं। यदि अव-सर मिला तो हम इन अशुद्धियों को द्वितीय संस्करण में दूर कर देंगे।

अंत में हम मातृभाषा हिन्दी के सुलेखक सुकवि और साधन-संपन्न महानुभावों की सेवा में यह निवेदन करते हैं कि वे यथा शक्ति इस शुभ अनुष्ठान में क्रियात्मक रूप से हमारा हाथ बटाकर सहयोग देवें। उनकी इस उदार कृपा से हमें अपने कर्त्तव्य पालन में पर्याप्त सहायता मिलेगी।

स्नेह-भेंट

श्रीमान् ______________________

____

____

पढ़ने लगा। वह चाहता था कि उसे विदेश यात्रा और पाश्चात्य सभ्यता का कुछ ज्ञान हो जाय। उसने दो तीन पुस्तकें, जो भारत में न मिल सकीं उन्हें वी० पी० द्वारा लन्दन से मँगवा कर पढ़ा किन्तु इतनी पुस्तकें पढ़ लेने पर भी उसे पूर्ण सन्तोष न हुआ। हो कैसे सकता था? जिस देश, स्थान अथवा वस्तु को न देखा उसके लिये विचार करना देखने के समान नहीं हो सकता। देशी सभ्यता के विषय में उसने कुछ ऐसी बातें भी पढ़ी थीं जिनका सभ्यता में होना उसे कुछ असम्भव-सा प्रतीत हुआ, यद्यपि बातों के विषय में उसने अंग्रेजी उपन्यासों में अवश्य पढ़ा किन्तु उसे उनपर विश्वास न हुआ। अबतक वह यही समझता कि जो चरित्र उपन्यास में दिये गये हैं वे सच्चे नहीं, बल्कि पत हैं। उसे यह मालूम न था कि एक दिन वह भी इंग्लैन्ड और उसे उस सभ्यता में रहना पड़ेगा और जिन चरित्रों षय में उसने पढ़ा है उन्हें वह स्वयं अपनी आँखों से देखेगा।

एक दिन सवेरे मदन अपने कमरे में बैठा हुआ पुस्तक पढ़ा कि इसी बीच उसने पोस्ट-मैन (डाकिये) की आवाज। वह दौड़कर उसके पास आया और अपने पते का पत्र उत्सुकतापूर्वक पढ़ने लगा। इसी पत्र में उसके परीक्षो- होने की सूचना थी। उसके हर्ष का पार न रहा। उस पत्र र वह पिताजी—पिताजी चिल्लाता हुआ अपने पिता के

उसका विवाह कर दिया जायेगा और फिर उसे अपने लिए नौ
की तलाश करनी पड़ेगी। इसी कारण मदन को रात दिन
चिन्ता लगी रहती थी कि यदि वह अनुत्तीर्ण हुआ तो उसे पि
जी की आज्ञा पालन करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। उसे दू
भय यह भी था कि यदि वह इंग्लैन्ड न गया तो वह असह
आन्दोलन (Civil Disobdience Movement) से न
सकेगा और परिणाम यह होगा कि उसकी शिक्षा का अन्त
जायगा। उसके बढ़े-चढ़े कट्टर विचार ही इस आशंका ने
चिंतित कर देते थे। वह इस बात का ध्यान रखता था
'विद्यार्थियों को राजनैतिक विषयो मे भाग नहीं लेना चाहिये क्यों
उनके विचार पक्के नहीं होते और इसी कारण उनके द्वारा भ
की अपेक्षा बुराई ही अधिक हो जाती है। अबतक कितने ही भ
तीय विद्यार्थियों ने इसमें भाग लेकर अपना जीवन नष्ट कर द
है। मदन का यह मतलब न था कि राजनैतिक आन्दोलन
भाग लेना ही बुरा है किन्तु उसकी हार्दिक इच्छा यही थी
पहले भारतवर्ष मे पढ़-लिख कर वह योरप जाय और वह
विश्व-विद्यालियो मे शिक्षा प्राप्त करने के बाद यथाशक्ति देश
करे। वह यह नहो चाहता था कि स्वय-सेवक बनकर अपने
पीने का भार भी प्रजा-फंड पर डाले।

परीक्षा समाप्त होने पर मदन विदेश-यात्रा विषयक पु

पढ़ने लगा। वह चाहता था कि उसे विदेश यात्रा और पाश्चात्य सभ्यता का कुछ ज्ञान हो जाय। उसने दो तीन पुस्तकें, जो भारत में न मिल सकीं उन्हें वी० पी० द्वारा लन्दन से मँगवा कर पढ़ा किन्तु इतनी पुस्तकें पढ़ लेने पर भी उसे पूर्ण सन्तोष न हुआ। हो भी कैसे सकता था? जिस देश, स्थान अथवा वस्तु को न देखा हो उसके लिये विचार करना देखने के समान नहीं हो सकता। विदेशी सभ्यता के विषय में उसने कुछ ऐसी बातें भी पढ़ी थीं जिनका उस सभ्यता में होना उसे कुछ असम्भव-सा प्रतीत हुआ; यद्यपि इन बातों के विषय में उसने अंग्रेजी उपन्यासों में अवश्य पढ़ा था किन्तु उसे उनपर विश्वास न हुआ। अबतक वह यही समझता था कि जो चरित्र उपन्यास में दिये गये हैं वे सच्चे नहीं, बल्कि कल्पित हैं। उसे यह मालूम न था कि एक दिन वह भी इंग्लैन्ड जायगा और उसे उस सभ्यता में रहना पड़ेगा और जिन चरित्रों के विषय में उसने पढ़ा है उन्हें वह स्वयं अपनी आँखों से देखेगा।

एक दिन सवेरे मदन अपने कमरे में बैठा हुआ पुस्तक पढ़ रहा था कि इसी बीच उसने पोस्टमैन (डाकिये) की आवाज सुनी। वह दौड़कर उसके पास आया और अपने पते का पत्र पाकर उत्सुकतापूर्वक पढ़ने लगा। उसी पत्र में उसके परीक्षोत्तीर्ण होने की सूचना थी। उसके हर्ष का पार न रहा। उस पत्र को लेकर वह पिताजी—पिताजी चिल्लाता हुआ अपने पिता के

द्वितीय-परिच्छेद

'शुभ-स्वप्न'

मदन ने स्वप्न में देखा कि वह एक बड़े सुन्दर सजे सजाये कमरे में बैठा हुआ है। सहसा उसकी दृष्टि एक चित्र की ओर आकर्षित हुई। वह चित्र एक सुन्दरी का था। उसके सौन्दर्य को देखकर वह मुग्ध होगया और मन ही मन में सोचने लगा—आह! ईश्वर ने इसे कैसी मृग की सी सुन्दर आँखें; कैसा भोला-भाला मुख और कैसा सुन्दर सुघड़ शरीर दिया है। किन्तु इन सब बातों को सोचने के साथ-साथ मदन कभी-कभी इधर-उधर भी देखता जाता था। क्योंकि उसे भय था कि कोई कमरे में न आ जाय। इसलिये चित्र की ओर देखते रहने पर भी उसके हृदय में लोकलज्जा अवश्य था। उसे कभी यह भी विचार होता था कि किसी नारी के चित्र को देखना पाप है। किन्तु फिर भी उसका दिल उसी ओर दौड़ रहा था। उसे यही

है । साथ ही इस बात को भी वह नहीं जानती थी कि मदन
लिये पहला ही अवसर था जब कि उसे एक युवती के
अकेले कमरे में बैठना पड़ा । किन्तु इतने पर भी वह युवती
चुप न रह सकी उसने कहा "मदन ! इस प्रकार मौन क्यों हो
क्या मेरा यहाँ आकर बैठना तुम्हें पसन्द नहीं ? यदि बुरा
न मानो तो मैं यह कहूँगी कि तुम बड़े ही भोले
और सरल स्वभाव के सज्जन पुरुष मालूम होते हो।
इस पर मदन ने उत्तर दिया—'यह तो आपकी कृपा है
मुझे ऐसा समझती हैं किन्तु मैं अपने को इस योग्य नहीं
हूँ।" यह सुनते ही युवती ने मुसकराते हुए मदन के गले में
डाल दी और एक अपूर्व भाव से उसकी ओर देखा ।

इस दृश्य से मदन एकदम घबरा उठा और उसके सारे शरी
रोमाञ्च हो आया उसी घबराहट मे उसकी नींद खुलगई । कुछ
बाद सावधान होकर जब उसने लालटैन जलाकर देखा तो अपने
घर में ही सोता हुआ पाया । वहाँ न कोई युवती थी, न परदेशी
वह उसी कमरे में सोया हुआ था—जिसमे कि उसने बाल्य
और किशोरावस्था को बिताया था । अत जैसे ही पूर्ण स्व
होकर उसने फिर से सोने का विचार किया कि इसी बीच अ
पिता की आवाज सुन कर वह उठ बैठा । इसके बाद जब उस
घड़ी की ओर देखा तो ५ बजने मे १५ मिनट बाकी थे । "

ििदेरे ही जाने का निश्चय कर चुका था। अतः उसे उसी समय
ठना पड़ा। तत्काल ही वह स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्ति हो
या। बिस्तर, कपड़े आदि तो उसने पहले ही जमा लिये थे
केवल घर से प्रस्थान करना ही शेष था। अतः चलने से पहले
अपनी माता के पास गया। माता के नेत्र अश्रुओं से पूरित थे।
सने उसी दशा में कहा—

"बेटा तुम शिक्षा प्राप्त करने विलायत जा रहे हो यह प्रस-
ता की बात है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम पढ़ने में कुछ
कसर न रक्खोगे किन्तु इसी के साथ मेरा यह भी कहना है कि
म अपने धर्म का पालन कभी न छोड़ना। परमात्मा तुम्हें सद्
द्धि दे, और मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम अपने भारतीय आदर्श
। कदापि न भूलोगे।"

माता के ये उपदेशप्रद शब्द उसके हृदय में बैठ गये और
सकी आँखों में पानी भर आया। उसने अपनी मातेश्वरी के
रणों में मस्तक लगाया और वहाँ से चल कर वह पिता के पास
या। पिता ने उसे यह आदेश किया—

बेटा मदन! मैं किसी भाँति से रुपया इकट्ठा करके तुम्हें
लायत भेज रहा हूँ। मेरी इच्छा यही है कि तुम योग्य और
ज्ञान पुरुष बन कर वापस आओ। मैं यह नहीं चाहता कि तुम
श्चात्य सभ्यता में लिप्त होकर हम सबको भूल जाओ। मुझमें

साथ तीन हिन्दुस्तानी तो हैं। वह केवल देख ही रहा थ
इतने में एक दूसरे विद्यार्थी ने, जो मद्रास से आया था,
बातचीत आरम्भ कर दी। उस विद्यार्थी का नाम मिस्टर
था। उसने बी० ए० की परीक्षा तीसरी श्रेणी में पास की थी
विलायत में I C S एवं बैरिस्ट्री पढ़ने के लिए जा रहा
वह अन्य मद्रासियों की भाँति कुरूप नहीं था। कद उसका
था और चहरे की बनावट सुन्दर थी। शरीर का रंग
गोरा ही था और न काला ही। किन्तु जहाज में चढ़ते ही
और का और हो गया था। हिन्दी भाषा तो वह बोलने ही
लगा ? उसे तो अपनी अंग्रेजी की शान दिखलानी थी।
लिए वह इस ढंग से बातें करने लगा कि मानो उसके पूर्व
तीन बार योरुप जा चुका हो।

मदन मन ही मन सोचने लगा, यह लड़का होशियार है
चलता-पुर्जा मालूम होता है। इसकी बाते भी बड़ी मनोरंजक
किन्तु उसे यह पता न लग सका कि वह अन्य भारतीय वि
र्थियो की भाँति अप्रसन्न क्यो नहीं है। यद्यपि इस बात पर प्र
न्नता तो सब ही को थी कि हम एक नये देश को जा रहे
और वहाँ नये-नये स्थान एवं नई वस्तुएँ देखेंगे। सामुद्रिक या
का अनुभव करेंगे, नाना भाति के व्यक्तियो से मिलेंगे, इत्या
इत्यादि। किन्तु इस प्रसन्नता से कितना ही अधिक दु:ख

बात का था कि हम अपने माता-पिता से बिछुड़ रहे हैं। क्या पता कि हमें उनके फिर दर्शन होंगे या नहीं। अपने इष्ट-मित्र, जिनका सहवास इतना आनन्द देता, एवं जिनकी बातें हँसाती और जिनकी सलाह हमेशा फायदा ही पहुँचाती थी, उनसे अलग होना भला किसे खिन्न नहीं कर देता? अपने देश, अपनी मातृ भूमि को छोड़ने में किस मनुष्य को दुःख नहीं होता? किन्तु इतने पर भी मिस्टर ऐय्यर के चेहरे पर प्रसन्नता झलक रही थी और दुःख का लेश-मात्र भी नहीं था। ऐसा मालूम होता था मानों वह किसी जेल खाने से छूट आया हो। एक कैदी को जेल से छूटने पर प्रसन्नता अवश्य होती है, किंतु बहुतेरो को इतनी प्रसन्नता होती है कि वे उसी के नशे में चूर-से हो जाते हैं और उनमें विचार शक्ति ज़रा भी नहीं रह पाती। किसी को तो इतना हर्ष होता है कि यदि वह पक्का चोर हो तो इस खुशी के मारे फिर चोरी करने को उसका मन दौड़ने लगता है। यदि उसके पास शराब पीने को पैसे हो तो वह सीधा कलार की दूकान पर पहुचे और सब पैसो की शराब पीकर मस्त हो जाय। अथवा यदि वह अय्याश हो तो सीधा वेश्या के घर जाकर भोगविलास में मग्न हो जाय।

यही हालत मिस्टर ऐय्यर की थी। उनके मुँह में से सिग्रेट निकलता ही न था। इसका कारण कदाचित् यह था कि वह

हमारे पास ही की कुर्सी पर थे। उस समय हम सब ने आपस में सलाह भी की थी कि कोई ऐसा उपाय करें कि आप खुद हम से बोलें। किन्तु आपने हमें वह मौका ही नहीं दिया। मदन ने नम्रता के साथ कहा—"क्षमा कीजिये आप लोगों का कहना यथार्थ है। किन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आप का अपमान करना कदापि नहीं चाहता। यदि आप अप्रसन्न न हो तो मैं आप से यह निवेदन करूँगा कि मेरे मौन और उदासीन रहने का आशय केवल यही है कि आप लोग मुझे उन दूसरे तीन विद्यार्थियों की तरह न समझ लें। इस बात को आप भली भाँति जानती हैं कि भारत मे मनुष्य और रमणियाँ बिल्कुल अलग रहते हैं। आपका और हमारा साथ रहना केवल परदेश में ही संभव होता है। और जो पहले-पहल परदेश जाते हैं उनके विचार बदलने में देर भी लगती है। मैं भी विद्याभ्यास के लिए लंदन जा रहा हूँ और मेरा पक्का विचार है कि वहाँ की सभ्यता को निष्पक्ष रूप से समझने का प्रयत्न करूँ।"

इस प्रकार वार्तालाप होते होते जहाज अदन जा पहुँचा, किन्तु इस बन्दरगाह पर जहाज के अधिक देर न ठहरने से कोई भी यात्री नीचे उतर कर शहर देखने नहीं गया। जहाज के लाल सागर में प्रवेश होते ही गर्मी अधिक मालूम होने लगी। दिन का समय तो मुसाफिर लोग खेल-कूद, ताश और बातों मे

कहा—"विदेश में तो गौमांस खाने में कोई दोष नहीं। हाँ, यदि दोष है तो भारत की गाय खाने में ही। उस समय मदन और गुप्ता के मुँह की दशा देखने योग्य थी। उनके मुँह पर घृणा, क्रोध और करुणा तीनों झलक रहे थे। यदि मदन न होता तो अवश्य ही गुप्ता और ऐयर में लड़ाई ठन जाती, किन्तु बात बढ़ते देख मदन को गुप्ता के कान में कहना पड़ा, "अच्छा हो कि आप चुप हो जावँ।"

वह शाम तो चुपचाप ही बीती, क्योंकि मुसाफिर थके हुए थे। साथ ही इधर-उधर सामान को रखने जमाने में वे और भी थक गए थे। अत: ११ बजे तक सब सो गये। आज जहाज़ में चौथा दिन है। जहाज़ पर अनेक प्रकार के खेल इत्यादि आरम्भ हो गये हैं। यात्रियों ने एक दूसरे से जान-पहिचान भी कर ली है। अकेला मदन ही ऐसा था जिसे ज्यादा बातचीत करना पसंद न था। उसने जब अन्य विद्यार्थियों को उन लड़कियों के पीछे ज्यादा घूमते देखा तो सोचा कि बिना किसी के द्वारा परिचय प्राप्त किये मेरा उनसे बातचीत करना ठीक न होगा। किन्तु उनमें से एक लड़की ने तो मदन को मार्सेलीज़ पहुँचते पहुँचते कह ही दिया कि आप बड़े सज्जन मालूम होते हैं। दूसरे विद्यार्थी तो हम से मिलने की चाह रखते हैं, किन्तु आप तो, बात करना दूर रहा, हमारी तरफ देखना भी पसन्द नहीं करते। आपको याद होगा कि एक दिन हम चारों कुर्सियों पर बैठी हुई थीं और आप भी

हमारे पास ही की कुर्सी पर थे। उस समय हम सब ने आपस में सलाह भी की थी कि कोई ऐसा उपाय करें कि आप खुद हम से बोलें। किन्तु आपने हमें वह मौका ही नहीं दिया। मदन ने नम्रता के साथ कहा—"क्षमा कीजिये आप लोगों का कहना यथार्थ है। किन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आप का अपमान करना कदापि नहीं चाहता। यदि आप अप्रसन्न न हों तो मैं आप से यह निवेदन करूँगा कि मेरे मौन और उदासीन रहने का आशय केवल यही है कि आप लोग मुझे उन दूसरे तीन विद्यार्थियों की तरह न समझ लें। इस बात को आप भली भाँति जानती हैं कि भारत में मनुष्य और रमणियाँ बिल्कुल अलग रहते हैं। आपका और हमारा साथ रहना केवल परदेश में ही संभव होता है। और जो पहले-पहल परदेश जाते हैं उनके विचार बदलने में देर भी लगती है। मैं भी विद्याभ्यास के लिए लंदन जा रहा हूँ और मेरा पक्का विचार है कि वहाँ की सभ्यता को निष्पक्ष रूप से समझने का प्रयत्न करूँ।"

इस प्रकार वार्तालाप होते होते जहाज अदन जा पहुँचा, किन्तु इस बन्दरगाह पर जहाज के अधिक देर न ठहरने से कोई भी यात्री नीचे उतर कर शहर देखने नहीं गया। जहाज के लाल सागर मे प्रवेश होते ही गर्मी अधिक मालूम होने लगी। दिन का समय तो मुसाफिर लोग खेल-कूद ताश और बातों में

ही व्यतीत करते थे और खाने के बाद हमेशा नाच (Dance) होता था। लेकिन मदन और गुना कम या पन्द्रह मिनिट इसे देखने के बाद अपने केबिन में जाकर सो जाते। अन्य विद्यार्थी जो देखने और सीखने के इच्छुक थे, वे वहीं बैठे रहते और समाप्त होने पर ही सोने को जाते। उनमें से कुछ तो केबिनों में हवा न होने से अपने बिस्तर डेक पर ले जाकर वहीं सोते। जब तक जहाज लाल समुद्र में रहा, तब तक मुसाफिरों को गर्मी के मारे बहुत परेशानी रही। वहाँ पहले तो हवा ही नहीं चलती थी और कभी चलती भी तो वह बेहद गर्म होती थी। पसीने से सारा शरीर चपचप करने लगता था। हमेशा स्नान करने की इच्छा बनी रहती थी, किन्तु स्नान भी गर्म पानी से ही करना पड़ता था क्योंकि गर्मी के मारे वह गर्म हो जाता था। इसी कारण शरीर को पोंछते ही फिर पसीना आने लगता था। इसी प्रकार गर्मी के मारे भूख भी नहीं लगती थी। कभी इच्छा भी होती तो ठंडी चीज पीने की, किन्तु शराबी तो जब प्यास लगती, तब भी बियर (Beer) का एक ग्लास पी लेते थे। फिर भी सब यही इच्छा करते थे कि कब समुद्र से बाहर निकलें।

चतुर्थ परिच्छेद
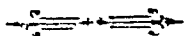
मि० ऐयर का सैलानीपन

जहाज पोर्ट स्वेज पर जाकर ठहर गया और प्रभात होने पर उसने स्वेज नहर में प्रवेश किया। स्वेज नहर के एक ओर मरु-भूमि अरबस्तान और दूसरी ओर मिश्र देश होने से गर्मी बनी ही रही। किन्तु नये यात्रियों को स्वेज नहर देखने की इच्छा के कारण अधिक गर्मी नहीं लगी और आठ घंटे उन्होंने इधर उधर देख भाल में बिता दिये।
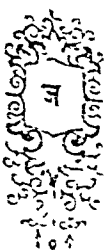
धीरे धीरे शाम होने आई। अब जहाज पोर्ट सैयद पर पहुँचने को था। यात्री लोग हर्षित हो रहे थे कि पोर्ट सैयद पर जहाज से उतर कर नई नई वस्तुएँ खरीदने का अवकाश मिलेगा। इसी प्रकार जिन्हें पोर्ट सैयद देखना है, वे भी उसे घूम-फिर कर देख सकेंगे, अथवा जिन्हें पोर्ट सैयद की वेश्याओं के पास आमोद-प्रमोद के लिए जाना है, उन्हे भी वहाँ जाने का मौका

मिल सकेगा। फलत. जहाज के पोर्ट सैयद पहुँचने पर कोई विरला ही मनुष्य ऐसा होगा जो जहाज से उतर कर कुछ न कुछ देखने न गया हो। मदन और गुप्ता के आपस मे साथ चलने का वादा हो गया था; अतः वे दोनो भी पोर्ट देखने गये। वे दोनों जहाज से उतर कर नीचे आये ही थे कि मिश्र देश के व्योपारी इनकी ओर आ डटे। एक ने पास आकर पूछा—

"क्या आप मिश्र की अद्भुत चीजें खरीदना चाहते हैं? मेरे पास अच्छे मूँगों की बड़ी सस्ती कंठियाँ हैं।"

मदन ने कहा, "नहीं महाशय, हमें कुछ भी नहीं खरीदना है।"

उसने फिर कहा—"पिक्चर पोस्टकार्ड्स तो आप अवश्य ही खरीदियेगा। मेरे पास 'लपलप' भी मौजूद है।"

मदन और गुप्ता को लपलप शब्द का आशय समझ में नहीं आया, अत. उन्होने पूछा कि यह लपलप क्या बला है?

सौदागर ने कहा— 'क्या आप लपलप नहीं जानते? इधर पुलिस देख रही है। एक तरफ चलिये। मै आपको वहाँ बतलाऊँगा।"

फिर भी ये नहीं समझ सके। इन्होने कहा—'हम वहाँ नहीं चलते, हमे तो यहीं बतलाओ।'

इस पर फिर उसने कहा—"मेरे पास बड़े ही सुन्दर पिक्चर

पोस्टकार्डस् हैं आप देखिये, तो सही। ये सब पेरिस के बने हुए हैं।"

जब उसने पेरिस का नाम लिया; तब जाकर समझ में आया कि ये सब नंगी और खराब तसवीरें हैं। किन्तु फिर यह सोचा कि कम से कम देखना तो चाहिये। बिना देखे कैसे पता लग सकता है कि ये कैसी तसवीरें हैं।

इन्होंने उन कार्डों को देखा तो उनमें ऐसी-ऐसी बातें देखने में आई जिनकी इन्हें पहले कभी कल्पना तक नहीं हुई थी। इन लोगों ने चित्रों को देख कर वापस दे दिया और कहा—'नहीं महाशय, हमें ये कार्ड नहीं चाहिये।"

सौदागर ने उसमें से कुछ कार्ड देने की बहुत कोशिश की और अंत में यहाँ तक कहा कि अच्छा चलिए मैं आपको यहाँ की परम सुन्दरियों के घर ले चलूँ। वहाँ ज्यादा दाम आपको नहीं लगेंगे और जल्दी ही आप लोग वापिस लौट सकेंगे किन्तु इन दोनों ने उसके साथ जाने से साफ इन्कार कर दिया।

सौदागर ने कहा— महाशय! यह मेरे लिए पहला ही मौका है, जब कि किसी मुसाफिर ने पिक्चर-पोस्टकार्डस् खरीदने या मेरे साथ जाने से इन्कार किया हो।'

मदन और गुप्ता हँसने लगे और इन्होंने हँसते-हँसते फिर

पूछा, "क्या प्रत्येक हिन्दुस्तानी यात्री तुम से कुछ न कुछ अवश्य खरीदता है ?"

उसने कहा—"क्यों नहीं ! जब आप सफर करते हैं तो घर की औरतों के लिए भी कुछ जेवर या कंठी वगैरा जरूर खरीदना चाहिये। या फिर यहाँ के ये पोस्टकार्डस्, जो बहुत मशहूर हैं, जरूर लेना चाहिए और नहीं तो कम से कम नग्न स्त्रियों का नाच तो देखना ही चाहिये जो कि पोर्ट सैयद का एक अजीब ही दृश्य है। मैंने देखा है कि प्रायः सभी हिन्दुस्तानी कुछ न कुछ खरीदते या नाच तो देखते ही हैं।

मदन और गुप्ता इससे छुटकारा पाकर कुछ दूर गये ही थे कि फिर एक दूसरा तसवीरें बेचने वाला आया। लेकिन जैसे-तैसे उससे भी इन्होंने अपना पीछा छुड़ाया। आगे बढ़ने पर इन्होंने देखा कि जिधर जाओ उधर येही लोग मिलते हैं। अब जहाज पर लौट चलना ही इन्होंने उचित समझा। इधर जहाज के चलने में जब आधा घंटा रह गया तब ऐयर और उनके यार दोस्त तथा दूसरे मुसाफिर वापस लौट कर आये। मदन ने आते ही ऐयर से सब हाल पूछा।

ऐयर भी यही मौका चाह रहा था। उसने अपना सारा अनुभव कह सुनाया और अभिमानपूर्वक बोला—"हम एक वेश्या के घर गए थे और हमने वहाँ उसका नगा नाच देखा था।

इसके बाद वह उस नाच की बड़ी प्रशंसा करने लगा। उसने मदन से कहा—"तुम बड़े वाहियात आदमी मालूम होते हो, तुम्हें कम से कम वह नाच देखने तो जरूर ही जाना चाहिये था, उसे देखने में तो कुछ भी हानि नहीं थी।"

किन्तु मदन ने उसे फटकारते हुए कहा, "मुझे ऐसी बातें ज़रा भी नहीं देखनी हैं।"

जहाज़ ने पोर्ट सैयद से रवाना होकर भूमध्यसागर में प्रवेश किया। एक घंटे बाद ही ठंडी हवा चलने लगी। तब कहीं जाकर सबके जी में जी आया। मदन अब जहाज़ में एक नई ही बात देखने लगा और वह यह कि अंग्रेज़ लोग पोर्ट सैयद के बाद हिन्दुस्तानियों से कुछ-कुछ मिलना-जुलना शुरू कर देते हैं। आज जो लोग मौका पड़ने पर बातें करते हैं वही पहले मौका मिलने पर मुँह फेर लेते थे। अब तो प्राय सभी प्रेम से बोलने लगे थे। किंतु इससे पहले यदि किसी यूरोपियन ने हिन्दुस्तानी से कारणवश बातचीत भी की होगी तो उसमें वही भाव रहा होगा जो स्वामी और सेवक में होता है। मदन को यह कभी विश्वास न हो सकता था कि अंग्रेज़ों का यह बर्ताव यूरप में प्रवेश होते ही बदल जायगा। उसने सोचा कि इनसे अधिक अच्छा बर्ताव इंग्लैंड में हो सकता है या नहीं। जब कि हमारे साथ इनका बर्ताव हमारे ही घर अर्थात् भारत में मालिक

ने अपने हाथों में पकड़ा। इसके बाद एक जगह रस्सा बाँध दिया गया और उसमें चार फीते (Laces) कुछ कुछ फासले से बाँध दिये गये। फीते करीब एक या दो फीट लम्बे और आध या पौन इंच चौड़े थे। इनमें तीन गाँठे लगा दी गईं। एक स्थान पर एक आदमी टिकट लेकर बैठ गया। इसके बाद कुछ आदमी—जिनको कि हम दलाल कह सकते हैं—चिल्लाने लगे और हर घोड़े पर बाजी लगने लगी। किसी पर चार शिलिंग लगे तो किसी पर पाँच और किसी पर छः शिलिंग इत्यादि। बहुतों ने टिकट भी खरीदे। इनमें किसी को तो बहुत इनाम मिला और किसी को बहुत कम। घोड़ों का यह काम था कि दौड़ कर उस फीते को कैंची से काटें और गाँठो को हाथ से खोलें। इनमें जिसने सबसे पहले फीते को काटा और गाँठो को खोला, उसी को प्रथम इनाम मिला। ये खेल-तमाशे और घुड़-दौड़ एक प्रकार का जुआ खेलना ही था। अतः मदन को इसे देखकर नफरत-सी हो गई। यह उसके लिए पहला ही अवसर था, जब कि उसने ऐसे खेल देखे। इसी प्रकार यह भी पहला ही समय था जब कि जहाज पर मनुष्य और स्त्रियाँ साथ-साथ खेलें और ऐसे तमाशे करें। मदन के दिल में इन खेल-कूद और विचित्र व्यवहारों को देख कर यह बात जँच गई कि यह जाति बड़ी दुराचारिणी है।

इन्हीं सब बातों को सोचता हुआ वह अपने केबिन में गया।

वहाँ मि० गुप्ता बैठा हुआ किताब पढ़ रहा था। उसने मदन को देखते ही पूछा—

"कहिये जनाब, आज तो आपने बड़ी देर तक तमाशा देखा। यह तो बतलाइये कि आप को खेल कूद पसन्द आये?"

उसने कहा—"वाह! आप भी कैसा प्रश्न कर रहे हैं। भला, ऐसे खेल-कूद मुझे पसन्द आ सकते हैं जिनमें औरतों को घोड़ा बना कर उन पर कीमत लगाई जाय? गुप्ता साहब, मैं आप से क्या कहूँ, मुझे तो ऐसे चरित्र के देखने-मात्र से ही घबराहट होती है।

गुप्ता ने हँसते-हँसते कहा—"अभी क्या हुआ है जनाब, अभी तो जहाज ही की सफर पूरी हुई है। अभी पेरिस तो बाकी ही है और फिर लन्दन में जाकर तो रहना ही है। इतने जल्दी घबराइएगा नहीं।"

मदन अपने विचार मे मग्न था। उसके मुँह पर शान्ति छा रही थी। गुप्ता ने यह देखकर कहा—

"मदन तुम्हें इन बातों पर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिये। अब हम लोग देश छोड कर विद्याभ्यास के लिए इग्लैंड जा रहे हैं। हमें चाहिए कि जहाँ तक हो सके जल्दी से परीक्षा समाप्त कर भारत लौटें। हमारे लिए इनसे अधिक मिलने-जुलने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

मदन ने कहा— "आप ठीक कहते हैं। मैं हृदय से इन बातों को मानता हूँ, किन्तु जब हम इस देश में आये हैं तो यहाँ की सभ्यता को भी देखना चाहिए और पता लगाना चाहिए कि उनमें क्या-क्या खराबियाँ और क्या-क्या अच्छाइयाँ हैं। हम लोग यहाँ केवल इम्तिहान पास करने के लिए नहीं आते, क्योंकि यदि यही बात होती तो भारत में क्या विश्वविद्यालयों की कमी थी?"

इस पर गुप्ता ने कहा—"मदन! तुम इनकी सभ्यता का पता तब तक कभी नहीं लगा सकते, जब तक कि तुम इनके जैसी पोशाक न पहनो, इनमें न मिलो, इनकी सभ्यता में न घुलो और अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम्हें खुद भी अच्छी-बुरी बातों में भी अवश्य भाग लेना पड़ेगा। कहो, क्या तुम इसके लिए तैयार हो? यदि ऐसा है तब तो बहुत अच्छी बात है।"

किन्तु मदन ने फिर भी यही उत्तर दिया—"मैं जरूर ही इनकी सभ्यता का पूरा-पूरा अनुभव प्राप्त करूँगा, परन्तु इनकी बुरी बातों में भाग लेना मुझे स्वीकार नहीं है। इतने ही में वहाँ पेंथर आ पहुँचा और हँसते हुए उनसे कहने लगा—

तुम दोनों ही बड़े अजीब मालूम होते हो जब कि दूसरे मुसाफिर जो खेल-कूद में भाग नहीं ले रहे हैं वे देख तो रहे हैं। लेकिन तुम दोनों तो यहाँ बैठे हुए बातें कर रहे हो।

किन्तु गुप्ता बड़ा चतुर विद्यार्थी था। उसने मन में सोचा कि किसी तरह इससे पूछना चाहिये कि इसने क्या-क्या देखा और क्या-क्या किया। अतः उसने [illegible] हँस कर पूछा—

"अजी पहले यह तो बतलाइये कि आपने आज कैसा और क्या-क्या आनन्द प्राप्त किया। आप घोड़ा चढ़ने में तो घुड़सवार।"

ऐयर ने कहा—"भाई मैं कहा तो कुछ नहीं, मगर चार शिलिंग तो हार ही गया?"

गुप्ता ने कहा—"आप चार शिलिंग तो हारे, किन्तु किसी न किसी बात में आपकी जीत भी अवश्य हुई होगी।"

इस पर ऐयर हँसने लगा। गुप्ता ने समझ लिया कि अवश्य कुछ दाल में काला है। अतः किसी न किसी तरह इससे सब बातें पूछना चाहिये। उसने कहा—

"अच्छा, यह तो बतलाइये मिस्टर! किसी सुन्दरी के साथ आपकी बातचीत भी हुई या नहीं? आप जैसे होशियार और खूबसूरत सज्जनों के लिए इसमें सफल होना तो बांये हाथ का खेल है।"

ऐयर फूल कर कुप्पा हो गया और अपनी निपुणता बत-लाने के लिये सब बातें खोल-खोल कर कहने लगा—

तारीफ सुनकर फूलने लगी, तब मैंने सोचा अब मौका है। मैंने धीरे से अपना हाथ उसकी बगल की तरफ ... और फिर दोनों बातें करने लगे। लेकिन जब मैंने उसको आलि- गन करना चाहा, तो उसने साफ इन्कार कर दिया।"

यह सुनकर मदन और गुप्ता मन ही मन हँसे, किन्तु ऐयर को उत्साहित करते हुए उन्होंने पूछा—

"फिर क्या हुआ? मि० ऐयर, तुम बड़े बहादुर मालूम होते हो।"

मिस्टर ऐयर ने कहा—"अजी, फिर वह तो इन्कार करती ही रही, परन्तु मैंने तो जबरदस्ती से अपना काम बना ही लिया। भला मैं उसके ना करने से कब रुकने वाला था। आप आश्चर्य करेंगे कि इसके बाद उसका नाराज होना तो दूर रहा, उसने जान कर मुँह बनाते हुए कहा, 'ऐयर तुम बड़े शैतान (naughty) मालूम होते हो। अगर तुम ऐसा फिर करोगे तो मैं तुम्हे छोड़ कर चली जाऊँगी।' मैंने सोचा कि कहीं सचमुच ही वह चली न जाय, इसलिये मैंने तत्काल कहा—'वादा करता हूँ कि अब मै तुम्हारे साथ बहुत अच्छा बर्ताव करूँगा।' इसके बाद कुछ देर और भी हमारी बातें हुई, किन्तु जब देर होने लगी तब उसने कहा कि अब मेरा जाना ही अच्छा है। जाते समय मैंने फिर उसका हाथ पकड़ना चाहा किन्तु वह बात ही बात

पंचम परिच्छेद
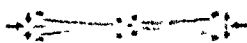
धार्मिक-वाद-विवाद

दूसरे दिन सुबह जहाज मार्सेलीज पहुँच गया। यहाँ का बन्दरगाह दुनियाँ भर के मशहूर बन्दरगाहों में से है। यहाँ के जहाज और मुसाफिरों की गिनती करना भी मुश्किल हो जाता है। जिधर देखो उधर ही छोटे-बड़े जहाज हर एक देश के अलग-अलग रङ्ग के दिखाई देंगे और मुसाफिर भी हर एक देश के पाये जायँगे। अस्तु, जहाज के किनारे पहुँचते ही पास-पोर्ट और सामान की जाँच हुई। इसके बाद मदन, गुप्ता और दो अन्य विद्यार्थियों ने मिल कर एक गाड़ी किराये की और स्टेशन पर पहुँचे। फ्रेन्च भाषा तो ये जानते ही न थे, किन्तु इशारों द्वारा बतलाने और ड्राइवर की टूटी-फूटी अंग्रेजी समझने से इन्हें कोई कष्ट नहीं हुआ। वहाँ कुक्स का एजेन्ट भी आ गया था। अत उसे इन्होंने अपना सामान रेल पर पहुँचाने के लिए दे दिया।

"क्या आप 'तमाशा' देखना चाहते हैं ? और यदि चाहते हैं तो कौनसा ?"

किन्तु ये कुछ भी उत्तर न दे सके, अतएव इन्हें बुद्धू समझ कर उस औरत ने इनसे बहुत बड़ी फीस माँगी। इसके बाद जब ऐयर के मित्र को पता लगा कि वह किस बात के लिए उसे यहाँ लाया है, तब तो वह बहुत ही डरा और ऐयर को जैसे तैसे समझा-बुझा कर वहाँ से बाहर ले आया। किन्तु इसमें भी असल बात यह थी कि ऐयर के पास ज्यादा पैसे न थे और उसके मित्र ने यह वादा किया था कि वह दो तीन पौंड उधार दे देगा जो लंदन चलने पर वापस देने पड़ेंगे। गाड़ी के चलने में जब ५ मिनट शेष रह गये, तब ये दोनों स्टेशन पर पहुंचे और इधर-उधर ढूँढ़ कर अपना डिब्बा तलाश किया। उसी मे गुप्ता और मदन भी बैठे हुए थे। अत इन्हे प्रसन्नता हुई। समय दिन का था और आकाश मे बादल भी नहीं थे, इसलिए इन्हे गाड़ी पर से फ्रास की भूमि देखने का अच्छा मौका मिला। फ्रांस देश मे नारियाँ तो सुन्दर होती ही हैं, किन्तु इसी के साथ-साथ वहाँ की भूमि भी बहुत ही शस्य सम्पन्न है। जिधर देखिये उधर ही हरे-हरे खेत और वृक्ष नजर आते हैं और खेतो मे हृष्ट-पुष्ट गायें भी चरती हुई दिखाई देती हैं। चारो ओर फलो के पेड ही पेड़ नज़र आते हैं। रेल की सड़कें नदी के किनारे पर हैं।

दूसरा जन्म अवश्य यहीं होगा। किन्तु यदि तुम्हारे कर्म अधिक बुरे हुए तो संभव है कि तुम्हें अफ्रीका में जन्म लेना पड़े।"

ऐयर ने ये सब बातें हँसी मे सहन की लेकिन हँसी मे कभी कभी सच्ची बात भी निकल पड़ती है। उसने कहा—

"मदन तुम समझते हो, भारत मे जन्म लेकर हमें अपने को भाग्यवान् समझना चाहिए। किन्तु जरा सोचो कि हमारी दशा क्या है? हमें तो शुरू से यही शिक्षा दी जाती है कि हम विजातीय के भक्त रहें। हमे कोई अधिकार नहीं है कि अपने देश के शासन की बागडोर अपने हाथ में लें और जब बागडोर देने का विचार किया भी जाता है तो हमारे भारतीय नेता लोग एक मत से किसी माँग की पुकार नहीं करते वल्कि सैंकड़ों तूतियें बजाने लगते हैं। परिणाम यह निकलता है कि जो कुछ मिलने को होता है वह भी नहीं मिलता। फिर देखो हमारी आज कल की सभ्यता, जिसका कि तुम्हे बड़ा अभिमान है, उसमें हमें कितनी आज़ादी मिलती है? बचपन ही से माता-पिता हमें डाट डपट कर रखते हैं कोई काम उनकी मर्जी के खिलाफ किया कि वे तत्काल नाराज हो जाते हैं। वे कहते हैं कि पुत्र का धर्म है अपने माता-पिता की आज्ञा पालन करे।

इस पर मदन बीच ही मे बोल उठा, 'हाँ भाई, तुम कहते हो, वह सब ठीक है किन्तु इसका दोष भी तो हमारे सिर ही

दूसरा जन्म अवश्य यहीं होगा। किन्तु यदि तुम्हारे कर्म अधि
बुरे हुए तो संभव है कि तुम्हें अफ्रीका में जन्म लेना पड़े।"

ऐयर ने ये सब बातें हँसी में सहन कीं लेकिन हँसी में कभी-
कभी सच्ची बात भी निकल पड़ती है। उसने कहा—

"मदन तुम समझते हो, भारत में जन्म लेकर हमें अपने
को भाग्यवान् समझना चाहिए। किन्तु ज़रा सोचो कि हमारी
दशा क्या है? हमें तो शुरू से यही शिक्षा दी जाती है कि ह
विजातीय के भक्त रहें। हमें कोई अधिकार नहीं है कि अपने दे
के शासन की बागडोर अपने हाथ में लें और जब बागडो
देने का विचार किया भी जाता है तो हमारे भारतीय नेता लो
एक मत से किसी माँग की पुकार नहीं करते बल्कि मनक
तूतियें बजाने लगते हैं। परिणाम यह निकलता है कि जो कु
मिलने को होता है वह भी नहीं मिलता। फिर देखो हमारी आ
कल की सभ्यता, जिसका कि तुम्हें बड़ा अभिमान है, उसमें ह
कितनी आज़ादी मिलती है? बचपन ही से माता-पिता हमें डा
डपट कर रखते हैं कोई काम उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ किया
वे तत्काल नाराज़ हो जाते हैं। वे कहते हैं कि पुत्र का धर्म
अपने माता-पिता की आज्ञा पालन करे।

इस पर मदन बीच ही में बोल उठा, 'हाँ भाई, तुम क
हो, वह सब ठीक है, किन्तु इसका दोष भी तो हमारे सिर

निश्चय किया कि हम सब एक होटल में जाकर ठहरें, क्योंकि वहाँ केवल एक रात तो ठहरना ही था। फलतः इन्होंने दो कुलियों को इशारा किया और उन्हें अपना सामान ले जाने के लिए कहा। इनमें फ्रेन्च बोलना कोई भी नहीं जानता था; किन्तु फिर भी हर एक देश के कुली सामान इधर-उधर पहुंचाने विषयक विदेशी यात्रियों के संकेत समझने में अनुभवी होते हैं। इसलिए उन्होंने समझ लिया कि सामान टैक्सी में ले जाने को कहते हैं। इन्होंने 'टैक्सी' शब्द कहा तो कुलियों ने टैक्सी बुलवाकर उसमें सामान जमा दिया और इन लोगों ने कुलियों को मजदूरी के कुछ फ्रेन्क दिये। किन्तु फ्रांसीसी पोर्टर्स भी हिन्दुस्तानी कुलियों की तरह माँगते ही रहे। अतः फिर कुछ फ्रेन्क देकर ये टैक्सी में जा बैठे और टैक्सी-ड्राइवर को वह कागज बताया, जिसमें कि एक होटल का पता था। ड्राइवर ने समझ लिया और वह उसी होटल पर ले चला। जब टैक्सी तेज चलने लगी तो इन पाँचों को बड़ा डर मालूम हुआ। क्योंकि इन्होंने यहाँ टैक्सियों को इतना तेज चलाते हुए देखा, अतः शहर में ड्राइवर से धीरे चलाने के लिए कहे बिना न रह सके। होटल पर वहाँ की मैनेजरेस (Manageress) थी। वह अंग्रेजी बोल सकती थी, इसलिये इन्हें बातचीत करने में कोई कष्ट नहीं हुआ। ये पाँचों अपने नाम और पते रजिस्टर में दर्ज

पेरिस के लिए जितना सुना गया है, वह यहाँ तक यहाँ जिन खबर की सड़कों के लिए हम हिन्दुस्तान में सुनते हैं, वास्तव में यहाँ हैं या नहीं। किन्तु उस समय उसने यह सोचा कि पेरिस देखने के लिए फिर कभी अवकाश होने आना ठीक होगा। अभी रात पड़ने पर वह सब नहीं देखा सकता। साथ ही उसने यह भी विचारा कि मुझे पेरिस में धान रहना चाहिये, क्योंकि यह एक नया शहर है; और की बदनामी भी बहुत कुछ सुनी जा चुकी है। अतः यहाँ धान रह कर ही किसी बात को करने और देखने में मनुष्यता। इत्यादि। इधर ऐयर महाशय के विचार तो किसी से छिपे हो ही नहीं सकते थे। उससे जब बात चला कर मदन ने पूछा कि पेरिस के विषय में तुम क्या सोचते हो तो उसने कहा—

"यह मुझसे अभी मत पूछो, आज की रात निकल जाने दो कल सुबह मैं जो अनुभव करूँगा, वह सब तुम्हें जरूर सुनाऊँगा।"

इस पर मदन ने उससे वचन ले लिया। इस प्रकार बातें बन्द कर ये दोनों इधर-उधर आँखे फाड कर देखने लगे। कुछ ही मिनट में गाड़ी पेरिस स्टेशन पर जा खड़ी हुई। गाड़ी के रुकते ही उन सबको चारो ओर, कुलियों की आवाजें सुनाई देने लगी। इन तीनो के साथ इन्हीं के अन्य दो मित्रों ने या

करके अपने कमरे में गये। मदन और गुना ने तो
ही विचार कर लिया था कि हम आराम करेंगे
इसलिये वे अपने कमरे में सोने चले आये।
ने पीनेका पानी कमरे में नहीं देखा तो पास ही लगी
बिजली की घंटी का बटन दबाया। तत्काल होटल का
नौकर आया जिसे उसने अंग्रेजी मे पीने का पानी लाने
कहा; किन्तु वह नौकर अंग्रेजी नहीं समझ सकता था,
उसे मजबूर होकर वापस जाना पड़ा। मदन विचार करने
लगा कि अब क्या किया जाय? कमरे में टेलीफोन भी लगा
हुआ था। अत. उसने सोचा कि मैनेजरेस को टेलीफोन
करना चाहिए। क्योंकि टेलीफोन उसके ऑफिस में
हुआ था और वह अंग्रेजी भी समझ सकती थी। इसलिए
ने उससे पीने के लिए पानी भेजने को कहा। कुछ ही देर
उसी नौकर ने कमरे के दरवाजे पर आकर खट्-खट् किया
इस पर जब उसे अंदर आने के लिए कहा गया तो मदन
देखता है कि उसके हाथ में शराब की बोतल है। इसने
समझाया कि वह शराब नहीं मांगता। इसने फिर टेलीफोन
किया और कहा कि मैं शराब नहीं चाहता, बल्कि पीने का पानी
मैनेजरेस ने उत्तर दिया कि यहाँ पीने को पानी नहीं है।
जो शराब भेजी थी वह पीने के लिए बहुत हल्की थी। मदन

तुमने रबर की सड़कें भी देखीं ?"

ऐयर०—"रबर की सड़कों की झूठी बात है। किसी ने
पर रबर के जैसे रंग की कोलतार की सड़कें रात को या अन्
में कभी देखी होंगी और इन्हींको इसने रबर की सड़कें
दिया होगा।

इसके बाद फिर ऐयर कहने लगा "हम दोनों चलकर
गृह (Cafe) में बैठे। कैफ बड़ी सुन्दरता से सजा हुआ था
चारों तरफ कांच ही कांच जड़े हुए थे। हमने वहाँ पर
की सस्ती-सी शराब मँगाने के लिये कहा, जो शीघ्र ही लाई
मैंने थोड़ी-सी शराब पीने बाद उससे कहा—"मुझे
जगह ले चलो जहाँ मैं पेरिस की सुन्दरियों को देख सकूं।"

एजेण्ट यही बात चाहता था और वह इसी बात का एजेन्ट
था। वह मुझे एक मकान में ले गया जो कि एक छोटी सी गली
था। भीतर मकान इतना सजा हुआ था कि मैं देखकर च
हो गया। एक तरफ छोटा सा फौव्वारा भी लगा हुआ था
दरवाजा खोलते ही एक औरत हमें मिली, वह
एजेण्ट को जानती थी। उसने फ्रेञ्च भाषा में कहा—'
आइये सीढ़ियाँ ज्यादा नहीं थीं उन पर मखमल जैसा
कपड़ा बिछा हुआ था। ऊपर जाने पर एक बुढ़िया मिली जि
फ्रेञ्च में हम से नमस्ते की अर्थात् Bonsior M

का होना ही है। जब कभी वह ऐसी बात देखता या सुन्ता वह यही कहता कि हमारा रहन-सहन ऐसा होना चाहिये कि भारत में मुसलमानों के आने के पहले था। इसी सि में उसके मुँह से यह बात निकल ही गई कि, "हमें कोई भी पाश्चात्य देशों से सीखने की आवश्यकता नहीं है जब तक अपने आपको धार्मिक एवं सामाजिक रूप में बदल कर वै काल के मनुष्यों की तरह नहीं बनायेंगे, तब तक हमारा ऐसा ही होता जायगा।"

मदन ने मन ही मन कहा कि हम आज उस स्थि वापिस नहीं जा सकते। परन्तु इसके विचार पक्के नहीं थे लिये इसने चुप्पी लगाना ही ठीक समझा।

करीब १००० एक हजार रुपया महीना आजाता है।"

मदन—"आप बड़े खान्दान के मालूम होते हैं। आपके पास काफी रुपया है, तभी तो इस तरह आप यहाँ रह सकते हैं।"

वह—"जी नहीं, यह बात नहीं है। आप जानते हैं कि इस वृटिश-गवर्नमेन्ट ने मुगल खान्दान का कितना नाश किया है, और यह खान्दानी आदमियों को नहीं चाहती। मैं भी आप से अधिक क्या हूँ। खैर मगर मिस्टर, मैं आपका नाम नहीं जानता, माफ करना।"

मदन ने उसे अपना नाम बताया। इस पर फिर उसने कहा—"मेरा नाम गफ्फार है। लोग मुझे अब्दुल गफ्फारखाँ कहते हैं।"

मदन—"मुझे बड़ी खुशी है कि आप जैसे सज्जन से इतनी जल्दी ही मुलाकात हो गई।"

उसने नम्रता-पूर्वक कहा—"अजी यह तो आपकी मेहरबानी है। जब कि मैं यहाँ ठहर रहा हूँ, तब तक मेरा फर्ज है कि आप जैसे नये आये हुए हिन्दुस्तानी भाइयों की हर तरह से जितनी मुझ से हो सके मदद करूँ। आपको जो कुछ पूछना हो, वह मुझसे जरूर पूछिये। कपड़े वगैरा बनवाने हों तो कल मैं आपके साथ चलूँगा।"

मदन को यह सुन कर बड़ी खुशी हुई और उसे खुशी क्यों

कांग्रेस की ही होगी।"

गफ्फार—"अजी साहब यह गवर्नमेंट बड़ी चालाक है। हिन्दू-मुसलमानों के बीच आपस मे झगड़ा यही कराती है और मुसलमान ऐसे बेवकूफ हैं कि उसके कहने में आ जाते हैं। क्या मेरे इन ख़यालों की वजह से ही मुझे यहाँ रहना पड़ रहा है। मैं दिल से चाहता हूँ कि हिन्दू-मुसलमानों के बीच में एकता हो। मैं तो यहाँ तक देखना चाहता हूँ कि हिन्दू-मुसलमानों के बीच में आपस में शादी विवाह होने लगे। देखिये मुगलों ने हिन्दू राजकुमारियों से शादियाँ तक की थी।"

मदन ने हँसते-हँसते कहा—"तभी तो आपके ऐसे ख़यालात हैं।"

गफ्फार—"अजी इसीलिये तो मैंने अभी तक शादी भी नहीं की है। मैं तो खुदा से यही आरजू कर रहा हूँ कि जब हिन्दुस्तान को स्वराज्य मिले, तब मैं जाकर एक राजपूत लड़की से शादी करूँ।"

मदन को उसकी इन बातों पर यद्यपि विश्वास हो गया था, किन्तु फिर भी न जाने क्यों जब वह गवर्नमेंट की बात पूछता तो साफ तरह से जबाब नहीं देता था। इसका कारण कदाचित् यह हो कि मदन विद्यार्थी जीवन में अपने को राजनीति में भाग लेने का अधिकारी नहीं मानता था।

में ११ ग्यारह बज गये और ड्राइंग रूम की रोशनी बन्द के लिए नौकर आ पहुँचा। उसे देखकर गफ्फार ने कहा "अब यहाँ से चलना चाहिये।

दोनों उठ कर बाहर आये, गफ्फार ने कहा "अब मैं जाता हूँ।" उन दोनो ने हाथ मिलाया और अपने अपने रास्ते हुए।

मदन अपने कमरे में जा ही रहा था कि इतने में एक हिन्दुस्तानी विद्यार्थी जो कि ड्राइंग रूम के एक कोने में बैठा हुआ अखबार पढ़ रहा था और इन दोनों की बातें भी सुन रहा था, मदन के पास आकर बोला 'क्या आप आज ही आये हैं?'

मदन ने कहा. "जी हाँ।"

उसने पूछा—"मिस्टर गफ्फार को आप हिन्दुस्तान में जानते थे क्या ?"

मदन—"नहीं तो।"

इस पर फिर उसने कहा—"आपने बातें तो खूब की और इस प्रकार की, जैसे कि आपस मे खूब जान पहिचान तथा मित्रता हो।"

यह सुन कर मदन मुस्कराया और उसने कहा—"मिस्टर गफ्फार बड़े सज्जन मालूम होते हैं जो कि जान-पहचान न होते हुए भी ऐसा बर्त्ताव करते हैं। आप तो उन्हें जरूर जानते होंगे"

विद्यार्थी—"आप ही से क्या उसने मुझ से भी, नया था, ऐसी ही बातें किया करता है।"

मदन ने "तब ऐसे आदमी को यहाँ रहने की इजाजत क्यों दी गई?"

विद्यार्थी—"इजाजत क्या। ऐसे आदमियों की तो जरूरत ही है और गवर्नमेंट चाहती है कि यहाँ ऐसे आदमी दो चार बने ही रहें।"

मदन यह सुनकर चुप हो गया। उसके दिल को एक धक्का-सा लगा। उसने सोचा कि यह बड़े अचम्भे की बात है कि एक हिन्दुस्तानी, दूसरे हिन्दुस्तानी भाई का गला काटे और ऐसा दुष्कर्म करे। वह उसे धन्यवाद देकर सीधा कमरे में चला गया और बड़ी देर तक इन्हीं विचारों में निमग्न रहा। वह सोचने लगा कि मैंने गवर्नमेंट के खिलाफ़ उससे कोई बात तो नहीं कह दी। अगर कही भी होगी तो क्या वह अब जाकर गवर्नमेंट से मेरी भी शिकायत करेगा? इसी प्रकार सोचने में उसे बहुत देर हो गई। वह थका हुआ तो था ही, इसलिए उसे बार-बार उबासियाँ आने लगीं और यही विचार करते-करते वह निद्रा देवी की गोद में निमग्न हो गया।

"प्रथम खंड समाप्तम्"

द्वितीय-खण्ड

पहला-परिच्छेद

नये वासस्थान की खोज में

दन को दो-तीन दिन में ही मालूम हो गया कि कि जहाँ वह ठहरा हुआ है, वह जगह उसके रहने लायक नहीं है। क्योंकि पहले तो वहाँ कोई खास आराम नहीं। उसमें भी फिर मदन था शाकाहारी और वहाँ माँस के सिवाय अन्य तरकारियाँ अच्छी बनती नहीं थी, इसलिए उसने किसी दूसरी जगह चले जाना उचित समझा। उसकी हार्दिक इच्छा थी कि वह एक योग्य अंग्रेज कुटुम्ब के साथ जाकर रहे लेकिन अच्छे कुटुम्ब का जल्दी और आसानी से मिल सकना सम्भव नहीं था, इसलिए ऐसा अवसर प्राप्त न होने तक उसने किसी दूसरी जगह ठहरने का निश्चय किया। इसके बाद तलाश करने पर उसे एक जगह का पता लगा जो कि हाइड-पार्क के समीप ही थी। जगह भी अच्छी थी और मनुष्य भी वहाँ अच्छे थे किन्तु पार्क के समीप

होने से उसका दिल न चाहा कि वहाँ जाकर निवास करे
पार्क के विषय मे वह हिन्दुस्तान मे बहुत कुछ सुन चुका था
वे बाते भी ऐसी-ऐसी थीं जो कि हर किसी के सहज ही
मे आसके। किन्तु जिसने उन्हे प्रत्यक्ष देखा हो वह कैसे
की हाँ में हाँ मिला सकता है ? वे चाहे कितने ही मनुष्य
न हो, आँखों देखी बात कभी झूठी नहीं हो सकती।

मदन ने अंग्रेजी सभ्यता को समझने के लिए "लन्दन-रहस्य
Mystries of the Court of London) पुस्तक पढ़ ली थी।
उसमें यहाँ तक पढ़ा था कि पार्क मे चलते फिरते आदमियो को वहाँ
लड़कियाँ जबरदस्ती पकड़ लेती हैं और वह स्थान व्यभिचार
घर है। इसी कारण मदन ने प्रण कर लिया था कि वह कभी
पार्क में घूमने न जायगा। किन्तु इसी के साथ-साथ उसके
मे यह विचार भी था कि मै यहाँ केवल डिग्री लेने ही नहीं आ
हूँ, मुझे यहाँ की सामाजिक स्थिति का ज्ञान भी तो प्राप्त क
है। फिर भी जब तक यहाँ की स्थिति का पता न चल जाय
तक समझ-सोच कर ही सब बातो का अनुभव प्राप्त करना चाहिए

मदन का पहिले से ही यह इरादा था कि वह एक
कुटुम्ब के साथ जाकर ठहरे और भारतीय भाइयो से कम मिले
इसका मतलब केवल इतना ही था कि अगर देशी भाइयों
मित्रता हुई तो अंग्रेजो से मित्रता करने का अवकाश नहीं मिले

और फिर उनसे मित्रता करने की इच्छा भी न होगी। वह अच्छी
रह जानता था कि जब तक किसी देश के स्त्री-पुरुषों से आजादी
के साथ न मिला जाय, तब तक वहां की सभ्यता एवं सामाजिक,
तिक और धार्मिक स्थिति का पता नहीं चल सकता। यही कारण
कि अधिकतर विद्यार्थी जो अपना समय भारतीय भाइयों के
हवास में व्यतीत करते हैं, वहाँ रह कर समाज के संपर्क में न
ाने से जैसे भारत से आते हैं वैसे ही वापस लौट जाते हैं।
वल एक डिग्री की पूँछ अवश्य लगा लेते हैं। इसके बाद तो
फर हिन्दुस्तान में आकर जिन बातों को वहाँ देखा हो, उन पर
ग चढ़ा देते हैं; जिनको न भी देखा हो उनके लिए भी अपनी
सम्मति देने में संकोच नहीं करते। यही हालत उन अंग्रेज महा-
शयों की भी है जो भारत में प्रजा सेवा के नाम पर राज्य करने
आते हैं और यहाँ पर पचीस-तीस साल रहते भी हैं, लेकिन
अगर वे फौज में है तो छावनी से बाहर कभी निकलते तक नहीं।
यदि कोई ऑफिसर निकला भी तो शिकार खेलने जंगल में जायगा
और इसके बाद सीधा अपने मकान पर लौट आवेगा। इसी
प्रकार जब छुट्टियाँ होंगी तो किसी दूसरे अंग्रेज भाई से मिलने
चला जायगा और यदि शाम को अवसर मिला तो क्लब में
शराब पीने या नाच-गान अथवा खेल-कूद करने चला जायगा।
रहे गोरे सिपाही, सो उनको रविवार की छुट्टी मिलती है और वे

अतएव मदन का यह विचार था कि मैं यहाँ विद्याभ्यास
करने और सभ्यता सीखने आया हूँ, अतः इनकी सामाजिक
स्थिति और कुरीतियों की अभी से आलोचना करना ठीक न
होगा ; अस्तु ! यह किसी अंग्रेज-कुटुम्ब की किराये में तो या
हैं: साथ ही उसने इस विषय में अपने जान पहचान वालों से
भी कह दिया था। अन्त में उसने अपने एक मित्र की सलाह
लेकर इस आशय से कि अखबार में विज्ञापन प्रकाशित कराने
से कितने ही कुटुम्बों का पता लग जायगा, एक छोटा सा विज्ञा-
पन छपा दिया। फलत दूसरे ही दिन कोई पचास के लगभग
पत्र आये। उन पत्रों को पढ़-पढ़ कर वह आश्चर्य करने लगा।
इन पत्रों में से नमूने के लिये एक मेम साहिबा का पत्र यहाँ
...ना उचित होगा, जिससे पाठकों को विदित हो जाय कि वे पत्र
...स प्रकार के थे और उनका क्या महत्त्व हो सकता है।

D

शहर में भी जरूर जाते हैं, किन्तु उनका आवागमन किसी भले समाज में नहीं होता, वरन् वे जब कभी देखे जायँगे तो केवल अड्डों में रहने वाली स्त्रियों के मुहल्लों में ही। क्या ऑफिसर और क्या सिपाही, हिन्दुस्तान की जब ये भाषा तक नहीं सीखते तब सभ्यता की तो बात ही क्या? किन्तु कुछ ऐसे अंग्रेज भी यहाँ आते हैं जिन्होंने देश की अवस्था का मनन करके ऐसी पुस्तकों की रचना की है, जिनका पढ़ना-पढ़ाना और रखना भारत में बन्द है।

फिर रहे सिविलियन्स, सो वे किसी से मिलने ही क्यों लगे! यदि किसी से मिले भी तो किसी राज्य के काम से थोड़ी सी देर के लिए। अर्थात् वे यदि किसी से अधिक देर बातचीत करते हैं तो केवल अपने खानसामों और बेहरों से। फिर जब रिटायर्ड होकर इंगलैंड वापस लौटते हैं तब कोई तो विश्व-विद्यालय का अध्यापक बनता है और कोई वक्ता। उस दशा में उनका विषय या तो 'भारत का इतिहास' होता है या 'भारत की राजनीति।' और वे अपने विषय के दक्ष प्रमाण (Authorities) माने जाते हैं। अर्थात् उनकी सब बातें ऐसी सच और प्रामाणिक मानी जाती हैं मानों वे बाइबल में से ही किस्से कहानी कहते हैं। लेकिन अगर उनसे पूछा जाय कि वे भारत में कितने हिन्दुस्तानियों से मिले और कितनों से मित्रता की एवं कितनों के घर पर गये तो उनको चुप ही रह जाना पड़ेगा।

companions in my two daughters, aged about fifteen and nineteen. My only son is a jolly lad of ten years.

I do not want to write more as if you care to come and see us, I would be too glad to show the rooms and the drawing room. There are two other persons who are intending to come and stay with us but we would give you preference as you seem to be a respectable person.

Yours truly,

अर्थात् मेम साहिबा ने अपने पत्र में लिखा कि उसने 'मोरनिंग पोस्ट' नामक अखबार में मदन का विज्ञापन पढ़ा कि वह एक अंग्रेज कुटुम्ब के सहवास की तलाश में है। अत: मेम साहिबा ने बतलाया कि मदन उसके कुटुम्ब के साथ जिसमें कि पाँच मेम्बर हैं, सहर्ष रह सकता है। उसको वहाँ ठहरने में हर प्रकार से सुविधा रहेगी। प्रथम तो मकान, कमरे और बैठक (दीवानखाना) आदि का अच्छा प्रबन्ध है। इसी के साथ-साथ उसे उसकी दो पुत्रियों का, जो कि १५ और १९ वर्ष के लगभग आयु की हैं, चित्ताकर्षक और आनन्दायक सहवास मिल सकेगा। इस प्रकार मेम साहिबा ने अपार हर्ष प्रकट करते हुए मदन को अपने यहाँ आकर ठहरने के लिए प्रलोभन दिया।

केवल पति-पत्नी ही हैं; लड़के लड़की नहीं और वे दम्पति भी अच्छे खानदान के हैं। ऐसे कुटुम्ब का मिलना मदन के सौभाग्य की बात थी और इसलिए शीघ्रता से उसने इनके साथ जाकर ठहरने का निश्चय कर लिया। मदन ने, जब कि वह हिन्दुस्तान में था केवल इंगलैंड के बारे में ही पुस्तकें नहीं पढ़ी थी, बल्कि भारतीय-सभ्यता विषयक अर्थात् यहां की धार्मिक, राजनैतिक इत्यादि विषयों पर भी कुछ पुस्तकें अवलोकन की थीं, जिनका पठन-पाठन न तो स्कूलों में होता है और न कालेज में। हमारे स्कूल के विद्यार्थियों की तो बात ही छोड़िये। यदि एम. ए., बी. ए. की डिग्री वालों से भी पूछा जाय तो उन्हें अपनी सभ्यता का कुछ भी पता नहीं होगा। यहाँ तक कि मामूली धार्मिक बातों का उत्तर देना भी उनके लिए पहाड़ हो जायगा। यही कारण है कि जब हम पाश्चात्य सभ्यता में कोई नई बात देखते हैं तो बन्दर की तरह बिना सोचे समझे उसका प्रयोग करने लग जाते हैं। इतना ही नहीं वरन् उसको ऐसा अपना लेते हैं मानो उसके अपनाने में ही हमारा भला है। फिर कइ ऐसे भी हैं जो कोई नई बात नहीं सीखेंगे। उन्हें नई बात सीखना केवल पाप करने जैसा प्रतीत होता है। वे रस्म-रिवाजों को ही अपना धर्म मानते हैं और यदि कोई वैदिक प्रमाण रस्म-रिवाजों के खिलाफ होता है तो उसे वे कदापि नहीं मानेंगे किन्तु जहाँ वैदिक प्रमाण उनके

जवाब मिला, "हाँ !"

इस पर मदन ने फिर पूछा, "यदि आप ठीक समझें तो कृपा कर कहिएगा कि आप भारत के बारे में क्या जानती हैं? और भारत देश आपको पसन्द है या नहीं ? भारतीयों के विषय में आपका क्या खयाल है और आप भारतीय स्वतंत्रता को किस दृष्टि से देखती है।"

यह सुन मिस्टर फ्रेजर बीच ही में बोल उठे, "मि० मदन, तुमने तो बड़ा भारी सवाल कर डाला।"

मदन तत्काल समझ गया कि भारत से अधिक परिचय न होने के कारण ये लज्जित-से हो गए हैं और इन्हें उत्तर देते नहीं बनता। अथवा इसका कारण यह भी हो सकता है कि इनके विचार भारत के प्रति ठीक न हों। अत उसने नम्रता से कहा—

"आपके जैसे भी (भले या बुरे) विचार हों, आप अवश्य प्रकट कीजिये, मैं तनिक भी बुरा न मानूँगा।"

मिसेज फ्रे०—"जो कुछ हम भारत के विषय में जानते हैं वह अखबारों और पुस्तकों से ही। क्योंकि हमारे लिए यही एकमात्र साधन है। हमारे लिए तुम पहले ही भारतीय हो जिससे इस प्रकार निकट-परिचय प्राप्त हो सका है और तुम्हें देखने के बाद समझ में नहीं आता कि ऐसी बे सिर-पैर की बातें भारत के विषय में क्यों लिखी जाती हैं ?'

अमेरिका में कितने हब्शी जिन्दे जला दिये जाते हैं ? फिर आपका खुद का ही बर्त्ताव अफ्रीका में देख लीजिये। जरा मुझे यह तो बतलाइये—"कभी आपने सुना है कि हमने किसी अछूत को जला दिया अथवा जान से मार डाला ?"

मिसेज को इससे संतोष न हुआ किन्तु अपने प्रश्न का यथोचित उत्तर मिल जाने से उन्हें चुप हो जाना पड़ा।

मदन के विचार स्वतन्त्र थे। वह सदैव ही व्यर्थ किसी की तरफ़दारी न करता था। इसीलिये मिसेज फ्रेजर के साथ अपने विचार प्रकट करते समय उसने स्पष्ट कह दिया था कि अछूतों के साथ भारत में जो बर्त्ताव किया जाता है, उससे वह खुद ही अप्रसन्न है। अछूत जाति के अस्तित्व का कारण केवल श्रेणी विभाजन (Class Consciousness) ही है। और यही बात हम जर्मन देश में भी देख रहे हैं। वहाँ आज यहूदियों के साथ कैसा बुरा बर्त्ताव हो रहा है ? कितनों को मार डाला गया, कितनों को लूट लिया गया और कितनो को जर्मन देश से बाहर भागना पड़ा है। उसने यह भी कहा—

"देखिये मिसेज फ्रेजर ! आप वर्णाश्रम (Caste system के विषय में जो कुछ सुनती हैं, मैं तो उसके भी विरुद्ध हूँ। यद्यपि जातियों की उत्पत्ति के साथ इसका होना भी अनिवार्य ही था किन्तु समाज के परिवर्तनशील होने से कोई बात स्थिर रूप में

रखना ठीक नहीं होता। हम भारतीय अब स्वयं मानने लगे हैं कि जाति प्रथा पुरानी पड़ गई है और इसका हटा देना ही भारत के लिए लाभप्रद होगा और मैं समझता हूँ वह समय दूर नहीं है जब कि इसका नाम निशान तक न रहेगा।"

इस पर मिस्टर फ्रेजर बोल उठे—"आप पूर्व देशों के निवासी किसी भी रस्म-रिवाज को जल्दी नहीं छोड़ सकते। मैं नहीं समझता आप कैसे कहते हैं कि इतनी जातियाँ एक जाति में मिल जायेंगी?"

मदन—"आपके विचार ही प्रकट कर देते हैं कि हिन्दुस्तान के वर्तमान विचारों से आप अनभिज्ञ हैं। कांग्रेस तो स्पष्ट कहती है कि हमारा हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य और इतनी जातियों का होना विजातीय शासन का अधिकार होने से ही है। और यदि सच पूछा जाय तो मिसेज फ्रेजर! हमारे कुछ ऐसे हिन्दू भाई भी हैं जैसे कि आप अपने धर्म में कैथोलिक्स (Catholics) पायेंगे। वे समझते हैं कि हमारी जातीय पवित्रता मिलने-जुलने से चली जायगी। लेकिन वे यह नहीं सोचते कि न मिलने से जितनी हानि भारतवर्ष की हो रही है उससे कई हिस्से कम मिलने में होगी। फिर मैं उन सनातनियों को धिक्कारता हूँ जो केवल अछूतों के ही शत्रु नहीं हैं, वरन् उस सनातनधर्म की सभ्यता के भी, जिनका कि वे अपने को रक्षक समझते हैं। वे केवल अपने पेरों पर ही

कुल्हाड़ा नहीं मार रहे हैं बल्कि उस कुल्हाड़े से समाज रूपी वृक्ष को भी काटते जा रहे हैं, किन्तु आप देखिये कि ऐसे कितने ही होंगे जो जनता मे जाकर उनके विरुद्ध बोल सकें। यह इन्हीं लोगों की कृपा है मिसेज-फ्रेजर! कि आपकी इंगलिश मिशनरीज ने कितने ही गरीब अछूतों को अपना नौकर बना लिया है।"

करीब १० बज चुके थे—और बातें करते-करते सब थक से गए थे अत. मदन ने सोना ही ठीक समझा। उसे मालूम हो गया कि जिन पुस्तकों को भारत मे पढ़ा था, उसका लाभ अब यहाँ पहुंचेगा। भारत से प्रति वर्ष कितने ही विद्यार्थी यहाँ आते हैं जो अंग्रेजों से वाद-विवाद नहीं कर सकते। यही नहीं, वरन कुछ भारतीय तो अंग्रेजों की खुशामद के लिए, जिससे भी मिलते हैं भारत के खिलाफ ही बातें करते हैं और महात्माजी को दो चार गालियाँ देकर अपनी राजभक्ति को प्रकट करते हैं। किन्तु जो स्वतन्त्र विचार के अंग्रेज है, वे इनकी ऐसी चापलूसी की बातें सुनकर मन ही मन हँसते है और उस चापलूस का मन से जरा भी सत्कार नहीं करते। यों तो वे सभ्य हैं, इसलिए बाहर कोई बात प्रकट नहीं होने देते। किन्तु जब कि वे स्वय अपने देश के कट्टर भक्त हैं तो फिर दूसरे का देश द्रोही होना वे क्यों कर सहन कर सकते हैं?

जब मदन ने दो चार मनुष्यों से वाद-विवाद किया तो उसे

के सच्चे मार्ग-दर्शक (Guides) तो पुलिस के सिपाही लोग हैं। इनसे जब भी कुछ पूछा जायगा वे आपको अत्यन्त नम्रता पूर्वक जवाब देंगे। उसने यह भी देखा कि मनुष्यों के इधर-उधर जाने के लिए हर प्रकार के सुभीते भी हैं। चाहे तो वह मोटर या टैक्सी में जा सकता है, या फिर बस (Bus) अथवा ट्राम में बैठ सकता है। जमीन के नीचे भी रेलें चलती हैं, जो सारे लन्दन के चारों ओर जाती हैं। इसी के साथ उसने यह भी देखा कि यहाँ के आदमी बातचीत जोरों से चिल्लाकर नहीं करते। इसका कारण यह है कि अगर सब लोग जोर से बोलने लगें तो लन्दन-जैसे शहर में एक दूसरे की बातचीत सुनना भी असंभव हो जाय। लन्दन की सामाजिक उन्नति दुनियाँ भर में सब से बढ़ी-चढ़ी है। वहाँ के आदमी ही धीरे से नहीं बोलते, बल्कि टैक्सी या मोटरों के हॉर्न की जोर की आवाज भी कभी सुनने में नहीं आती। यदि कभी भीड़ भी हो जाती है तो जल्दी ही उसे हटाने का प्रयत्न किया जाता है। इसी प्रकार यदि अकस्मात् किसी को धक्का भी लग जाता है तो फौरन ही माफी माँगी जाती है, फिर चाहे वह स्त्री हो या पुरुष।

मदन ने देखा कि लन्दन केवल विलासिता की ही जगह नहीं है, अपितु विद्या का भण्डार भी है। लन्दन में कई अजायबघर व पुस्तकालय हैं और अन्य बड़ी-बड़ी लायब्रेरियों के होने से

है सच्चे मार्ग-दर्शक (Guides) तो पुलिस के सिपाही लोग हैं। इनसे जब भी कुछ पूछा जायगा वे आपको अत्यन्त नम्रता पूर्वक जवाब देंगे। उसने यह भी देखा कि मनुष्यों के इधर-उधर जाने के लिए हर प्रकार के सुभीते भी हैं। चाहे तो वह मोटर या टैक्सी में जा सकता है, या फिर बस (Bus) अथवा ट्राम में बैठ सकता है। जमीन के नीचे भी रेलें चलती हैं, जो सारे लन्दन के चारों ओर जाती हैं। इसी के साथ उसने यह भी देखा कि यहाँ के आदमी बातचीत जोरों से चिल्लाकर नहीं करते। इसका कारण यह है कि अगर सब लोग जोर से बोलने लगें तो लन्दन-जैसे शहर में एक दूसरे की बातचीत सुनना भी असंभव हो जाय। लन्दन की सामाजिक उन्नति दुनियाँ भर में सब से बढ़ी-चढ़ी है। वहाँ के आदमी ही धीरे से नहीं बोलते, बल्कि टैक्सी या मोटरों के हॉर्न की जोर की आवाज भी कभी सुनने में नहीं आती। यदि कभी भीड़ भी हो जाती है तो जल्दी ही उसे हटाने का प्रयत्न किया जाता है। इसी प्रकार यदि अकस्मात् किसी को धक्का भी लग जाता है तो फौरन ही माफी माँगी जाती है, फिर चाहे वह स्त्री हो वा पुरुष।

मदन ने देखा कि लन्दन केवल विलासिता की ही जगह नहीं है अपितु विद्या का भण्डार भी है। लन्दन में कई अजायबघर व पुस्तकालय हैं और अन्य बड़ी-बड़ी लायब्रेरियों के होने से

फ्रेज़र या मिसेज फ्रेज़र से मिलने आते थे। मदन प्रायः वृद्ध पुरुषों और स्त्रियों से ही अधिक बातचीत किया करता और जब कभी कोई युवती या लड़की मिलने आती, उससे बातचीत करने के बदले वह किनारा कर जाता था। उसके चेहरे पर शरमिन्दगी मालूम होने लगती और शायद वह यह सोचने लग जाता कि उसे इनसे क्या बात करनी चाहिये।

मदन सुबह नित्य प्रति नियमानुसार ७ बजे उठ जाता और शौचादि से निवृत्त होकर कलेवा (Breakfast) करता। तत्पश्चात् पढ़ने को चला जाता। कालेज जाने का रास्ता ट्यूब रेल से तो २० मिनट का और बस से लगभग ३५ मिनट का था। लंदन शहर में मनुष्यों की अधिकता के कारण रेल का ज़मीन के नीचे चलाना ही ठीक समझा गया है; तथापि मनुष्य जहाँ कहीं जाना चाहे वहाँ के लिए हर दूसरे मिनट पर रेल मिल सकती है। साथ ही इस के द्वारा यात्रा जल्दी भी होती है। मदन पहले तो इस शंका से कि कहीं ऊपर से ज़मीन न गिर पड़े, इस गाड़ी में बैठने से भी डरता था और उसे ऐसी शंका होना स्वाभाविक ही था, क्योंकि इस रेल को देखने का उसके लिए यही सब से पहला अवसर था। किन्तु थोड़े ही दिनों में उसे पता चल गया कि ट्यूब रेल से जाना बड़ा सहज है। पहले किसी बात के समझ में न आने से मनुष्य घबड़ा-सा जाता है, परन्तु कुछ ही दिन के

कु पीने और न पीने वालों के लिए अलग डिब्बे नहीं हैं।
ी बात उसे यह पसन्द आई कि इतने आदमियों के एक
े में बैठे हुए होने पर भी बिल्कुल शान्ति मालूम पड़ती थी।
कि अंग्रेजों का यह स्वभाव होता है कि वे बिना जान-पहचान
किसी से बातचीत नहीं करते और फिर जब बातें भी करते हैं
बहुत धीरे, जिससे कि दूसरों को बातचीत करने में बाधा न
। मदन ने रेल में प्रत्येक यात्री के हाथ में अखबार देखा।
े यह बात भी बहुत अच्छी जान पड़ी कि ये लोग अपना समय
र्थ नहीं खोते।

मदन प्रति दिन लगभग पौने दस बजे अपने कॉलेज जा
हुँचता और जिस दिन कोई लेक्चर होता तो उसे न सुनते
ुए अपनी किताबें लेकर पुस्तकालय अथवा एकान्त स्थान में
ैठकर पढ़ता रहता। पुस्तकालय बहुत बड़ा था और उसमें
पुस्तकें भी कोई पचास सहस्र से अधिक थीं, किन्तु वे ऐसे क्रम
से रक्खी हुई थीं कि किसी पुस्तक की आवश्यकता होने पर उसे
ढूँढ़ने में पाँच मिनट से अधिक न लगे। पहले तो उसकी यह

बाद, जिस बात को वह बड़ी कठिन समझता था, वह उसे सीधी-सी दिखाई पड़ती है। ट्यूब-रेलवे के स्टेशन से नीचे रेल की लाइनों तक जाने के लिए बिजली के झूले (Lifts) तथा चलती हुई सीढ़ियाँ (Acelators) होती हैं। मदन ने जब चलती हुई सीढ़ी देखी तो उसे और भी आश्चर्य हुआ। वह सावधानी के साथ एक सीढ़ी पर खड़ा हो गया और ५ पाँच मिनट के बाद क्या देखता है कि वह कोई दो सौ हाथ जमीन के अन्दर रेल के प्लेटफार्म पर खड़ा हुआ है। इतने ही मे बिजली से चलने वाली रेल आ पहुंची। रेल के रुकते ही सब फाटक अपने आप खुल गए और जिनको उतरना था वे पहले बाहर निकल आये। इसके बाद जाने वाले मनुष्य भीतर जाकर बैठ गये। उनके बैठते ही फाटक बन्द हो गये। एक बार फाटक बन्द होने के बाद फिर नहीं खुलते। इसी प्रकार इस रेल मे एक ही तरह के डिब्बे (कंपार्टमेंट्स) होते हैं। अर्थात् उनमे फर्स्ट, सैकण्ड या थर्ड क्लास नहीं होते। मदन को एक बात बहुत पसन्द आई और वह यह थी कि उस रेल मे एक कंपार्टमेंट ऐसा था जो केवल तम्बाकू न पीने वालो के बैठने के लिए था। वहाँ सब के जानने के लिए एक लेबिल भी जिस पर कि "तम्बाकू पीना मना" लिखा था, बाहर लगा हुआ था। मदन का ध्यान हिन्दुस्तानी रेलवे की ओर गया और उसे भारत की रेल-यात्रा की स्मृति हो आई, जहाँ

बात और भी दिखाई देती थी। वह यह थी कि कोई भी व्यक्ति वहाँ जाकर चुपचाप नहीं बैठ सकता था। जिसकी इच्छा पढ़ने की ओर न हो वह भी वहाँ जाकर कुछ देर तक बैठ जाने से अवश्य उसे अनुभव होता था कि वहाँ के वायुमंडल में ही कुछ ऐसी शक्ति है जो उसे पढ़ने के लिये बाध्य कर रही है। बात भी ठीक थी। हर एक व्यक्ति वहाँ पुस्तक लेकर बैठा हुआ था। उस समय वहाँ पुस्तकावलोकन न करने वाला ऐसा प्रतीत होता था, जैसे हंसों की मंडली में काग बैठा हो।

मदन वहाँ जाकर पढ़ने में इतना लीन हो जाता कि उसे न किसी से बात करने की ही इच्छा होती और न खाने-पीने की ही। करीब पाँच बजे शाम तक वहीं बैठा हुआ पढ़ता रहता और इसके बाद किसी जगह चाय पीकर वापस अपने घर आ जाता। वह बातचीत बहुत कम करता था और यदि किसी से बात करता था तो बड़ी सावधानी के साथ, चाहे वह अंग्रेज हो चाहे हिन्दुस्थानी। इसका कारण था—एक तो उसका संकोची स्वभाव और दूसरा उसे यह भय था कि कहीं उसके यहाँ के सामाजिक रीति रिवाजों से अपरिचित होने से उससे कोई भूल न हो जाय। वह इस बात को जानता था कि त्रुटि किस मनुष्य से नहीं होती किन्तु इसमें इतनी कायरता समझ कर वह अपने हृदय में साहस की मात्रा बढ़ा रहा था। ——

मदन—"यदि आप पूछना ही चाहती हैं तो अवश्यमेव मैं सच्चे विचार आप के सामने प्रकट करूंगा।"

लड़की—"यही तो मैं जानना चाहती हूँ। आशा है कि मेरे प्रश्न से आप को बुरा न लगा होगा।"

मदन को यद्यपि मन ही मन उससे बोलते हुए कुछ संकोच अवश्य होता था, किन्तु अपने विचार प्रकट करते समय प्रायः उसकी शर्म दूर हो गई थी। इसी कारण उसने कहा—

"आप को हमारी पूर्वीय सभ्यता का पता नहीं है। हमारे देश मे आदमी और औरतें इस तरह साथ-साथ नहीं रहते, जैसे कि आप के यहाँ रहते हैं। न वहाँ उनसे आप के जैसी बातचीत ही होती है। आप के यहाँ एक आदमी किसी औरत से जान-पहचान हो जाने पर उसे अपनी मित्र समझता है; किंतु भारत में कोई भी भला आदमी अपने से अधिक अवस्था वाली औरतों को अपनी माता-समान और कम या बराबर वाली स्त्रियों को लड़की या बहन के समान समझता है। इसी प्रकार पराई स्त्रियों की ओर देखना भी वहाँ पाप समझा जाता है।"

इन बातों को सुन कर लड़की के चेहरे पर कुछ मुस्कराहट सी दिखाई दी, किन्तु तत्काल उसने अपनी मुस्कराहट को दबा दिया, क्योंकि उसे भय था कि मदन उसे मुस्कराते हुए देख कहीं चुप न हो जाय। लड़की ने कहा—

मदन—"ब्रह्मचर्य्य पालन करनेवाला मनुष्य मन, वचन और कर्म से शुद्ध रहकर स्त्रियों की ओर ध्यान तक नहीं देता।"

लड़की ने आश्चर्य से कहा—"ऐसी बात है! लेकिन मुझे यह तो बताइये कि क्या इस समय भी भारतीय युवक इसी तरह रहते हैं?"

मदन ने उत्तर दिया—"नहीं, अब तो हमारी सब परिपाटी (प्रणाली) बदल गई है। यह तो मैं पहले की चर्चा करता हूँ।"

लड़की ने कहा—"तब तो ऐसी संस्थायें पहले हमारे यहाँ भी थीं। लेकिन बड़ी खुशी की बात है कि 'Protestantism' ने 'Convents' को बन्द कर दिया और अब आप उसे सिर्फ 'Catholic' धर्म में पायेंगे।"

मदन—"मुझे खेद इसी बात का है कि आजकल भारत में आश्रम धर्म का पालन नहीं किया जाता।"

लड़की—"आप सकोच न करते हुए मुझे सब बातें विस्तार में समझाइयेगा।"

मदन—"पचीस वर्ष के अनन्तर जब कि वह युवक हो जाता है तो विवाह करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है। मैं आगे चल कर बतलाऊँगा कि विवाह किस प्रकार होता है। गृहस्थाश्रम की अवधि पचास वर्ष तक की है। इसके पश्चात् अर्थात्

जो बात कहते हो वह प्रथा तब थी जब कि मनुष्य की आयु का औसत १०० वर्ष का था; किन्तु अब तो वे सब बातें बदल जानी चाहिये जब कि वह औसत २२ वर्ष रह गया हो। अत वर्तमान औसत के अनुसार इसके चार विभाग जैसे कि पहले आपने बताये हैं कर डालिये अर्थात् ७ वर्ष तक विद्याभ्यास और ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करना, इसके बाद सात से बारह तक गृहस्थाश्रम में रहना। और यह ठीक भी है, क्योंकि बाल-विवाह की प्रथा तो भारत में है ही। फिर १२ से १७ तक वानप्रस्थ, जिसके लिये कि आप कहते हैं कि पति-पत्नी में भाई-बहन का सा सम्बन्ध हो जाता है, और अंत में १७ से २२ तक जंगली जातियों की तरह वनवास ले लिया जाय।"

उसकी इस बात को सुन कर मदन ने हँसते हुए कहा—"आप तो मज़ाक करती हैं, मिस ट्रेन्ट।"

लड़की ने कहा—"नहीं मदन, आजकल तो सब बातें औसत पर ही की जाती हैं। जब आपने २२ वर्ष का औसत बतलाया तब मैंने ऐसी राय दी।"

मदन— आप नहीं जानती कि हम अपने रस्म रिवाजों को नहीं छोड़ सकते साथ ही हम सब यह भी तो चाहते हैं कि हमारी स्थिति फिर वही हो जाय जो वैदिक काल में थी।

लड़की — तो क्या आप यह विश्वास करते हैं कि भारत

"यदि विवाह का यही उद्देश्य हो तो मैं इसे उत्तम समझती।"

"तो फिर विवाह के विषय मे आपके क्या विचार हैं ? भी तो प्रकट कीजिये।"

"हमारे यहाँ विवाह दो प्रकार के होते हैं। पहला च होता है जो धार्मिक विवाह कहलाता है। इसमे लड़के लड़कियाँ दोनों ही परस्पर पादरी और अन्य सम्बन्धी एवं मित्रों के समक्ष प्रतिज्ञा करते हैं कि वे सदैव एक दूसरे के सच्चे रहेगे। दूसरे प्रकार का विवाह रजिस्ट्री-ऑफिस में हो है। जहाँ पर कुछ दिन पहले विवाह की सूचना (नोटि दी जाती है और फिर जो तिथि नियत होती है, उसी दिन लड़ और लड़की वहाँ जाते हैं और अपने विवाह को रजिस्टर्ड क हैं। वहाँ उन्हें प्रथम प्रकार के विवाह की प्रथा के अनुस किसी प्रकार की प्रतिज्ञा नहीं करनी पड़ती। लड़के को केव इतना कहना पड़ता है कि यह मेरी पत्नी है और लड़की स्वी करती है कि आज से यह मेरा पति है।"

"तब तो आपके यहाँ दोनो प्रकार को विवाह-प्रथाएं टूट सक हैं, किंतु हमारे यहाँ की आजीवन स्थिर रहती हैं, टूट नहीं सकतीं।

"हाँ, जब दोनो में परस्पर प्रेम ही नहीं होता तो फिर ए दूसरे के साथ रहने से क्या लाभ ?"

मदन—"मैं दो-तीन वर्ष तो क्या सारी ही उम्र यहाँ जाऊँ, तब भी मेरे विचारों में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता ऐसा हो भी कैसे सकता है, जब कि मैं यहाँ की सब बातें पढ़ता हूँ, सुनता हूँ और आँखों से प्रयत्त देखता भी हूँ।"

मिस ड्रेन्ट हँसने लगी। यह देखकर मदन ने उससे कहा "आप जो बात प्रेम और विवाह के विषय में कह रही थीं उसे तो पूरी कीजिए।"

मिस ड्रेन्ट—"हाँ तो यहाँ जो हम लोग साथ रहते हैं और इतनों से मिलते-जुलते हैं, तब भी मित्रता उसी के साथ होती है जिस लड़के और लड़की का स्वभाव मिलता-जुलता होता है और प्रेम भी सहज ही में नहीं हो जाता। यदि अकस्मात् ऐसा प्रेम हो भी गया तो वह स्थायी नहीं रह सकता। आजकल जो इतनी संख्या में तलाक (Divorce) होते हैं, उसका कारण यही है कि वे परस्पर पूरा प्रेम होने से पहले ही विवाह कर लेते हैं और यदि विवाह प्रेम का होता है तो इसका यह मतलब नहीं कि वह प्रेम आपस में हमेशा एक सा ही रहेगा। इसीलिए जब आपस में प्रेम नहीं रहता तब पति या पत्नी विवाह के सम्बन्ध को तोड़ने के लिए कोर्ट में अपनी अर्जी पेश करते हैं।"

मदन—"तो क्या अर्जी के पेश करते ही तलाक हो जाता है?"

वहाँ उन्होंने अपनी स्त्री के बारे मे सब बातें कहीं अर्थात् उन्होंने यह भी कह दिया कि मैं अपनी स्त्री को तलाक़ देना चाहता हूँ। और इसके लिए मुझे तुम्हारे जासूसों की मदद चाहिए? जासूसों ने थोड़े ही समय मे पता चला लिया कि तलाक़ का मिलना आसान है। क्योंकि ये जासूस होटल के आदमियों से मिले रहते हैं और उन्हीं से पता चलता है कि कौन कौन स्त्री-पुरुष यहाँ आकर ठहरते हैं। यह केवल होटल के रजिस्टरो के देखने से पता चल जाता है।"

मदन—"यह पता कैसे चलता है?"

मिस ट्रेन्ट—"प्रत्येक होटल मे जो रजिस्टर रक्खे जाते हैं, उनमे ठहरनेवाले का पूरा नाम-पता लिखना पड़ता है और यदि वह ग़लत लिखवा दिया जाय और उसका पता पुलिस को लग जाय तो ठहरने वाला अपराधी माना जायगा। उस होटल में मेरी चाची का नाम तो नहीं लिखा था, किंतु उसके बदले उस मित्र की स्त्री का नाम लिखा हुआ था। लेकिन जिन्होंने देखा उन से पता चला कि वह मेरी चाची ही थी। फिर जिस आदमी के साथ वह गई, उसके स्त्री नहीं थी यानी वह कुँवारा ही था। इस बात की पूरी जाँच कर लेने पर मेरे चाचा ने कोर्ट में उससे तलाक मिलने के लिए नालिश की। उनका कहना था कि मेरी स्त्री ने अमुक पुरुष के साथ सहवास किया है, इसलिए मुझे

दरवाजा खोला। दरवाजे पर मिस्टर और मिसेज फ्रेजर खड़े हुए थे। वे उस लड़की से मिले और तब कमरे में आये। आते ही मिसेज फ्रेजर ने मदन से कहा—

"मुझे खुशी है मदन, कि आप घर पर ही रहे। इस कारण मिस ट्रेन्ट का कोई सत्कार करने वाला तो मिला।"

मिस ट्रेन्ट ने भी मदन से वार्त्तालाप करने पर हर्ष प्रकट किया और मदन को धन्यवाद दिया। साथ ही उसने उससे यह भी कहा कि वह कभी-कभी उसके घर चाय पीने के लिए आये। इस प्रस्ताव को सुनकर मदन लज्जित हुआ, परन्तु इन्कार तो वह कर ही नहीं सकता था। अतः उसे कहना ही पड़ा कि अवकाश मिलने पर वह अवश्य उसके घर जायगा। क्योंकि अभी कि विद्यालय मे भर्त्ती हुए उसे थोड़ा ही समय हुआ था अतः उसे पढ़ाई का विशेष ध्यान था पर मदन की टाल-बाजी का मुख्य कारण, उसका लड़कियों से शर्माना और डरना ही था। मिस ट्रेन्ट से इतनी देर बात-चीत करने का कारण भी मिस्टर और मिसेज फ्रेजर का बाहर चला जाना और अन्य किसी का घर पर न होना ही था।

था। किन्तु मनुष्य की प्रकृति है कि वह रात-दिन एक ही काम ठीक तरह से नहीं कर सकता और वैसे भी यह तो प्राकृतिक नियम है कि दिन काम करने के लिए और रात आराम के लिए बनाई गई है। इस नियम का जैसा पाश्चात्य देशों मे पालन किया जाता है वैसा पूर्वीय देशों मे नहीं। कारण इसका केवल यही है कि हमारी प्रकृति संन्यास और त्याग की ओर झुकी हुई है और उनकी भोग की ओर। यही इन दोनों सभ्यताओं के बीच महान अन्तर है। उन लोगों ने अपने समय को चार हिस्सों में विभाजित कर दिया है। अर्थात्, १—कार्य, २—भोजन (खाना), ३—ऐश आराम, और ४—सोना। यद्यपि इस प्रकार प्रोग्राम बना लेने से आसानी तो अवश्य हो आई है, किन्तु उनके जीवन में सोचने-विचारने का अवसर कम मिलता है। इसी कारण से वे कलो (मशीनों) को अधिक अपनाते हैं।

मिस्टर और मिसेज फ्रेजर ने यह सोचा कि कम से कम मदन को सिनेमा देखने को तो अवश्य बाध्य किया जाय, ताकि वह उनके साथ चले। क्योंकि उन्हे यह आशंका थी कि मदन सारे दिन पढ़-पढ़ कर कहीं अपना मस्तिष्क-शक्ति न बिगाड़ बैठे अथवा परीक्षा के समय बीमार न पड़ जाय। अत. एक दिन मदन उनके बहुत कुछ कहने-सुनने पर उनके साथ सिनेमा देखने गया। उस दिन की फिल्म भी "नवयुवक उडले" (Youn

कोई विधि सोची जा सके। मदन इस कथन से संतुष्ट नहीं हुआ और वह हो भी कैसे सकता था, जब कि उसकी सभ्यता में ऐसे सामाजिक कुरीतियाँ प्रकट करना कोई बाँयें हाथ का खेल न था। जहाँ ऐसी बातों को दबाने ही में मनुष्यत्व समझा जाता है, वहाँ मदन दूसरा कैसे हो सकता था।
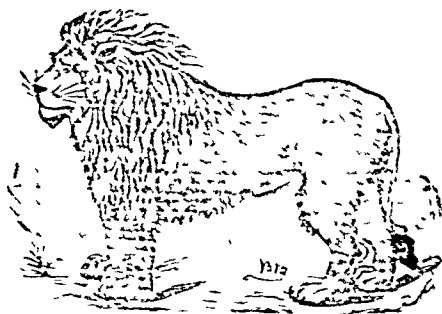
से मिलता ही। किन्तु कोई मनुष्य इस प्रकार कब तक रह सकता है? क्योंकि यह तो मानव प्रकृति ही है कि बिना दूसरों की आनन्ददायक संगति तथा मित्रों के मनोरंजक सहवास के रहना उसके लिए असम्भव-सा होता है। इसीलिए मदन को भी दो-एक वार इच्छा हुई कि वह गुप्ता और ऐयर से, जिनसे कि जहाज पर मित्रता हुई थी, जाकर मिले। यद्यपि पहले तो मदन ने अपने ये विचार दबा दिये, किन्तु कितना ही दबाया जाय तब भी प्रकृति कहाँ तक दब सकती है? वह तो जब अवसर मिलेगा, अपनी इच्छा की तृप्ति करेगी ही। अंततः एक दिन तो मदन ने गुप्ता से मिलने के लिए पत्र लिख ही दिया और दूसरे ही दिन मदन को गुप्ता का प्रत्युत्तर भी मिल गया। जिसमें उसने मदन से मिलने की हार्दिक इच्छा प्रकट की और साथ ही उसी अवसर पर मिस्टर ऐयर को भी निमंत्रित करने के लिए लिखा।

मदन यह उत्तर पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ और नियत समय के अनुसार उससे मिलने के लिये वह रवाना हुआ। मिस्टर गुप्ता और ऐयर मदन की प्रतीक्षा कर ही रहे थे। अत उसके पहुँचते ही उन्होंने बड़ा हर्ष प्रकट किया। तीनों मिलकर बड़े प्रसन्न हुए और अपनी जहाज-यात्रा की चर्चा करने लगे। साथ ही अपने नये-नये अनुभवों की टीका-टिप्पणी भी करने लगे। यद्यपि मदन अपने अनुभव प्रकट करने में तो लज्जित होता था, किन्तु दूस

लगे। इन छः महिनों में तो आपने न जाने क्या-क्या कर डाला होगा।"

ऐयर से जब कभी उसके विषय में कोई बात पूछी तो वह फूला नहीं समाता था; क्योंकि अपनी बातें दूसरों से कहने में वह बड़ा गौरव समझता था। वह गौरव तो क्या, गर्व अवश्य था। कोई भी आदमी प्रशंसा करके उसकी गुप्त बात सहज ही में खुलवा सकता था।

ऐयर ने कहा—"मैं एक ऐसे कुटुम्ब के साथ रह रहा जिसमें दो बहने हैं। वे दोनों ही बड़ी रूपवती हैं। मैं दोनों के साथ खूब प्रेम करता हूँ। हम तीनों और कभी-कभी उनके माता पिता भी सायंकाल के भोजन के पश्चात् एक साथ ताश खेला करते हैं और सप्ताह में एक बार हम सिनेमा देखने को जाते हैं।"

मदन—"सिनेमा में तुम सकुटुम्ब जाते हो या तीनों ?"

मि० ऐयर—"अरे मित्र, मैं तो उन दोनों ही के साथ जाना चाहता हूँ। किन्तु कभी-कभी उसकी माँ भी चलने का अनुरोध करती है, तब भला उसे मैं कैसे इन्कार कर सकता हूँ। और जब वह चलने को तैयार होती है तब मुझे विवश होकर उनके पिता को भी चलने के लिए कहना पड़ता है। मित्र ! इस प्रकार उन लड़कियों के निमित्त प्रति सप्ताह दस-पाँच शिलिंग

ऐयर—"मैं भी उसकी हाँ में हाँ मिला देता हूँ और उ
विश्वास दिलाता हूँ कि मेरा सच्चा स्नेह उसी के साथ है।"

इस उत्तर को सुनकर गुप्ता और मदन हँसने लगे। फि
बातचीत का सिलसिला जारी रखने के लिए मि० गुप्त
फिर पूछा—

"क्या जो कुछ तुम कहते हो उससे दोनों सहमत हो जाती हैं

ऐयर—"क्यों नहीं, मैं बातें ही ऐसी करता हूँ और
के साथ बाहरी व्यवहार भी ऐसा रखता हूँ—जिससे दोनों
अपने मन में यही समझें कि मैं उन्हीं से वास्तविक प्रेम रखता
अन्य से नहीं।"

यद्यपि मदन और गुप्ता दोनों ही इस बात को न समझ
कि एक मनुष्य दोनों के साथ समान प्रेम कैसे कर सकता
किन्तु फिर भी जो कुछ ऐयर ने कहा उसे तो उन्हें स्वीकार
ही पड़ा।

ऐयर ने कहा—"कुछ समय पूर्व उन लड़कियों की न
एक दिन प्राइवेट में मुझ से कहा—मिस्टर ऐयर, मैं तुम से
बात पूछना चाहती हूँ, और मुझे विश्वास है कि तुम उ
मानोगे।"

इस पर मैंने उनसे यही कहा—"आप जरूर पूछि
कदापि बुरा न मानूंगा।"

चाहती कि तुम उन में से किसी एक से प्रेम करने लगो। क्यों कि तुम में और हम में जो अन्तर है, उसे तुम अच्छी तरह जानते ही हो। ऐसी दशा में यदि मेरे पति को यह भान हो गया कि तुम मेरी किसी पुत्री से प्रेम करते हो, तो वह तुम्हें उसी क्षण इस घर को छोड़ने के लिए बाध्य करेंगे। इस पर मैंने तत्काल उस बुढ़िया को विश्वास दिलाया कि मैं उसकी लड़कियों से प्रेम नहीं करूँगा।"

मदन—"किन्तु यह तो बताओ कि वास्तव में दोनों में से तुम किसी से प्रेम भी करते हो या नहीं?"

ऐयर—"हाँ मित्र, प्रारम्भ में तो मैं छोटी लड़की को बहुत चाहता था, किन्तु जब मैंने देखा कि उससे भी अच्छी और रूपवान् कुमारियाँ मुझे मिल सकती हैं, तो फिर उसी से प्रेम करने से क्या लाभ? इसलिए अब मेरा विचार किसी दूसरे कुटुम्ब के साथ जाकर रहने का है।"

मदन—"क्या इनसे तुम्हारा दिल भर गया?"

ऐयर—"हाँ, तुम यह कह सकते हो कि उनसे मेरा दिल भर गया। किन्तु असल बात तो यह है कि दोनों बहिनें मेरे प्रेम के लिए परस्पर झगड़ा करती हैं। और फिर दोनों ही मुझ से कुछ-कुछ प्रेम भी करने लगी हैं। ऐसी दशा में भला मैं अकेले दोनों से कैसे समान प्रेम कर सकता हूँ?"

में व्यतीत करता, और वहाँ से घर पहुँच कर भोजनोपरान्त फिर पढ़ने बैठ जाता, सो कहीं रात के १२-१ बजे जाकर निद्रादेवी की गोद में निमग्न होता। उसने यहाँ आकर अपने वस्त्र पहनने में तो अवश्य परिवर्त्तन किया था, किन्तु वह भी केवल लोक-लज्जा और समाज-भय से। लज्जा तो इस बात की थी कि हजारों में से यदि वह अकेला ही साफा पहिने हुए दृष्टिगोचर होगा तो सब कोई उसी की ओर दृष्टिपात करेंगे। इस बात का भी भय था कि अपने कॉलिज के सहपाठियों में से कोई उसका साफा हँसी के लिए या उसे खिजाने के भाव से उतार कर न फेंक दें। केवल इसी एक कारण से गुप्ता ने अंग्रेजी पोशाक पहनने में अपनी कमजोरी न समझी। किंतु उसने सूट भी खरीदे तो बहुत ही सस्ते और कामचलाऊ। क्योंकि भारत में तो वे निरुपयोगी होंगे ही। इसलिए वह एक ऐसी दूकान पर गया, जहाँ पचास शिलिंग से अधिक मूल्य का कोई सूट ही न था। उसने बम्बई में जो हेट-टाई वगैरा खरीद लिये थे, अब तक उन्हीं से काम चलाता रहा। उसे यह पता ही न था कि पाश्चात्य सभ्यता में अगर कोई बात नोट की जाती है तो वह है केवल कपड़ों की। अर्थात् वहाँ केवल अच्छे-बुरे कपड़ों से ही तो इज्जत की जाती है। जब तक किसी आदमी का पूरा पता न हो, तब तक उसका सम्मान उसके कपड़ो पर से ही किया जायगा। गुप्ता को यह

गुप्ता ने कहा—"यदि तुम कोई शिक्षाप्रद फिल्म देखने चलो तो मै चलने को तैयार हूँ, अन्यथा नहीं।"

ऐयर ने समाचारपत्रों की सूची ढूँढी और एक शिक्षाप्रद पिक्चर का पता लगाया। फलतः भोजन करने के पश्चात् तीनों सिनेमा देखने को गये। फिल्म रात को ११ बजे के करीब समाप्त हुई। अतएव तीनों ने यही निश्चय किया कि रात्रि अधिक हो जाने से अपने अपने घर लौट जायँ। इसी निर्णय के अनुसार ऐयर तो ट्यूब रेल में बैठा और गुप्ता ने बस पकड़ ली। मदन भी अपनी ओर जाने वाली एक बस में बैठ गया। मदन की बस का रास्ता लंदन के सब से प्रसिद्ध बाजार आक्सफोर्डस्ट्रीट मे होकर था। सवाग्यारह बज चुके थे। सर्दी बहुत ही अधिक पड़ रही थी। बस मे कॉच की खिड़कियाँ लगी हुई थी। इसने सुन रक्खा था कि लन्दन और पेरिस जैसे बड़े-बड़े शहरों में रात-भर रोशनी जला करती है। खास कर रास्ते में तो सारी रात रोशनी जगमगाती रहती है। उसने यह कहावत सुन रक्खी थी कि जब लन्दन के लोग सोते हैं, तब पेरिस वाले जगते हैं। उसे इस बात पर विश्वास न हुआ; किन्तु यह सत्य है कि पेरिस रात्रि ही में सुन्दर दीखता है।

सातवां परिच्छेद

लन्दन का दूसरा स्वरूप

दन बस में बैठा हुआ इस प्रकार लन्दन और पेरिस की बातों पर विचार कर ही रहा था कि उसे आस्मान से सफेद-सफेद बूँदें आती हुई दिखाई देने लगीं और कोई पाँच मिनट में तो सब सड़कें ही सफेद हो गईं। जो मनुष्य इधर-उधर चल फिर रहे थे, उनके भी कपड़े सफेद दिखाई देने लगे। ये सब दृश्य देखते-देखते उसकी बस 'मारबल-आर्च' पर, जो कि हाइडपार्क के कोने पर है, जा खड़ी हुई। वहाँ से वह पैदल चल दिया। उसने समझा कि तेज चलने से ठंड कम लगेगी। इधर बर्फ जो गिर रहा था, वह मदन के लिए एक नई बात थी।

थोड़ी दूर जाने पर उसे किसी के हँसने की आवाज सुनाई दी और वह क्या देखता है कि दो लड़के और लड़कियाँ परस्पर हँसी मजाक कर रहे हैं। लड़कियाँ हँसती और लड़कों को धके-

गुप्ता ने कहा—"यदि तुम कोई शिक्षाप्रद फिल्म देखने चलो तो मैं चलने को तैयार हूँ, अन्यथा नहीं।"

ऐयर ने समाचारपत्रों की सूची ढूँढी और एक शिक्षाप्रद पिक्चर का पता लगाया। फलतः भोजन करने के पश्चात् तीनों सिनेमा देखने को गये। फिल्म रात को ११ बजे के करीब समाप्त हुई। अतएव तीनों ने यही निश्चय किया कि रात्रि अधिक हो जाने से अपने अपने घर लौट जायँ। इसी निर्णय के अनुसार ऐयर तो ट्यूब रेल में बैठा और गुप्ता ने बस पकड़ ली। मदन भी अपनी ओर जाने वाली एक बस में बैठ गया। मदन की बस का रास्ता लंदन के सब से प्रसिद्ध बाजार आक्सफोर्डस्ट्रीट में होकर था। सवाग्यारह बज चुके थे। सर्दी बहुत ही अधिक पड़ रही थी। बस में काँच की खिड़कियाँ लगी हुई थीं। इसने सुन रक्खा था कि लन्दन और पेरिस जैसे बड़े-बड़े शहरों में रात-भर रोशनी जला करती है। खास कर रास्ते में तो सारी रात रोशनी जगमगाती रहती है। उसने यह कहावत सुन रक्खी थी कि जब लन्दन के लोग सोते हैं, तब पेरिस वाले जगते हैं। उसे इस बात पर विश्वास न हुआ; किन्तु यह सत्य है कि लंदन रात्रि ही में सुन्दर दीखता है।

सातवां परिच्छेद

लन्दन का दूसरा स्वरूप

मदन बस में बैठा हुआ इस प्रकार लन्दन और पेरिस की बातों पर विचार कर ही रहा था कि उसे आस्मान से सफेद-सफेद बूँदें आती हुई दिखाई देने लगीं और कोई पाँच मिनट में तो सब सड़कें ही सफेद हो गईं। जो मनुष्य इधर-उधर चल फिर रहे थे, उनके भी कपड़े सफेद दिखाई देने लगे। ये सब दृश्य देखते-देखते उसकी बस 'मारबल-आर्च' पर, जो कि हाइडपार्क के कोने पर है, जा खड़ी हुई। वहाँ से वह पैदल चल दिया। उसने समझा कि तेज़ चलने से ठंड कम लगेगी। इधर बर्फ जो गिर रहा था, वह मदन के लिए एक नई बात थी।

थोड़ी दूर जाने पर उसे किसी के हँसने की आवाज़ सुनाई दी और वह क्या देखता है कि दो लड़के और लड़कियाँ परस्पर हँसी मज़ाक कर रहे हैं। लड़कियाँ हँसती और लड़कों को धक्के-

लती जा रही है तथा उसकी इस लीला पर दोनों लड़के हँस रहे हैं। मदन इधर-उधर देखने लगा तो एक जगह तीन आदमी इस तरह खड़े हुए दिखाई दिये मानों बगुले मछलियों के लिए तालाब-रूपी सड़कों के किनारे टक गाँव कर देख रहे हों। पुलिस का एक सिपाही भी अपनी ड्यूटी पर डटा हुआ था। उसे बर्फ गिरने की कुछ भी परवाह न थी। मदन सोचने लगा कि भला वह प्रेम कैसा है कि जिसके कारण इन सब लड़के-लड़कियों को ठंड मालूम नहीं होती। बर्फ गिर रहा है, किन्तु बर्फ की बूँदें इन्हें प्रेम के कारण गरम मालूम हो रही है।

मन की दौड़ के समान संसार में किसी की भी गति नहीं है। एक सेकण्ड में मनुष्य अपनी कल्पना द्वारा चाहे जहाँ आ सकता है। ऐसी तीव्र गति तो हवा की भी नहीं है। उस समय मदन को नीतिशास्त्र का यह दोहा स्मरण हो आया—

> विधि हरिहरऊ करते हैं, मृगनैनी की सेन।
> वचन अगोचर अगमगति, नमो कुसुम-शर देव॥

इसी दोहे को सोचता हुआ वह जा रहा था कि इतने में उसे एक बेंच पर कोई बैठा हुआ दिखाई दिया। पहले तो विश्वास नहीं हुआ, किन्तु जब समीप चला गया तो मालूम हुआ कि एक बुड्ढा और उसकी स्त्री दोनो बैठे हुए हैं, जिनके सारे कपड़े वर्फ में भरे हुए हैं। केवल उनके मुँह ही वर्फ से ढके हुए नहीं थे।
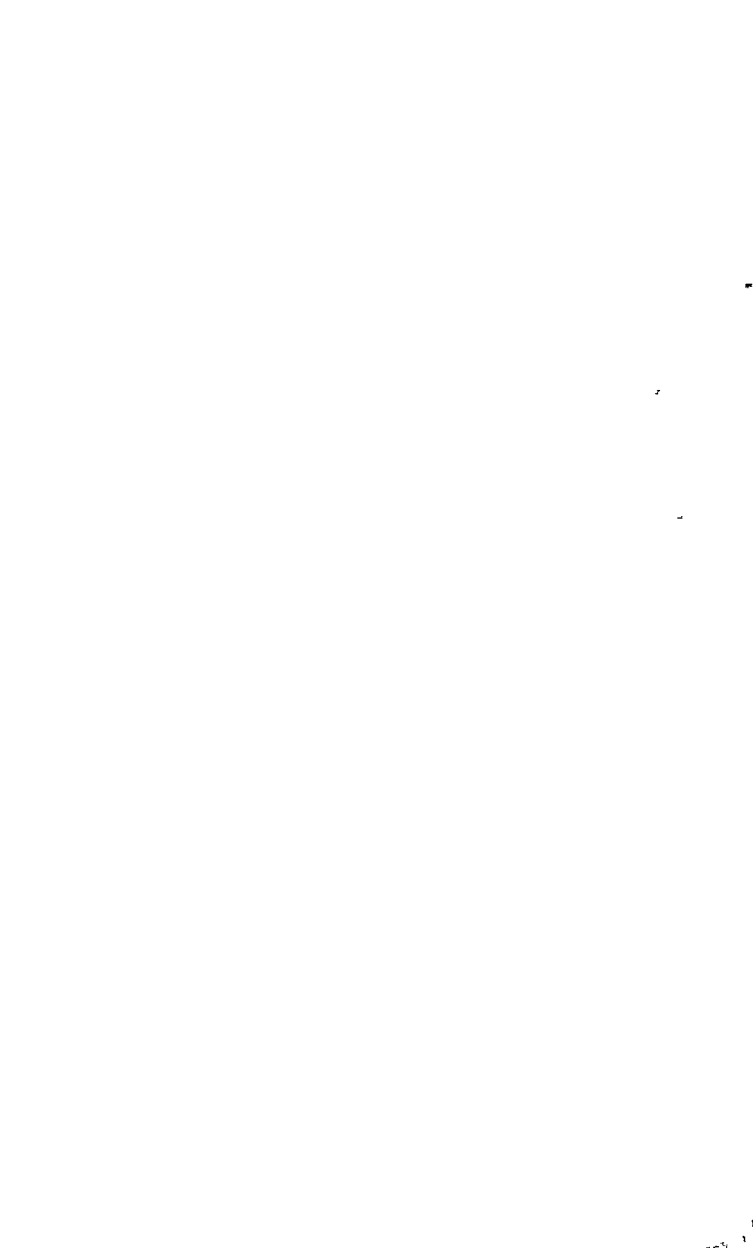
और इन्हें जगावें नहीं। उसने ऐसा ही किया और वह शिलिंग रखकर अपने घर की ओर चल दिया। उसके हृदय-सागर में कितनी ही तरंगें उठ रही थीं। मन की गति हवा से भी तेज होती है, भले ही मनुष्य लंदन में क्यों न बैठा हो; किन्तु एक सैकण्ड में मनःशक्ति उसे भारत में पहुंचा देगी। अस्तु—

क्षण-भर में ही मदन को भारत के विचार आने लगे। वह भारत की गिरी हुई स्थिति का इंग्लैण्ड से मुकाबिला करने लगा। वह यह भी सोचने लगा कि इंग्लैण्ड मे ऐसे दीन मनुष्य कितने होंगे, जिनके पास रहने को मकान तक न हो। दीनता इंग्लैंड मे जरूर है, किन्तु भारत की हालत इससे कई गुनी बढ़ी चढ़ी है। भारत मे तो १०० में से ८० मनुष्य ऐसे हैं, जिनको २४ घन्टों में एक ही वक्त रोटी खाने को मिलती है और पहनने को कपड़ा तक नहीं मिलता। शरद ऋतु में वे आग के पास बैठ कर अपने शरीर को गरम रखते हैं फिर भी कई लाख बच्चे, शिशुकाल में ही शीत के कारण मर जाते हैं। जो बचते हैं उनका पालन-पोषण भी बड़ी कठिनता से होता है। जितनी कठिनाइयाँ एक भारतीय सह सकता है, उतनी और कोई देशवासी नहीं, क्योंकि भारतवासी आज ही से कठिनाइयाँ नहीं भोग रहे हैं, बल्कि इतिहास बतलाता है कि इन्हे कष्ट भोगते-भोगते सहस्रो वर्ष हो गए हैं। यहाँ तक कि अन्यायी और लुटेरों

द्वारा इनके गाँव के गाँव जला दिये गये हैं।

अब भी भारत आपत्तियों के समुद्र में डूबा जा रहा है। पता नहीं, कभी वह समय भी आ सकेगा जब कि भारत फिर से शान्तिदेवी का पुजारी बन कर सुख की सांस ले सकेगा और अपने घरों को, जो कि १५०० वर्षों से साफ़ और स्वच्छ नहीं है, नये ढंग से सुसज्जित कर सकेगा। कुछ समय के लिए वह अपनी शक्ति को घर के इन कीटाणुओं को नष्ट करने में लगा देगा जिन्होंने वर्षों से स्वच्छंद अवसर पाकर घर को पोला कर डाला है। ये कीटाणु, भारतीय सामाजिक कुरीतियों के रूप में हैं और इनका मिटा सकना अल्पकाल में संभव नहीं है। जब हमारी समस्त शक्तियें इन कीटाणुओं की ओर आकर्षित की जायँगी, तब कहीं जाकर वे नष्ट हो सकते हैं।

मदन के हृदय में इसी प्रकार के अनेक विचार उठ रहे थे। घर पहुँचने पर अपने पलग पर सोते-सोते भी वह उन्हीं विचारों मे इतना निमग्न हुआ कि उसकी नींद ही उचट गई। उसने सोचा कि बिना पुस्तक पढ़े नींद नहीं आवेगी क्योंकि विद्यार्थी को पुस्तक हाथ मे लेते ही निद्रा आ घेरती है। फलत पुस्तक हाथ में लेते ही मदन भी निद्रा देवी की गोद मे जा पहुँचा।

॥ इति द्वितीय खण्ड समाप्तम् ॥

प्रथम-परिच्छेद
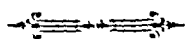
विचार लहरें
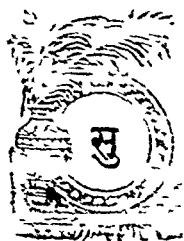
ख का अनुभव सुखी ही कर सकता है; दुःख का दुःखी, घाव का घायल, और प्रेम का प्रेमी ही। अगर भिखारी को संपत्ति के लिये पूछा जाय तो वह क्या बता सकेगा? किसी डरपोक से-जिसे कभी घाव न लगा हो, पूछा जाय कि घाव लगने पर कितना दुःख होता है? बाँझ से पूछा जाय कि प्रसव पीड़ा क्या होती है और यदि संयमी से पूछा जाय कि प्रिया की कटारी रूपी आँखें लगने पर कलेजे में कैसा प्रेम रूप घाव होता है? यह तो जिसने अनुभव किया है, वही बता सकता है। प्रेमी से पूछा जाय कि उसके दिल में प्रेम कितना है और वह प्रेम में इतना अन्धा क्यों हो गया है? वह कुछ भी नहीं बता सकता। प्रेम उसको इतना अन्धा कर डालता है कि वह भला बुरा भी नहीं पहचान सकता। प्रेम किसी की ओर

प्रथम-परिच्छेद

विचार लहरें
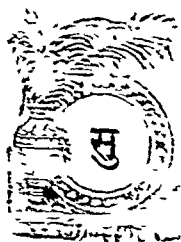
सुख का अनुभव सुखी ही कर सकता है; दुःख का दुःखी, घाव का घायल, और प्रेम का प्रेमी ही। अगर भिखारी को संपत्ति के लिये पूछा जाय तो वह क्या बता सकेगा? किसी डरपोक से-जिसे कभी घाव न लगा हो, पूछा जाय कि घाव लगने पर कितना दुःख होता है? बाँझ से पूछा जाय कि प्रसव पीड़ा क्या होती है और यदि संयमी से पूछा जाय कि प्रिया की कटारी रूपी आँखें लगने पर कलेजे में कैसा प्रेम रूप घाव होता है? यह तो जिसने अनुभव किया है, वही बता सकता है। प्रेमी से पूछा जाय कि उसके दिल में प्रेम कितना है और वह प्रेम में इतना अन्धा क्यों हो गया है? वह कुछ भी नहीं बता सकता। प्रेम उसको इतना अन्धा कर डालता है कि वह भला बुरा भी नहीं पहचान सकता। प्रेम किसी की ओर

हो सकता है, यही नहीं कि वह स्त्री की ओर ही होवे।

जब योगी आसन लगा के बैठता है तो वह ईश्वरीय प्रेम में लिप्त होता है और उसका केवल एक ही लक्ष्य रहता है, वह यह कि, 'ईश्वर कब मिले।' एक बार प्रेम में निमग्न हो गया सो हो ही गया। फिर चाहे ईश्वर उसे पृथ्वी का स्वामी ही क्यों न बना दे तो वह उसे भी लात मार देगा।

मदन को लन्दन में रहते हुए लगभग एक वर्ष हो गया किंतु अभी तक उसकी शर्मिन्दगी न हटी। उसे केवल यही डर था कि उससे कहीं ऐसा काम न हो जाय जिससे कि वह और उसका कुटम्ब दोनों बदनाम हो जायँ। इसी कारण से वह मिलनसार न हुआ और हो जाता तो फिर स्त्री-समाज से क्यों कर बच सकता था! पाश्चात्य सभ्यता में तो मनुष्य बिना स्त्री से मिले हुए ठीक तरह रह भी नहीं सकता। यह तो भारत में ही है कि जहाँ पर समाज में रहते हुए भी बिना स्त्रियों से मिले रहा जा सकता है।

मदन ने प्रारम्भ में ही निश्चय कर लिया था कि वह लड़कियों से न मिला रहेगा और इसी में उसकी सावधानता है। इसके मित्रों ने इसे बहुत-कुछ कहा सुना, यहाँ तक कि—"तुम लन्दन में रहकर झक मार रहे हो, लड़कियों से दूर रहकर उनसे बातचीत नहीं करने से क्या सीख सकोगे? बिना उनसे मित्रता किये तुम्हें अंग्रेजी भाषा का ज्ञान कैसे होगा? आदमी तो कम मिलते हैं और

न उन्हें अपने काम से अवकाश ही होता है। स्त्रियों ही को अवकाश रहता है और वे ही मिलनसार हुआ करती हैं इत्यादि।" पर मदन किसी की बात पर ध्यान नहीं देता और अपनी स्थिति ही में मग्न रहता था। वह कॉलेज से सीधा अपने कमरे में आकर बैठता। सदैव उसे यही संशय बना रहता कि कहीं लड़कियों से मिलने पर उसका मन न बिगड़ जाय। इसी संशय ने उसको इतने दिनों तक एकान्तवासी बनाये रक्खा।

मदन एक दिन अपने कमरे बैठा इस विषय पर सोचने लगा कि क्या सब लोग सच कहते हैं कि बिना स्त्रियों से मिले कोई भी यहाँ के रस्म-रिवाज नहीं सीख सकता। मालूम तो ऐसा ही होता है कि मुझमें कुछ कमी है जरूर, और जिसको पूरी करने के लिए यही एक उपाय है कि मैं स्त्री समाज के साथ मिलने जुलने लगूँ। परन्तु वह मिले-जुले भी कैसे, जब कि सामाजिक रस्म-रिवाज से तो वह अनभिज्ञ ही है। अगर उसने किसी से बात-चीत की और बात करने में कोई त्रुटि हो जाय तो फिर उसे कैसी लज्जा उठानी पड़ेगी, यही संशय उसको कायर बना देता था।

जब जब उसे सोचने का अवकाश मिलता तब-तब इसी बात पर वह सोचने लगता था। अन्त में उसने निश्चय कर लिया कि वह अब किसी सुकुमारी के साथ प्रेम करना प्रारम्भ करेगा

किन्तु यदि किसी को ऐसा मालूम हो जायगा तो उसकी क्या बात रहेगी ? कहाँ तो मदन के शुरू ही शुरू के कट्टर विचार कि किसी स्त्री के साथ बात करने ही को पाप समझना और उसके साथ नाच (Dance) करने को तो कुकर्म से कम नहीं मानना और कहाँ अब उसके ऐसे परिवर्तित विचार !

मदन के प्रारम्भिक कट्टर विचारों में परिवर्तन हो जाने का कारण उसकी आत्म-निर्बलता न थी, अपितु ऐसा हो जाने का मुख्य कारण वहाँ की सामाजिक सभ्यता ही थी। यह तो प्राकृतिक नियम है कि बिना प्रेम के संसार में रहना हो ही नहीं सकता। जन्म से मृत्यु-पर्यन्त प्रेम किसी को नहीं छोड़ता; बाल्यकाल में अपनी माँ का प्रेम और युवावस्था में पत्नी और अपने कुटुम्ब का प्रेम रहता है। प्रेम बिना मनुष्य व्याकुल रहता है और यही व्याकुलता उसके हृदय को निर्बल बना देती है।

भारतीय विद्यार्थी जब तक भारत में रहते हैं तब तक उनकी माताओं और कुटुम्बियों का प्रेम उन्हे आकर्षित करता रहता है। माता पिता और कुटुम्बियों के होने से उन्हें किसी बात की चिन्ता नहीं रहती और यदि होती भी है तो केवल अपनी पढ़ाई अथवा परीक्षा पास करने की।

विद्यार्थी यदि डे बोर्डर (Day boarder) है तो कालेज पर जाकर अपने घर पर वापस लौट आता है। खाने, पीने, पहनने

आदि की चिन्ता नहीं। घर पर माता का प्रेम इतना अधिक होता है कि उसका दिमाग सातवें आसमान पर रहता है। अगर विद्यार्थी बोर्डिंग हाउस या होस्टल में रहा तो उसे वहाँ खाने-पीने की सर्व प्रकार से सुविधायें रहती हैं। हर महिने पिताजी मनिआर्डर भेज देते हैं। ज्यादा रुपयों की आवश्यकता हुई तो पिताजी को दो-तीन चिट्ठियें लिखने पर उनको मजबूरन भेजना ही पड़ता है। तीसरे महिने छुट्टियें हो जाती हैं, उनमें विद्यार्थी अपने घर को जाता है। परन्तु एक विद्यार्थी पाश्चात्य देशों में जाता है तो वह अपने मात-पिता, कुटुम्बियों व सब इष्ट–मित्रों को छोड़कर जाता है। उसके लिए अपने कुटुम्बियों का प्रेम दुर्लभ है। वह केवल पत्र द्वारा अपने भाव प्रकट कर सकता है। लेकिन वह इस प्रकार कहाँ तक अपनी प्रेम-रूपी प्यास को तृप्त कर सकता है। मान लिया कि सारा दिन तो कालेज में व्यतीत किया, पर शाम और रात्रि का समय तो ऐसा है कि जिसमें अपने देश और कुटुम्बियो का स्मरण होता है और उस समय जिस बात की कमी होती है वह हृदय में मालूम पडती है।

लन्दन जैसे शहर में खाने, पीने पहनने की किसी प्रकार की कमी नहीं रह सकती। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जिसके पास रुपये हैं वह यहाँ जो चीज चाहे खरीद सकता है किन्तु वास्तविक प्रेम तो खरीदा नहीं जा सकता?

दूसरा-परिच्छेद

[वैरिस्टरी का विचार]

मदन के लन्दन जाने के पश्चात् उसके पिता को उस के मित्रों ने सलाह दी कि मदन ने लन्दन के विश्व-विद्यालय में प्रवेश किया है सो तो ठीक है परन्तु इसके साथ ही साथ यदि वह वैरिस्टर भी बन जाय तो अच्छा होगा। क्योंकि जैसी मदन की इच्छा है कि वह वापस भारत में आकर किसी विश्व-विद्यालय में अध्यापक बने अगर वह इस विचार में असफल रहे तो फिर वह वैरिस्टर होने पर प्रेक्टिस तो कर सकता है। मदन के पिताजी को यह राय श्रेष्ठ प्रतीत हुई। वह समझते थे कि वैरिस्टर बनना केवल बाँये हाथ का खेल है। भारत में तो सब का यही ख्याल है कि कुछ डिनर्स (Dinners) खाने पर वैरिस्टर बना दिया जाता है। पिताजी ने उसी दिन मदन को हवाई जहाज द्वारा पत्र लिख भेजा और उसी डाक से दो सौ पाउन्ड वैरिस्टरी की फीस के भी भेज दिये।

जब मदन को अपने पिताजी का पत्र और दो सौ पाउन्ड का ड्राफ्ट मिला तो उसे प्रसन्नता हुई परन्तु अपने पिताजी के बैरिस्टरी की परीक्षा के विचार से वह सहमत न हुआ। उसने तो मन में यही कहा कि भारत पाश्चात्य देशों से विचार रूपी घुड़दौड़ मे बहुत पीछे है। जो बातें १०,१५ वर्ष से यहाँ विद्यमान थीं, पिताजी समझते हैं कि वे यहाँ अभी तक उसी रूप मे विद्यमान हैं। बैरिस्टरी की परीक्षा अब पहले से काफी कठिन होगई. यह बात मदन हमेशा अपने मित्रों व जान-पहचान वालों से सुना करता था। किसी हाईकोर्ट के एक वकील ने मदन से कहा कि भारतीय कानूनी परीक्षा और बैरिस्टरी मे तो बहुत ही अन्तर है। भारत में तो अगर कोई विद्यार्थी खास-खास बातें कंठस्थ कर सक्ता हो तो अवश्य पास हो सकता है, परन्तु इंगलैंड में तोता-रटन्त से काम नहीं चलता यहाँ तो मस्तिष्क शक्ति का प्रयोग करने की ही आवश्यकता होती है।

मदन अपने पिताजी की आज्ञा का उल्लंघन करना नहीं चाहता था। उसने फीस जमा कराई, और टेम्पिल में भर्ती हो गया। जब जब उसे अपने कालेज के लेक्चरों से समय मिलता तब वह बैरिस्टरी के लेक्चर सुनने भी चला जाया करता था। उसकी इच्छा बार (b.a) के सब लेक्चर सुनने की थी। किन्तु समयाभाव से वह ऐसा करने में असमर्थ था। और फिर

कालेज । के [लेक्चर्स में थी उसका जाना जरूरी था।

मदन ने अपने एक मित्र से पूछा "क्या सबब है कि बैरि-स्टरी के लेक्चर्स सुनने की कोई खास आवश्यकता नहीं है।"

मित्र ने कहा—"अगर ऐसा होता तो फिर जो विद्यार्थी लंदन के बाहर पढ़ते हैं वह वैरिस्टरी की परीक्षा पास करने में असमर्थ होते।"

मदन—"मुझे समझ मे नहीं आया कि विना लेक्चर सुने इम्तिहान कैसे पास कर लेते हैं।"

मित्र—"अंग्रेज लोग अपने रस्म-रिवाजों के वड़े पाबन्द हैं। आज कल जो " इन्स ऑफ कोर्ट " कहलाते हैं पहले उनमें विद्यार्थीगण रहते थे और परीक्षायें पास नहीं करनी पड़ती थीं।"

मदन—"क्या परीक्षायें पास न करने पर भी वैरिस्टर बना दिये जाते थे?"

मित्र—"हाँ! उन दिनो में यही नियम था कि विद्यार्थी कानूनी लेक्चर्स सुने और वड़े २ वैरिस्टरों के पास काम सीखे। ऐसा करने पर वह वैरिस्टर वना दिया जाता था।"

मदन—"मेरी समझ में नहीं आता कि डिनर्स खाने का क्या प्रयोजन है?"

मित्र—"अभी मैंने पहले तुम्हे कहा था कि विद्यार्थी पहले यहीं रहते थे, भोजन भी यहीं करते थे और डिनर के समय बड़े २

जज और बैरिस्टर कानून पर भाषण दिया करते थे। इसलिये डिनर्स का खाना जरूरी रक्खा गया।"

मदन—"तो अब भी डिनर के पश्चात् भाषण होते हैं?"

मित्र—"नहीं, अब तो भाषण नहीं होते हैं, किन्तु केवल-मात्र रिवाज को चालू रखने के लिये डिनर्स खाने की आवश्यकता रक्खी है।"

मदन—"तो तुम्हारा यह मतलब है कि डिनर्स बैरिस्टरी की परीक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं रखते?"

मित्र—"सम्बन्ध तो जरूर है क्योंकि बिना डिनर्स खाये हुए अगर तुम परीक्षा पास भी कर लो, तो बैरिस्टर-एट-लॉ नहीं बन सकते। नियम यह है कि साल में चार टर्म्स होती हैं और हर एक टर्म्स में अगर तुम किसी विश्व विद्यालय के विद्यार्थी हो तो, तीन बार डिनर्स खाने पड़ेंगे। अगर तुम बैरिस्टरी की ही परीक्षा पास कर रहे हो तो छ बार खाने पड़ेंगे। और जब तक बार-टर्म्स (Bar terms) पूरी न कर लोगे तब तक बैरिस्टर नहीं बनाये जाओगे।"

मदन—'इस हिसाब से तो बैरिस्टरी पास करने में तीन साल लगते हैं?"

मित्र—'जी हाँ। अब तुम्हारे दिमाग शरीफ में आया।"

मदन—"अच्छा अब मैं भर्ती हो गया, अतः अब मुझे भी डिनर्स खाने पड़ेंगे ?"

मित्र—"हाँ जरूर ! चलो, आज ही शाम को डिनर में मेरे साथ ।"

मदन—"कोई खास कपड़े पहनने की जरूर तो न पड़ेगी ?"

मित्र—"अजी नहीं । सिर्फ गहरे रंग का या काला सूट पहन लो । वहाँ तो चोगा पहनना पड़ेगा । मैं ठीक पौने सात बजे लायब्रेरी के पास खड़ा मिलूंगा ।"

मदन समय का बड़ा पाबन्द था । ठीक उसी समय लायब्रेरी के पास मित्र को खड़ा मिला और उसके साथ डायनिंग हाल में प्रवेश किया । समय के अनुसार विद्यार्थियों को काले चोगे पहनने पड़ते हैं । हॉल में बड़ी-बड़ी लम्बी कुर्सियें और मेजें लगी रहती हैं । उन पर विद्यार्थी बैठते हैं ।

मदन भी अपने मित्र के साथ जाकर बैठ गया । ठीक सात बजे भोजन शुरू हुआ । भोजन के पहले जज, बैरिस्टर और विद्यार्थी सब मिलकर ईश्वर प्रार्थना करते हैं । इसके बाद भोजन शुरू होता है ।

मदन था शाकाहारी । जब भोजन परोसने लगे तब उसने कह दिया कि मैं केवल फल खाऊंगा । उसके ऐसा कहने पर जो भारतीय विद्यार्थी उसके समीप बैठे हुए थे, उन्होंने हँसते हुए कहा—

मूर्खता ही है। मैं स्वयं भारत में शाकाहारी था। परन्तु यहाँ आने पर मदिरा, माँस खाना शुरू कर दिया। व्यर्थ में भूखों मरने से क्या लाभ ?"

मदन—"आपकी फिलासफी तो बिलकुल ही पाश्चात्य है।"

पहला विद्यार्थी—"क्यों नहीं, 'जैसा देश वैसा भेष' होना आवश्यकीय है।

मदन—"तब तो आप सब कुछ खाते पीते हैं ?"

पहला विद्यार्थी—"मैं आपके प्रश्न को अच्छी तरह नहीं समझ सका। कृपया फिर अच्छी तरह से समझाइए।"

मदन—"अभी तो आप प्रसन्नता के साथ भोजन कीजिए। फिर जब कभी अवकाश मिलेगा तब अपनी बातें होंगी।"

दूसरा विद्यार्थी—"यहाँ पर बातें करने का अवकाश भोजन के समय होता है। इसीलिए भोजन करने में इतनी देर लगती है।"

मदन—"यह मुझे मालूम नहीं था। मेरे पूछने का अभिप्राय यह था कि क्या आप बीफ भी खाते हैं ?"

आसपास के विद्यार्थी यह बात सुनकर हँसने लगे और एक विद्यार्थी बोल उठा कि अगर यह देखना है तो मेज के दोनों तरफ देखो कि कौन-कौन क्या-क्या खा रहा है ? मदन ने सच-मुच ही देखा तो मालूम पड़ा कि विरला ही भारतीय शाकाहारी होगा। जिधर देखो उधर शराब के गिलास उड़ते हुए दिखाई दिए।

मदन यह देखकर चक्कर में पड़ गया और मन में सोचा कि इस जगह विद्यार्थियों को मदिरा, मांस ग्रहण करने का पहला पाठ पढ़ाया जाता है। 'मुफ्त की चीज काजी को भी हलाल होती हैं' इसी एक पहेली पर चलकर विद्यार्थी मदिरा, मांस शुरू करते हैं। जब उन्हें यह ख्याल रहता है कि हमने रुपये दिये हैं तब क्यों नहीं काफी मौज उड़ाई जाय।

तृतीय-परिच्छेद
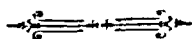
गुप्ता से भेंट

गुप्ता सुवह जल्दी ही उठ जाता था। ऐसे विरले ही मनुष्य हैं जो सर्द मुल्क में सुवह जल्दी उठ जाते हों। गुप्ता तो पढ़ने का कीड़ा था, इसलिए वह जानता था कि सुवह ही पढ़ाई अच्छी हुआ करती है। करीव सुवह के आठ वजे होंगे। गुप्ता गैस के चूल्हे के पास वैठा-वैठा पढ़ रहा था। एक तरफ उसकी पुस्तकें फर्श पर पड़ी हुई थीं। दूसरी ओर एक दूध की वोतल, कुछ फल और पिण्डखजूर तसली में रक्खी हुई थी। जब से इसने सुना कि महात्माजी पिण्डखजूर भी सेवन करते हैं, तब से यह भी नित्य प्रातःकाल दूध के साथ इसे सेवन करने लगा। इन्हीं पदार्थों का इसका सुवह का खाना होता था।

विद्यार्थी का कुछ देर पढ़ने के वाद मस्तिष्क थक-सा जाता है और थकावट के आने पर (मस्तिष्क में) कई एक अनोखे

विचार आप से आप उत्पन्न होते हैं। यही हालत गुप्ता की हो रही थी। वह एकाग्र-चित्त रहना चाहता था, लेकिन रह नहीं सकता था। उसकी विचारधारायें उसे व्याकुल करने लगीं। इसी व्याकुलता में उसका ख्याल मदन की ओर गया।

मदन से मिले उसे करीब दो महीने हो गये। परीक्षा समाप्त होते ही दोनों मिले थे। तब मदन ने कहा था कि वह छुट्टियों में पेरिस, बर्लिन, वियेना आदि देखने जावेगा। अब तो करीब दो महीने होने आये पर मदन के कोई समाचार भी न थे। हाँ एक पोस्टकार्ड जरूर मदन ने लिखा था, मगर उसे मिले हुए तो एक महीने से भी ज्यादा समय हो चुका था। उस पोस्टकार्ड पर केवल एक चित्र ही था। मदन ने उसमें अपने बारे में तो कुछ नहीं लिखा था। यही सोचते-सोचते उसको चिन्ता हुई कि कहीं वह बीमार तो नहीं है? या किसी आपत्ति में तो ग्रस्त नहीं है। परदेश में आपत्ति आते देर नहीं लगती, और फिर उस देश में जहाँ की भाषा का ज्ञान न हो।

इतने में गुप्ता क्या सुनता है कि कोई उसके दरवाजे पर खट-खट कर रहा है। पाश्चात्य सभ्यता का नियम है कि बिना पूछे कोई किसी के कमरे में प्रवेश नहीं कर सकता। यहाँ तक कि पति भी अपनी स्त्री के कमरे में बिना पूछे नहीं आ सकता। जब उसे आवाज सुनाई दी तब गुप्ता ने कहा कि अन्दर आ

सकते हो। इतने में नौकरानी ने [illegible] और कहा, 'मिस्टर गुप्ता ! आपको कोई टेलीफोन पर बुला रहा है।'

गुप्ता ने कहा—"क्या मुझे ? अच्छा हैलो, आया ! आ कर वह टेलीफोन पर गया और पूछा कि कौन बोल रहा है ?" उस में आवाज सुनाई दी कि "क्या आप गुप्ता हैं ?"

गुप्ता—"जी हाँ ! आप कौन साहब हैं ?"

टेलीफोन में आवाज का कभी ? पता नहीं चलता है। इस लिये गुप्ता को मालूम नहीं हुआ कि टेलीफोन पर बातचीत उसका मित्र ही कर रहा है और यह वही मित्र है जिसके लिये आज सुबह वह सोच रहा था।

टेलीफोन पर से आवाज आई—"यह तो मैं मदन हूँ।"

गुप्ता—"क्या मदन, तुम हो।" जल्दी-जल्दी गुप्ता कहने लगा "तुम योरूप यात्रा से कब आये? तुम्हारी तबियत कैसी है ?"

मदन—"मैं बिल्कुल ठीक हूँ।"

गुप्ता—"मदन ! तुम बड़े अजीब आदमी मालूम होते हो। तु ने तो अपनी कभी खबर तक भी नहीं दी।"

मदन—"क्या आप अभी मिल सकते हैं ?"

गुप्ता—"आप से तो मैं हर समय मिलने के लिये तैयार हूँ।"

मदन जल्दी से गुप्ता से मिलने के लिये रवाना हुआ। बहु दिनों से किसी मित्र से वह न मिला था, इस कारण उसे गुप्ता

मिलने की बड़ी जल्दी हो रही थी। लेकिन साथ-साथ उसके दिल में एक रंज था, जो उसे कभी व्याकुल भी कर देता था।

गुप्ता के यहाँ मदन ने जाकर किवाड़ खटखटाया और दोनों मित्र प्रेम के साथ मिले। गेस को सिगड़ी के पास दोनों कुर्सियाँ लगा कर बैठ गये और बातें करने लगे।

गुप्ता—"यदि मदन तुम कोई खयाल न करो तो मैं तुम से एक बात पूछूँ?"

मदन—"क्यों नहीं, जरूर पूछिये?"

गुप्ता—"क्या कारण है कि तुम इतने दुबले हो गये हो; अगर सच पूछो तो तुम्हारे चेहरे पर फीकापन मालूम पड़ता है।"

मदन मुस्कराया और कहने लगा—"आप जानते हैं कि भ्रमण में जैसा भोजन मिल जाय वैसा ही करना पड़ता है और कितनी ही असुविधायें भी भोगनी पड़ती हैं।"

गुप्ता—"नहीं मदन! तुम्हारे चेहरे से ऐसा टपकता है कि तुम्हें किसी बात का दुःख है। क्या घर से पिताजी ने रुपये नहीं भेजे?"

मदन—"नहीं, यह बात तो नहीं है।"

गुप्ता—"तब क्या बात हुई? बताओ तुम्हें मेरी कसम है।"

मदन अपने दिल की बात जरूर कहना चाहता था, परन्तु कहने में हिचकिचाता था। वह समझता था कि उसकी ऐसी

कमजोरियें गुप्ता सुनेगा तो आदर्श-भक्ति हो नष्ट।
नहीं बल्कि घमंडी और उसे घृणा भी उत्पन्न हो जाये। गु
के कट्टर विचारों को मदन खूब जानता था, मगर फिर भी यह
विचारों में थोड़ा-बहुत संदेह था। लेकिन क्या किया
सिवाय गुप्ता के उसका और कोई मित्र नहीं था जो उसकी
को संतुष्ट कर सके। हाँ मनोरंजन करने के लिए तो
ही थे।

गुप्ता ने जब मदन को यों चुपचाप निराशा की मूर्ति बन
बैठे देखा तो उसे मदन पर बड़ा तरस आई। मदन जैसे विद्या
को ऐसी हालत में देख कर गुप्ता जैसे कट्टर विचार रखने
स्वभाव से सारी बात सुनने को तत्पर हो गया।

गुप्ता—"मदन! तुम बिना संकोच मुझे अपनी राम-कहा
कहो। मैं तुम्हें अपने छोटे भाई के समान समझता हूँ,
अगर तुमने कोई गलती भी की होगी तो मैं क्षमा करने के लि
तैयार हूँ। मनुष्य गलती अवश्य करता है और फिर तुम तो
नवयुवक हो।"

मदन—"मैं छुट्टियों में पेरिस गया था और वहाँ पर ला
दो सप्ताह रहा। मेरा वहाँ जाने का एक लक्ष्य वहाँ की सभ्यता
वास्तविक रूप में देखना था। आप जानते हैं कि समय-समय
कितनी ही कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं। एक कहावत भी है

लिन है कि, "चौबेजी दुब्बेजी बनने गये सो दुबेजी ही रह गये।" ठीक यही दशा मेरी भी हुई। रीति-रिवाज जानने की इच्छा से मैंने अच्छे-बुरे आदमी और औरतों से मित्रता की। फ्रेंच भाषा से मैं कम परिचित था। इसीलिए जब कभी कोई अंग्रेज़ी बोलनेवाला मिलता उसके साथ बोलने में मुझे प्रसन्नता होती, जैसे कि लंदन में किसी भारतीय से हिन्दुस्तानी भाषा बोलने में होती है।

यह कह कर मदन ने फिर बोलना प्रारम्भ किया—"अब मैं आपको स्पष्ट रूप में अपना हाल सुनाता हूँ। चाहे आप मुझे बेवकूफ कहें, चाहे पागल, या और भी जो कुछ चाहें कहें—मैं एक रोज़ अपने एक हिन्दुस्तानी मित्र के साथ केफ (Cafe) में बैठा हुआ था। मेरा मित्र कई साल से पेरिस में रहता था। इसीलिये वह फ्रेंच भाषा अपनी मातृभाषा के जैसे बोल सकता था उसी की सहायता से जो कुछ देखना चाहा वह देख सका। मेरे मित्र ने कहा कि इस केफ में यहाँ की सभ्यता का मज़ा बताऊँगा। मैं तुमको कहूँ जहाँ जाकर बैठो। केफ का हॉल बहुत बड़ा था। क़रीब एक हज़ार आदमी और औरतें बैठे हुए थे। एक तरफ बैन्ड बज रहा था। वहाँ की सुन्दरता सब जगह आयने लगे होने से और भी सुन्दर मालूम होती थी। सब लोग शराब, चाय, भोजनादि से निवृत्त हो रहे थे। और हँसी खुशी में

सब थे । हाल के बीच में एक फव्वारा था जो और
हवा चलता रहा था । गर्मियों के दिन होने से हर एक
था कि फव्वारे के पास जाकर बैठे । किन्तु भीड़ बहुत थी ।
इधर-उधर जगह ढूँढने के लिए घूम रहे थे कि इतने में
आदमी और उसकी औरत उठकर जाने लगे । उधर से
उठना हुआ कि उनकी जगह हम दोनों जाकर बैठ गये ।
ही नौकर ने आकर हमको खाने-पीने के लिये पूछा । मेरे मित्र
ने उसके लिए शराब मँगाई और मेरे लिये लेमन ।"

"पेरिस सुन्दरता, फैशन, मनुष्य और सड़कों के लिए
विश्व-विख्यात है । यहाँ की छटा का अनुभव बिना देखे नहीं हो
सकता । हम उस केफे में बैठे-बैठे क्या देखते हैं कि जिधर देखो
उधर एक से एक सुन्दर स्त्रियाँ पोशाक पहिन कर बैठी हुई हैं ।
हमारे सामने कुछ दूरी पर तीन लड़कियाँ भी बैठी हुई थीं ।
उनमें से एक को देखकर—मैं कैसे कहूँ कि मेरा मन उनकी ओर
आकर्षित हुआ ।"

एक साल से ज्यादा मुझे लंदन में रहते हुए हो गया है ।
लेकिन मुझे जैसी कमजोरी वहाँ आई वैसी कभी भी प्रतीत नहीं हुई
थी । मुझे प्रारंभ में तो समझ में ही नहीं आया कि उसमें ऐसा
कौनसा आकर्षण था कि मेरी आँखें दूसरी ओर न गईं । जब मेरे
मित्र ने मेरी ओर देखा तो मुस्कराया और मुझसे कहा कि अगर

बात करना चाहूँ तो उससे वहाँ जाकर कर सकता हूँ। मैंने पूछा क्या तुम्हारा उससे परिचय है ? लेकिन उसने कहा, पेरिस में बात करने के लिए किसी से परिचय करने की आवश्यकता नहीं है। साथ ही यह भी कहा कि ऐसी Formality की जरूरत तो लंदन में है। फ्रान्स के देशवासी स्वतंत्र विचारों के हैं और उनको किसी जाति से घृणा नहीं है।"

"जब मैं कुछ देर तक उसकी ओर देखता रहा तो फिर उसकी निगाह मेरी ओर पड़ी। लेकिन थोड़ा-सा मुस्कराकर फिर उसने वापस निगाह फेर ली। ऐसे कुछ देर तक हम दोनों मुस्कराते रहे। न मालूम मेरी शर्मिन्दगी उस समय कहाँ चली गई। संभवतः वहां के वायुमंडल में शर्मिन्दगी का अभाव ही था। मेरे मित्र ने बहुत आग्रह किया कि वहाँ जाकर उससे बात करूँ लेकिन मुझे डर था कि अगर कहीं वह अंग्रेजी बोल न सकी तो मैं उसकी दृष्टि में मूर्ख-सा दिखाई दूगा। क्योंकि मैंने उसको फ्रेंच समझा था। मैंने अपने मित्र से आग्रह किया कि वहा जाकर उससे बात करे लेकिन मित्र ने मुझे कहा कि अगर मैं जाकर बोलूँगा तो वह मुझ से ज्यादा बातचीत करेगी।"

"हम ऐसी बातें कर ही रहे थे कि वे तीनों उठकर बाहर चली गीं। मेरे मन में बहुत पश्चात्ताप हुआ पर अब क्या हो सकता था। मैं पश्चात्ताप करने लगा, परन्तु मेरे मित्र ने मुझे कहा

उसको खुश करने के लिए बहुत रुपया बरबाद किया।"

गुप्ता—"मदन! तुम्हारे आकर्षित होने का क्या कारण है?"

मदन—"हाँ यह बात तो मैंने अभी तक आपसे नहीं कही। अब कह देता हूँ। शायद आपको याद होगा कि हम दोनों 'रॉयल एकेडेमी' में, जहाँ पर कि चित्रों की प्रदर्शनी होती है—देखने गये थे, वहाँ पर मेरी निगाह एक लड़की के सुन्दर चित्र पर पड़ी। उसकी सुन्दरता से मैं इतना मुग्ध हुआ कि चकित-सा रह गया। यह वही लड़की थी जिसका चित्र देखते ही मैं इतना आकर्षित हुआ था। इसका पता उससे मिलने पर मालूम पड़ा कि उसका एक चित्र प्रदर्शनी में गया था। आपने स्वयं उसका चित्र देखा है, इसलिए उसकी सुन्दरता का वर्णन करना व्यर्थ है।"

"जब वह लन्दन में आई तब मैंने कई एक पत्र लिखे। उसने उनका उत्तर भी दिया। लेकिन मिलने से वह टालमटूल करती थी। एक रोज तो मैं उसके मकान पर भी गया। मेरा उनके मकान पर जाना उन्हें अच्छा न लगा। लेकिन मैं उनका रंग ढंग देखना चाहता था। मै क्या देखता हूँ कि तीन लड़के बैठे हुए और वह उनके साथ शराब पी रही है। वह मुझे देख कर वहाँ से उठकर आई और अपनी भौं टेढ़ी करके मिली, यहाँ तक कि वहाँ पर मेरे बिना पूछे आने से अप्रसन्न भी हुई। मैंने धीरे से कहा कि इसमें नाराज होने की कोई बात नहीं है। मैं आपसे पहले

मिल चुका हूँ, इसीलिए आया हूँ। अगर आपना राज है तो मैं जा सकता हूँ।"

इतने में उसकी बड़ी बहिन आई। और बड़ी अच्छी तरह से मिली। उसने मुझसे कहा—'आप ठहरिये। खाना खाकर जाइये।' मैं ऐसा मूर्ख नहीं था कि फिर वहाँ ठहरता। मेरे चलते-चलते उसने वादा किया कि किसी न किसी दिन वह जरूर मुझ से मिलेगी। कुछ दिन बाद उसी लड़की को किसी नये लड़के के साथ जाते हुए देखा। मैंने अपने एक अंग्रेज मित्र को यह रहस्य सुनाया तो उसने हँसते-हँसते मुझे कहा कि वह लड़की तो वेश्या है, उसने फिर कहा कि जहाँ पर उसके रहने का स्थान है वहाँ पर गुप्त अड्डे बने हुए हैं और अगर मैं चाहूँ तो वह मुझे वहाँ ले चल सकता है।

गुप्ता ने यह सब बातें सुनीं तो चकित रह गया और कहा—"तुम से मैं एक बात पूछना चाहता हूँ। अगर तुम उत्तर देना उचित समझो तो देना। क्या तुमने उसके साथ अपने हाथ काले किये?"

मदन—"अगर तुम्हें मेरी बात पर विश्वास है तो मैं कहूँगा कि मैं चाहता तो यह भी कर सकता था। लेकिन मैं केवल उसकी सुन्दरता पर मुग्ध था।"

गुप्ता—"मदन! तुमने जो बात कही वह मैं मान सकता हूँ,

मदन वेश्या के जाल में पड़ गया था, और स्वयं जिसके चंगुल से छुटकारा भी पा चुका था, अब समय गया सब ही स्वप्न होता जाता था। केवल उसकी स्मृति ही कभी-कभी व्याकुल बना देती थी। कुछ समय तक तो यह सहन करता रहा, पर उसको पता लगा कि जब तक प्यार को पूरी तरह भूल न जाय या उसकी जगह और किसी का प्रेम न हो जाय, तब तक इससे छुटकारा पाना असम्भव है। हाँ, अगर कोई दूसरा मदन की जगह होता तो उस से छुटकारा पाकर दूसरे प्रेम में लिप्त होने में उसे कुछ समय नहीं लगता। उसका प्रेम सच्चा होने से ही उसे इतना मानसिक कष्ट उठाना पड़ा। हाँ, इस घटना ने यदि कोई चिन्ह मदन पर रक्खा तो यही कि वह मिलनसार हो गया तथा अपने मित्रों से मिलने-जुलने और सभ्यता की खोज करने में अधिक अग्रसर हो गया।

मदन का जिन भारतीय विद्यार्थियों से परिचय न था, वह उनसे भी मिलने लगा और मित्रों की संख्या बढ़ाने लगा। लंदन में बड़े बड़े स्थानों पर जहाँ कि भारतीय विद्यार्थी निवास करते हैं वहाँ पर जाने लगा और अब उनके रहन-सहन जानने से उसकी रुचि बढ़ी।

लंदन में पूरी तौर से ज्ञान हो जाता है कि भारत एक छोटा सा देश नहीं है। वहाँ पर हरएक प्रान्तवासियों के मिलने

से मनुष्य के विचार कुछ और ही हो जाते हैं। उसे भारत माता की याद आती है जिसने अपने उदर में प्रकार के मनुष्यों को स्थान दिया है; पर सारे देश में एक ही भाषा न होने के कारण यहाँ विदेश में अंग्रेजी को ही विवश हो स्थान देना पड़ता है। लेकिन जब एक ही प्रान्तवासियों से बातचीत होती है तो उसी भाषा में बातचीत किये बिना नहीं रहा जाता। अगर बंगालवासी अपने किसी प्रान्तवासी से मिलता है तो उससे बंगला बोले बिना नहीं रहा जायगा। यहाँ प्रान्तीयता भी खूब दीखती है, केवल मध्यभारत और संयुक्त प्रान्त के वासी ही ऐसे हैं जिनमें यह बात नहीं दिखाई देती।

मदन के मित्र हर एक प्रान्त के थे और उसको किसी एक जाति विशेष से प्रेम नहीं था। चाहे मुसलमान हो, चाहे ईसाई हो या चाहे हिन्दू हो। वह सब से बराबर मित्र भाव रखता था। अब उसके कई मित्र हो गये थे। अतः उसने शनिवार और रविवार—ये दो दिन ऐसे नियत किये जब या तो अपने मित्रों को अपने स्थान पर बुलाता या उनसे खुद जाकर मिलता था।

मदन के मित्रों ने आग्रह किया—'मदन तुम इतने मिलनसार होने पर भी मदिरा मांस से बचे हुए हो, यह ठीक हो सकता है। परन्तु जब कभी तुम्हें नाच ([illegible] पर बुलाते

है, तब तुम कुछ न कुछ बहाना कर लेते हो। क्या तुम्हें नाच पसन्द नहीं आता ?"

ऐसी बातें उसके घनिष्ट मित्र उससे पूछा ही करते थे। एक दिन उसके एक मित्र ने उसको इस बारे में जोर देकर पूछा—" सच बताओ, तुम इससे विरोध क्यों करते हो।"

मदन ने इन शब्दों में उत्तर दिया—"मित्रों! तुम कहते हो वह तुम्हारे दृष्टिकोण से ठीक हो सकता है, परन्तु जब मेरे दिल में तुम्हारी दलीलों से सन्तोष होगा कि इसके करने में कोई हानि नहीं है—तब मैं अवश्य इसे सीखूंगा। ऐसी प्रथा भारत में नहीं है और इसे भारत में बहुत बुरा समझा जाता है। यहाँ तक कि इसे कुकर्म से कम नहीं समझा जाता है। मैं खुद ही इस बात का निर्णय कर रहा हूँ; दूसरों के विचार इस विषय पर सुनता रहा हूँ, परन्तु अभी तक किसी एक परिणाम पर नहीं आया हूँ। तुमसे मैं खुद पूछना चाहता हूँ कि तुम ऐसे सदाचारी हो कर ऐसा क्योंकर करते हो ? क्या तुम्हे कोई बाधा तो नहीं दीख पड़ती है ?

मित्र ने कहा कि मैं खुद इसके विरुद्ध था। लेकिन जब मैंने स्वयम् इससे सीखा तब पता चला कि जो विचार मेरे पहले थे, वह अब न रहे। डान्स की प्रथा हर एक बहादुर कौम में पाई जाती है। अपने भारत में ही देखो! छोटी जातियाँ भील, सन्थाल

आदि जो हैं, उनके समाज में यह प्रथा पाई जाती है। दुःख है कि रस्म-रिवाजों ने हमारे समाज को ऐसा जकड़ लिया है। कि यदि उसमें कोई नई बात—चाहे वह कितनी ही उपयोगी क्यों न हो—रक्खी जाय तो वह मानी नहीं जायगी और उसके खिलाफ चारों तरफ आवाज उठने लगेगी।"

मदन—"आपका मतलब यह है कि भारत में भी यह प्रथा उच्च जातियों में होनी चाहिये। क्या आप नहीं समझते कि ऐसे आदमी और औरतें मिलने लगेंगी तो कुकर्म और भी बढ़ने लगेंगे।"

मित्र—"आपके पहले प्रश्न का उत्तर यह है कि यह प्रथा भारत में तभी चलेगी जब कि भारतीय स्त्री-समाज कुकर्मों और अंधकार के पर्दे में से निकल कर समाज में बराबरी का दावा करेगा। आपके दूसरे प्रश्न के उत्तर में मैं समझता हूँ कि पुरुषों और स्त्रियो के मिलने से कुकर्मों की वृद्धि नहीं होगी। यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि अगर किसी समाज को स्वतन्त्रता दी जाय और उसे उस स्वतन्त्रता का प्रयोग समझा दिया जाय तो अवश्यमेव दुराचारों में कमी ही होगी। दुराचार उस समाज में ज्यादा पाये जाते हैं जिस समाज में प्राकृतिक नियमों पर न चल कर अपने मनमाने नियम बनाकर समाज को चलाया जाता है।

मदन—"आप प्राकृतिक नियमों से क्या मतलब रखते हैं मैं ज्यादा न कह कर आपको समझाऊँगा कि अपने समाज ही उदाहरण लीजिये। स्त्री और पुरुष में कितना अन्तर किया जाता है? बचपन में स्त्री को यही शिक्षा मिलती है कि अपने पति को अपना स्वामी समझे, उसकी आज्ञा का उल्लंघन करना नहीं जाना है। वह किसी बात के लिये अपने स्वामी को इन्कार नहीं कर सकती। यों तो भारत में स्त्री को बड़ा उच्च स्थान दिया गया है, पर वे सब बातें पुस्तकों में ही हैं। काम में नहीं लाई जाती। मुझे अभी तक यह समझ में नहीं आया कि स्वतन्त्रता पाने से कुकर्म कैसे कम होंगे?"

मित्र—"आपको मालूम है, भारत में पुरुष चाहे सो कर सकता है। अर्थात् चाहे जिससे शादी कर सकता है और एक से ज्यादा स्त्रियाँ रख सकता है। लेकिन क्या स्त्रियाँ भी ऐसा कर सकती हैं? यदि पुरुष को यह डर हो कि मेरी स्त्री भी अपनी इच्छानुसार चल सकती है, मेरे कुकर्म करने पर मुझे छोड़ सकती है, तो ऐसी दशा में पुरुष स्त्री-समाज से या अपनी स्त्री से कोई कार्य्य डर कर करेगा। 'बिना भय प्रीति नहीं हो सकती' और बिना समानाधिकार के मित्रता नहीं ठहर सकती। जिस प्रकार राजा और कंगाल में मित्रता होना नामुमकिन है। वैसे ही वर्त्तमान भारत में स्त्री-पुरुष में मित्रता नहीं हो सकती।"

मदन—"आपके विचार माननीय हैं और इन पर सबको चलना पड़ेगा, यह मैं जरूर मानता हूँ परन्तु अपनी चर्चा का प्रसंग तो डान्स की प्रथा पर हो रहा था। मुझे एक बात और पूछनी रह गई है और वह यह है कि जब स्त्री और पुरुष दोनों साथ साथ डान्स करते हैं, तब तो उनका मिलना मानो घी को आग के पास रखना है।"

मित्र हँसा और कहने लगा—"मदन! तुमने वही प्रश्न किया जो हर एक भारतीय के मुख से निकलता है। तुम्हें मैं एक मामूली सा उदाहरण देता हूँ। बहुतों का कहना है कि मनुष्यों और जानवरों में एक अन्तर है, वह है मस्तिष्क का। जब जानवर सब साथ रह सकते हैं तब मनुष्य क्यों नहीं रह सकते? फिर देखो तुम्हें यहाँ आये एक साल से ज्यादा हुआ है। जो भाव तुम्हारे पहले से ही स्त्री समाज की ओर थे वे ही अब भी हैं या नहीं?"

मदन—"हाँ, मैं खुद इस बात को सोचता हूँ तो मालूम होता है कि पहले मैं स्त्रियों से बात करने में हिचकिचाता था और मुझे हमेशा ख्याल रहता था कि मैं स्त्री से बातचीत कर रहा हूँ। परन्तु यह ख्याल अब जरा भी नहीं होता है कि मैं किसके साथ बातें कर रहा हूँ। तुमने डान्स के विषय मे जो बाते कही है यद्यपि उनको पूरा मानने के लिए मैं तैयार नहीं हूँ पर तुम्हारे इतना कहने पर मैं डान्स करना सीखूँगा और देखूँगा कि मुझ पर क्या रंग चढ़ता है"

मित्र—"सचमुच! हाथ कंगन को आरसी क्या"

पाँचवाँ-परिच्छेद
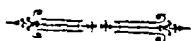
ऐय्यर के साथ में

मदन अब हर एक विद्यार्थी से मिलने लगा। मि० ऐयर से मिलते पहले वह हिच-किचाता था किन्तु अब तो अक्सर कर उससे मिलता और कभी-कभी उसके साथ साथ घूमने व सिनेमा आदि देखने भी जाता। ऐयर महाशय ने थोड़े ही समय में इतने अनुभव प्राप्त किये थे जितने कोई दूसरा व्यक्ति तो चार वर्ष मे भी न कर पाता।

एक समय ऐयर ने मदन से कहा—"मदन! अगर तुम मेरे साथ चलो, तो मैं तुम्हे नई-नई चीजें दिखाऊँगा।"

मदन तो देखने का इच्छुक था ही; झट तैयार हो गया। वे दोनो ट्यूब रेलवे मे बैठ कर लाइन्स के एक बड़े रेस्टोरेन्ट पर गये। यह रेस्टोरेन्ट लंदन के एक बड़े बाजार में है। इस बाजार की सड़क को 'टोटनहेम कोर्ट रोड' कहते हैं। इस जगह एक खास

फेर लिया और ऐयर से पूछा—"क्या तुम्हारा उससे कोई परिचय था ?"

ऐयर—"नहीं तो !"

मदन—"तब क्या बात है । क्या तुम्हें पता नहीं है कि यहां एक प्रकार की वेश्यायें होती हैं जो गुप्त रीति से करना करती हैं और जब पुलिस को उनका पता लगता है तो उन्हें सजा दी जाती है । फ्रान्स में यह बात नहीं है वहाँ जो वेश्यायें हैं उनकी जाँच गवर्नमेंट डाक्टरों द्वारा की जाती है । अच्छा, यह तो बताओ क्या हिन्दुस्तानी भाइयों के साथ जो लड़कियाँ बैठी हुई हैं वे भी ऐसी ही हैं ?"

ऐयर—"नहीं, कुछ तो ऐसी ही हैं और कुछ उनकी मित्र हैं।"

मदन—"ऐयर ! अब तुम्हारा कच्चा चिट्ठा तो खोलो । मैं उसको सुनने का बड़ा इच्छुक हूँ ।"

यह सुन कर ऐयर हँसने लगा और मदन से पूछा—"इससे तुम्हारा क्या अभिप्राय है ।"

मदन (प्रसंग बदल कर)—"अरे यार ! पहले यह तो बताओ कि तुमने कितनो के साथ मित्रता की ?"

ऐयर—"मित्रता ! मैंने ऐसी बातें न तो सीखीं और न जानता हूँ । मैं तो नहीं, अलबत्ता तुम्हारे जैसे भावुक (Sentimental) ही ऐसी मित्रता किया करते हैं ।"

मदन—"एक अंग्रेजी की कहावत है—A man without sentiments is no man he is merely an animal without four legs."

ऐयर—"तुम बेवकूफ हुए हो जो हिन्दुस्तानी विचारों का यहाँ प्रयोग करना चाहते हो। यह कैसे हो सकता है?"

मदन—"मैं स्वयम् हिन्दुस्तानी हूँ, इसलिए उन विचारों को कैसे छोड़ सकता हूँ। तुम तो निरे पशु समान हो गये हो। न तो तुम किसी से प्रेम करते हो न किसी से मित्रता।"

ऐयर ऐसी बातों की परवाह नहीं करता था। उसने कहा—"मदन! तुमको यहाँ की समाज का पूरा-पूरा ज्ञान नहीं है। यहाँ सब प्रेम के नहीं बल्कि पैसे के यार हैं। स्वयं मुझे प्रेम का धक्का लग चुका है तभी से तो मैंने प्रण कर लिया है कि मैं अब कभी एक के साथ मित्रता न रक्खूँगा।"

मदन—"तो क्या किसी के साथ मित्रता करके उसे छोड़ देते हो?"

ऐयर—"नहीं, नहीं! यह सब अवसर देख कर करना पड़ता है। किसी के साथ एक दिन की मित्रता, किसी के साथ महीनों की और किसी के साथ में जब तक यहाँ तब तक की।"

मदन—"मैं तुम्हारी बात नहीं मानता। ऐसा कैसे हो सकता है?"

ऐयर—"यदि तुम मेरी बात नहीं मानते तो यह लो, मेरे पास ५०-६० लड़कियों की तस्वीरें हैं और उनके पते मेरी डायरी में लिखे हुए हैं।"

मदन ये बातें सुन कर चकित-सा रह गया। उसने पूछा—"अच्छा ऐयर! पहले यह तो बताओ कि तुमने इतनों के साथ मित्रता कैसे की? मित्रता करने में तुम्हारा पैसा भी काफी खर्च हुआ होगा? ऐयर! तुम बड़े होशियार और चालाक मालूम होते हो।"

ऐयर मदन की मीठी मीठी बातों से फूला न समाया। उसने कहा—"मित्रता करने में पहली बात यह है कि तुम्हारी तरह शरमाना न चाहिये। कोई भी युवती हो, अगर नम्रता के साथ बात की जाय तो ऐसी बिरली ही होगी जो नाराज होवे। स्त्रियों को बस में करना मेरे बायें हाथ का खेल है। जितनी खूबसूरत स्त्री होगी वह अपनी सुन्दरता के नशे में उतनी ही अधिक चूर होगी और प्रशंसा का रंग चढ़ने पर वह किसी और बात का ख्याल नहीं करेगी। अस्तु—ज्यादातर ऐसी स्त्रियाँ मूर्खा होती हैं। उनकी तारीफ करने और कुछ भेंट करने से वे हाथ की कठपुतली बन जाती हैं। फिर रहीं बदसूरत स्त्रियाँ। वे सुन्दर न होने से अपने शरीर को सजाने में निपुण होती हैं। वे भी मीठी-मीठी बातें करने से उन्नीस बिस्वे हाथ में आ जाती हैं।

साथ मिल सकती हैं कि पूछो मत। कार हो तो सिर्फ सैर करने मे ही तुम्हारी उनसे मित्रता हो जायगी।"

मदन—"एक तरह से तो कार का होना तुम्हारे लिये अच्छा ही है।"

ऐयर—निस्सन्देह! अगर कार हो तो मेरे कई खर्च कम हो जायेंगे। लेकिन क्या किया जाय? पिताजी तो कार के लिये रुपये भेजते नहीं हैं।"

मदन—"समय काफी हो गया है। यहाँ से चलना चाहिये।"

ऐयर—"अरे यार! दस मिनट तक तो और ठहरो मुझे एक मित्र से यहीं मिलना है।"

दोनों दस मिनट तक इधर-उधर की बातें घूम-फिर कर करते रहे और समय होजाने पर वहाँ से उठ कर चले। भोजन-शाला के बाहर आते ही क्या देखते हैं कि दूर से एक लड़की उन की तरफ देख-देख कर मुस्करा रही है। यह वही थी, जिनके साथ ऐयर मिलने का वादा कर चुका था। ऐयर और मदन उसके पास गये। पहले ऐयर ने उसके साथ हाथ मिलाया, फिर मदन को उसके साथ परिचय कराया और इसके पश्चात् मदन ने रवाना होने की आज्ञा माँगी।

रात के दस बज चुके थे। मदन सड़क पर धीरे-धीरे अपने मकान की ओर जा रहा था। दूकानों में बिजली की रोशनियां

मदन बड़ा पश्चात्ताप करने लगा और उससे पूछा—"तु मुझे सच कहो, किस कारण से तुम्हारे पिताजी ने रुपये भेजना बन्द किया है ?"

इस पर उसने मदन से कहा कि वह किसी लड़की के फन्दे में फँस गया है यह बात उसके पिता को मालूम हो गई, तभी से उसके पिता ने रुपये भेजना बन्द कर दिये हैं।

मदन—"फिर तुम्हारा गुजारा कैसे होता है ?"

उसने बड़े धीमे स्वर से जवाब दिया—"महाशय, मेरी राम कहानी मत पूछो। मैं एक बड़ा अभागा हूँ। मुझे लंदन में आये क़रीब पाँच साल हो गये। तीन साल पूर्व मैं एक लड़की के प्रेम मे पड़ गया था और जब मुझसे उसे सन्तान हुई तो मुझे विवश होकर उसके साथ शादी करनी पडी। हम दोनों आपस में बहुत प्रेम करते हैं, इस कारण जैसे-तैसे अपना गुजारा करते हैं। मेरी स्त्री सेलफ्रीज की दूकान पर—जो कि ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट मे सब से बड़ी है, नौकरी करती है। मैं कुछ अर्से तक तो एक हिन्दुस्तानी भोजनशाला में वेटर था, अब जब से उसका दिवाला निकला, तभी से मुझे इधर-उधर भटकना और बैठे-बैठे रोटियाँ तोड़ना पडता है। मुझको करीब १५ शिलिंग प्रति सप्ताह राज्य के वेकार-सहायक फंड से मिलते हैं। परन्तु यह सहायता कितनी हो सकती है, वह आप स्वयम् सोच लें।"

छठा परिच्छेद

'समुद्र-तट की सैर'

मदन को, समुद्र तट पर जो शहर थे, वहाँ पर छुट्टियो में जाना पसन्द आने लगा। एक तो स्वास्थ्य के लिये समुद्र की हवा लाभदायक होती है, फिर वहाँ लंदन-जितनी भीड़-भाड़ भी नहीं होती। मदन कभी कभी एकान्तवास पसन्द करता था। इसलिए वह ब्राइटन (Brighton) जिसको 'समुद्र पर लंदन' कहते हैं, स्थान मे ठहरा। यहाँ वह पहले कभी न ठहरा था। इस स्थान की मालकिन एक स्त्री थी। उसका पति एक बैंक में क्लार्क था और उसके २२ वर्ष की अवस्था का एक लड़का था। वह भी दिन मे मोटर के कारखाने मे काम करने जाता था। उसके १९ वर्ष की एक लड़की भी थी। वही केवल उसकी माता को खाने-पीने और रहने के प्रबन्ध मे सहायता देती थी।

इस स्थान पर मास-मदिरा का आना बन्द था। यहाँ पर वे ही मनुष्य आते थे जो कि या तो शाकाहारी हों या अपने

उतर कर, उसने मकान के दरवाजे को खटखटाया। खटखट की आवाज सुन कर वहाँ की मालकिन आई, जिसको मदन नमस्कार किया।

मालकिन—"क्या आप यहाँ पर रहने आये हैं?"

मदन—"हाँ, यदि आप मुझे एक कमरा दे सकती हों।"

मालकिन—"ज़रूर! शायद आपको मालूम होगा कि य स्थान शाकाहारियों के ठहरने के लिए है।"

मदन—"मैं तो पक्का शाकाहारी हूँ।"

मालकिन—"आइये, मैं किसी आदमी को बुलाती हूँ, जो सामान आपके कमरे में ले जाकर रख देगा।"

मदन मालकिन के साथ अपना कमरा देखने गया। व सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे। उधर से मालकिन की लड़की, जिसका ना मेरी जोन्स था, आ रही थी। मदन ने नम्रता के साथ ह मिलाया। उसको लड़की की मुस्कराहट और भोलापन अच्छ मालूम हुआ।

मिस—"क्या आप कृपा करके अपना नाम बतायेंगे?"

मदन—"मेरा नाम मदन है।"

मिस जोन्स—"नाम तो आपका बहुत सरल है, नहीं तो विदेशियों के नाम याद रखने में मुझे कठिनता पड़ती है। क्या आपका पूरा नाम मदन ही है?"

मदन—"हाँ"

ये तीनों कमरे में गये। कमरा मदन को पसन्द आ गया। समुद्र की हवा सीधी उसके कमरे की खिड़की में आती थी और धूप भी, बादल न रहने पर, कमरे की ठंड उड़ा देती थी।"

मालकिन—"मि० मदन! आपका सामान आ गया है और कमरे में रख दिया गया है। आशा है, अब आप कुछ समय के लिए आराम करेंगे और फिर चार बजे घंटी होने पर चाय पीने को डायनिंगरूम में आयेंगे।"

मदन—"हाँ, मैं जरूर आऊँगा, परन्तु यह तो बताइये कि ड्राइंग रूम कहाँ है।"

मिस जोन्स (जल्दी से)—"आइये मेरे साथ। मैं आपको बताती हूँ।"

मदन ने जाकर देखा और फिर वापस अपने कमरे में आकर लेट गया। आध घंटा आराम करने के पश्चात् वह ड्राइंग रूम में जाकर एक आराम कुर्सी पर बैठा और एक उपन्यास—'हक्सले' का Brave new world'—पढ़ने लगा। जब कभी वह लड़की इधर-उधर काम करने जाती तो धीरे से उसकी ओर नज़र डालता, परन्तु होशियारी के साथ। मिस जोन्स स्वयं भी वैसी ही थी और अपने मृग-नैनों से मदन की ओर कटाक्ष करती थी। किन्तु उसे हर समय ख्याल रहता था कि मेरी इस हरकत को कोई

अन्य न देख ले। जब कभी इन दोनों की चार निगाहें हो जातीं तो जोन्स झट से अपना मुँह फेर लेती या भोली बन जाती। किसी ने कहा है कि प्रेम प्रथम मिलन पर नहीं होता, किन्तु यह कहावत इनके लिए लागू नहीं होती।

ठीक चार बजे मदन चाय पीने को गया। वहाँ पर मालकिन और उसकी बेटी के सिवाय दो-तीन दूसरे आदमी भी थे। मालकिन ने चाय पीते समय सिर्फ मदन से बातचीत की, किन्तु मिस जोन्स ने अन्य आदमियों से। मदन जोन्स के साथ बात करना चाहता था, किन्तु लज्जा मालूम होती थी। उसका कारण केवल प्रेम था। प्रेम बोलना चाहता है, परन्तु लज्जा बोलने नहीं देती।

मालकिन (मदन से)—"अब आप क्या करेंगे ?"

मदन—"मैं समुद्रतट पर घूमने को जाऊँगा और सात बजे तक वापस लौट आऊँगा।"

मालकिन—"जैसी आपकी मर्जी। यहाँ पर शाम का भोजन ७॥ बजे से ८॥ बजे तक होता है। यदि आप देर से आवें तो मुझे कह दीजिये।"

मदन—"नहीं, मैं सात बजे तक अवश्य आजाऊँगा।"

मदन चलने लगा। इतने में जोन्स ने पुकार कर कहा—"मैं आशा करती हूँ कि आप खूब अच्छी सैर करके जल्द
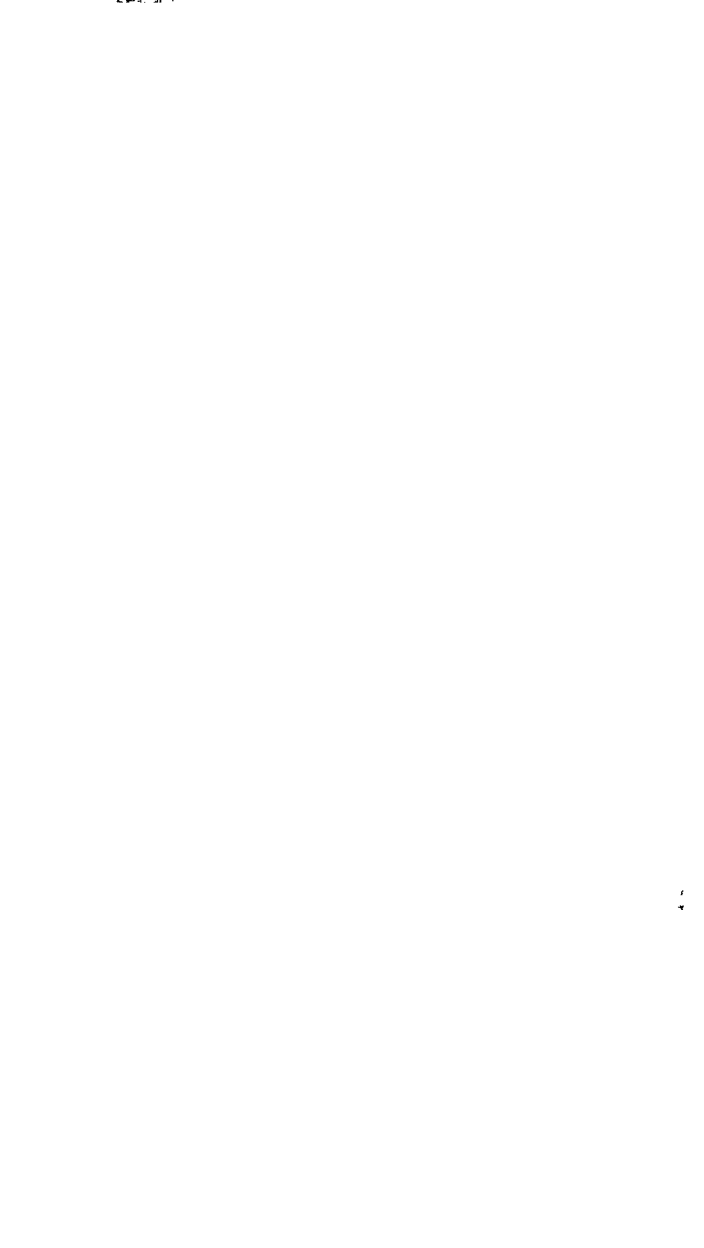
सातवाँ परिच्छेद

धार्मिक वाद-विवाद

मालिक, मालिक, उसका लड़का और मिस जोन्स मदन के साथ ड्राइंग रूम में बैठे हुए काफी पी रहे थे। किसी के हाथ में उपन्यास था तो किसी के हाथ में समाचार पत्र। मालकिन मोजे बुन रही थी। कभी-कभी इधर-उधर की बातें हो जाती थीं। मालकिन और उसकी लड़की यद्यपि पूरे थियासाफिस्ट न थे किन्तु इस विषय पर उन्होंने बहुत-कुछ पुस्तकें पढ़ी थीं। यही कारण उनके शाकाहारी बनने का था। वे दोनों प्रति रविवार प्रातःकाल होते ही चर्च को जाती और थियासॉफी पर नाना प्रकार के लेक्चर सुनकर आनन्द प्राप्त करती थीं।

थियासॉफी का जन्म हिन्दू-धर्म-शास्त्र के आधार पर हुआ है। यदि इसे हिन्दू-धर्म का एक अंग ही माना जाय तो कोई

अत्युक्ति न होगी। मिस जोन्स और उसकी माँ को भारतवर्ष की बातें सुनने में बड़ा आनन्द आता था। उन्होंने उत्कण्ठित होकर मदन से पूछा—"क्या! आप थियासॉफी से परिचित हैं?"

मदन—"मैं स्वयं ही थियासाफिस्ट हूँ।"

यह सुनकर मालकिन और उसकी लड़की ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की। उन्होंने प्रसन्न होकर मदन से कहा—

"मि० मदन! यद्यपि हम दोनो स्वयं थियासाफिस्ट्स नहीं हैं किन्तु इस विषय पर हमने कई किताबे पढी हैं और लेक्चर्स तो हर रविवार को सुनती ही रहती हैं इसीलिए हमे इससे विशेष प्रेम है।"

जब इनमे इस प्रकार की बातें होने लगी तब मालिक और उसका पुत्र गृहकार्य्य का बहाना करते हुए उस कमरे से बाहर निकल गये। कारण, मिस जोन्स और उसकी माँ का थियासॉफी की ओर रुचि रखना उन्हे नागवार मालूम होता था। परन्तु स्त्रियों के स्वतन्त्र होने से वे कुछ कह नहीं सकते थे। हाँ, जब कभी उन्हें अवसर मिलता तब उनके थियासाफिकल विचारों की हँसी उड़ाने में हरगिज न चुकते थे। थियासाफी के सिद्धान्तो में—आदि-अन्त मे आत्मा का रहना और मृत्यु के बाद फिर शरीर धारण करना—आदि बातें हैं जो ईसाई धर्म में न तो पाई जाती हैं और न मानी ही जाती हैं। इस विषय पर पिता-पुत्र [illegible] और

मदन के विचारों के प्रतिकूल थे। अतः मालकिन ने मदन को पुनः सम्बोधन कर पूछा—

"क्या! आप कर्मों के बारे में मुझे कुछ समझा सकेंगे?"

मदन—"मुझे आप अच्छी तरह से समझा कर कहिये कि कर्मों के बारे में आप क्या पूछना चाहती हैं?"

मालकिन—"थियासॉफी की पुस्तकों में ऐसा लिखा है कि मनुष्य के पूर्व-जन्म के कर्म इस जन्म में अपना प्रभाव दिखाते हैं। यह कहां तक सत्य है और किस प्रकार?"

मदन—"मैं आपको बड़ी शान्ति से इस जटिल विषय पर अपने विचारों को प्रकट करके समझाऊँगा। जहाँ आपकी समझ में न आवे वहाँ अवश्य मुझे पूछ लीजिये।"

मदन कहने लगा—"मनुष्य के इस जीवन में उसके कर्म दो प्रकार से अपना प्रभाव दिखाते हैं। प्रथम, पूर्व-जन्म के कर्म और द्वितीय इस जन्म के। पूर्व जन्म के कर्मों के फल को हम तकदीर कहकर पुकारते हैं और इस जन्म के कर्मों को तदबीर के नाम से सम्बोधन करते हैं। मनुष्य का केवल तकदीर के भरोसे रहना ठीक प्रतीत नहीं होता। हाँ, यह जरूर है कि पूर्व-जन्म के कर्म अपने प्रभाव को अवश्य दिखाते हैं क्योंकि, कोई राजा होता है तो कोई रंक कोई साधु होता है तो कोई लम्पट, कोई तनदुरुस्त होता है तो कोई रुग्ण कोई सन्तोषी होता है तो कोई

क्रोधी; कोई सुरूप होता है तो कोई कुरूप; कोई विनोदी होता है तो कोई झगड़ालू, कोई ब्रह्मचारी होता है तो कोई व्यभिचारी; कोई विद्वान् होता है तो कोई मूर्ख और कोई परोपकारी होता है तो कोई स्वार्थी। किसी की प्रकृति सत्य की ओर होती है तो किसी की असत्य की ओर, कोई जन्मते ही मरजाता है तो कोई दीर्घजीवी होता है। ये सब अपने पूर्व-जन्म के कर्मों के फल हैं और इनको भोगना ही पड़ता है।"

मालकिन—"मि० मदन! क्या आप इन सब बातों को ईश्वरीय इच्छा पर निर्भर होना नहीं मानते?"

मदन—"हाँ किसी-किसी मत में ऐसा मानते हैं परन्तु यदि ऐसा है तो मैं कहूँगा कि ईश्वर बड़ा अन्यायी है, बड़ा गैर-इन्साफी है। क्योंकि संसार के अधिकांश मनुष्य दुःखी दिखाई देते हैं और विरले ही ऐसे हैं जिनको हम सुखी देखते हैं। यदि यह सब उसकी प्रेरणा से है तो ईश्वर के अन्यायी होने में क्या सन्देह है?"

मालकिन—"मि० मदन! खुदा के लिये रहम करो, अपनी ज़बान को बन्द करो और उस जगत्-नियन्ता जगदीश्वर को अन्यायी न कहो।"

मदन—"यदि ईश्वर न्यायी है, इन्साफी है तो इन सब बातों के होने का क्या कारण है?"

मालकिन—"यह सब तो मैं कुछ नहीं जानती परन्तु मैं फिर भी यही कहूँगी कि वह ईश्वर है और हम सबका मालिक है।"

मदन—"हाँ, यह तो मैं भी मानता हूँ कि वह ईश्वर और सबका मालिक है परन्तु मेरा आप से फिर भी पूछना है कि इस संसार में इतने दुःखों के होने का क्या कारण है?"

मालकिन—"मि० मदन! यह बात तो मैं आपको नहीं समझा सकती। यही प्रश्न तो मेरा है।"

मदन—तो मैं फिर यही कहूँगा कि मनुष्य के पूर्व-जन्म के कर्मों के फल पर यदि ईश्वरीय हाथ—ईश्वरीय विधान होता तो ईश्वर सबको समान रूप से सुख या दुःख देता, लेकिन यह बात संसार में दिखाई नहीं देती इससे यह साबित होता है कि मनुष्य के कर्म ही प्रधान हैं और उन्हीं कर्मों के कारण वह सुख-दुःख भोगता है। जैसा कि एक भारतीय कवि ने कहा है:—

"कर्म प्रधान विश्व करि राखा। जो जस करहिं सो तस फल चाखा"

मालकिन—"मि० मदन! कृपा करके यह बताइये कि वर्तमान जीवन के कर्मों का असर कब होता है और कैसा होता है? मुझे सुनने की प्रबल अभिलाषा है।"

मदन—"हाँ अब मैं इसके विषय में आपको समझाता हूँ। एक उदाहरण लीजिये—एक राजा है जिसके पास अटूट सम्पत्ति है असंख्य सेना है असीम राज्य है अपार शक्ति है, परन्तु वह

मदान्ध होकर अपने धन का, अपनी शक्ति का और अपने वैभव का दुरुपयोग करने लग जाता है। यहाँ तक अन्धेर करता है कि अपनी प्यारी प्रिय प्रजा की सुधि लेना भूल जाता है, बल्कि अपने कठोर शासन द्वारा उस पर नाना प्रकार के अत्याचार करता है। परिणाम यह होता है कि वही प्यारी प्रिय प्रजा उसके अत्याचार से आकुल हो कर, दुःख से घबरा कर, अनीति से उकता कर और दमन से डर कर उसके प्रतिकूल आन्दोलन करती है। तब राजा को विवश होकर राज्य की बागडोर छोड़नी ही पड़ती है। आप खुद जानती हैं कि इसी योरप में कई एक नरेशों के साथ ऐसी घटनायें बीत चुकी है और भारत में तो ऐसी घटनायें आये दिन होती ही रहती हैं। सारांश यह निकला कि वह राजा अपने पूर्व-जन्म के सुकर्मों के फल से एक विशाल साम्राज्य का अधिपति बना और हर प्रकार के ऐश्वर्य-सुख भोगने लगा, किन्तु जब उसके वर्तमान कर्म अच्छे न हुए तो राजा से राह का भिखारी बनना पड़ा। अब भला आप ही बतलाइये कि इसमें ईश्वर को दोष देना कहाँ तक युक्तिसंगत है? ऐसे कितने ही दृष्टान्त मैं आप के सामने रख सकता हूँ।"

मालकिन—"हाँ आप जो कहते हैं, वह ठीक प्रतीत होता है, परन्तु अभी तक मैं किसी एक विचार पर नहीं पहुँची हूँ। मैं अब इस विषय पर अच्छी तरह से विचार करूँगी।"

मदन—"आप के एक निर्णय पर न पहुँचने का कारण मैं खूब समझता हूँ। बात यह है कि आप का धर्म ईसाई धर्म है। आपने थियॉसॉफी की कुछ पुस्तकें पढ़ी हैं तथापि बचपन से आप को ईसाई धर्म की शिक्षा मिलने के कारण ये बातें आपके दिल में पूरी तौर से नहीं जँच सकतीं। इसका अभिप्राय यह नहीं कि आप इससे सहमत न हों या ये बातें न समझतीं हों, बल्कि मेरा मतलब यह है कि जैसा एक हिन्दू इन बातों पर विश्वास करता है, आपका इन पर वैसा ही विश्वास करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य जान पड़ता है।"

मालकिन—"बिल्कुल ठीक, मि० मदन! जैसा आप कहते हैं, मेरे विचारों की दशा ठीक उसी तरह है। अच्छा अब साढ़े दस बज चुके हैं। कृपा करके आप भी विश्राम कीजिये और मुझे भी इजाजत दीजिये। धन्यवाद।"

मदन—"अच्छी बात है नमस्कार!"

रात काफी जा चुकी थी और मालकिन बूढ़ी होने से बातें करते हुए थक गई थी, अतः इस विषय को आयन्दा के लिये स्थगित कर अपने शयनागार में जा कर सो रही।

मिस जोन्स जब तक अपनी माता और मदन में परस्पर बातें होती रहीं, तब तक चुपचाप बैठी हुई सुनती रही। इन दोनों के उस जटिल विषय का वाद-विवाद उसकी समझ में कुछ

भी न आया था। अगर कोई अन्य व्यक्ति इस विषय पर इतनी देर तक वाद-विवाद करते तो मिस जोन्स कभी इतनी देर बैठ कर अपने समय को न खोती, किन्तु मदन-जैसे मिलनसार व्यक्ति की बातचीत उसे बड़ी भली मालूम होती थी। इसीलिये वह इतनी देर तक बैठ कर मदन से बातचीत की प्रतीक्षा में थी।

यद्यपि वह मदन की सुन्दरता पर पहले से ही मोहित थी, किन्तु उसकी आज की ऐसी मोहिनी बातें सुनकर वह फूले अंग न समाई। उसके खयाल में पहल कभी यह न आया था कि हिन्दुस्तानियों की मस्तिष्क शक्ति इतनी तीव्र और प्रबल होती है। अब मिस जोन्स को मदन से एकान्त में बातचीत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उसने मदन की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए कहा—

"मि० मदन! आप जो बातें कहते हैं, वे तर्क की कसौटी पर कसी हुई हैं। मैं स्वयं आपके विचारों से सहमत हूँ।"

मदन—"यह आपकी कृपा है। अधिकांश देखा जाता है कि वर्तमान युग में नवयुवकगण तर्क की कसौटी पर कसे बिना एक दम किसी निर्णय पर नहीं पहुँचते।

मिस जोन्स—"आपका कहना बिल्कुल सत्य है। मेरे भी ऐसे ही विचार हैं। परन्तु, हाँ आप यह तो बताइये कि आपके साथ ग्रामोफोन है या नहीं।"

मदन (खेद के साथ)—"अफसोस ! मैं नहीं लाया ।

मिस जोन्स—"मैं हिन्दुस्तानी गानों के रेकार्ड सुनना चाहती थी। मुझे हिन्दुस्तानी गायन से बहुत प्रेम है ।"

मदन (मुसकराता हुआ)—"खैर ! आज तो भूल आया, अब आगे खयाल रख कर जरूर लाऊँगा ।"

मिस जोन्स—"हाँ अब भूलियेगा नहीं ।"

इतने में दासी उन दोनों के लिये काफी बनाकर लाई, जिसे पीकर मदन ने सोने की विदा माँगी ।

॥ तृतीय खंड समाप्त ॥

चतुर्थ खंड

पहला-परिच्छेद

'मिस जोन्स के साथ सिनेमा में'
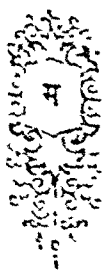
मदन जब से ब्राइटन (Brighton) से लन्दन आया तब से इन दोनों (मदन और मिस मेरी जोन्स) में पत्र-व्यवहार होने लगा। शुरू के पत्र मित्रों के साधारण पत्रों जैसे लिखे जाते थे। धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों घनिष्ठता बढ़ती गई, त्यों-त्यों घनिष्ठ मित्रों के समान पत्र-व्यवहार भी बढ़ा। यहाँ तक कि दो-तीन महीने बाद कोई शायद ही ऐसा दिन खाली निकला होगा जिस दिन दोनों ने एक-दूसरे को पत्र न लिखा हो।

मदन यद्यपि सावधान रहने ही में मनुष्यता समझता था, वह अपने पत्रों में प्रेम-रहस्य को स्थान न देने के लिये भरसक चेष्टायें करता था, तथापि जब मेरी जोन्स के पत्रों में अपनी ओर प्रेमालाप देखा तो उसको स्वयं विवश होकर अपने पत्रों में भी प्रेम धारा को प्रवाहित करना पड़ा। मेरी जोन्स ने कितने ही पत्रों

पहला-परिच्छेद

'मिस जोन्स के साथ सिनेमा में'

मदन जब से ब्राइटन (Brighton) से लन्दन आया तब से इन दोनों (मदन और मिस मेरी जोन्स) में पत्र-व्यवहार होने लगा। शुरू के पत्र मित्रों के साधारण पत्रों जैसे लिखे जाते थे। धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों घनिष्टता बढ़ती गई, त्यों-त्यों घनिष्ट मित्रों के समान पत्र-व्यवहार भी बढ़ा। यहाँ तक कि दो-तीन महीने बाद कोई शायद ही ऐसा दिन खाली निकला होगा जिस दिन दोनों ने एक-दूसरे को पत्र न लिखा हो।

मदन यद्यपि सावधान रहने ही में मनुष्यता समझता था वह अपने पत्रों में प्रेम-रहस्य को स्थान न देने के लिये भरसक चेष्टायें करता था, तथापि जब मेरी जोन्स के पत्रों में अपनी ओर प्रेमालाप देखा तो उसको स्वयं विवश होकर अपने पत्रों में भी प्रेम धारा को प्रवाहित करना पड़ा। मेरी जोन्स ने कितने ही पत्रों

में मदन को अपने घर आने के लिए प्रार्थना की; किन्तु मदन अपने अध्ययन में इतना जुटा था कि उसे इधर-उधर आने-जाने का अवकाश ही न मिलता था।

लंदन से ब्राइटन लगभग ६० मील दूर है। रेल गाड़ी बिजली से चलती है। इस कारण यह दूरी केवल डेढ़ घंटे में ही तै हो जाती है। फिर सुबह से रात के बारह बजे तक हर आध घंटे पर एक गाड़ी छूटती है। यदि मदन चाहता तो जिस दिन इच्छा होती, उसी दिन अवसर निकाल कर वहाँ जा सकता था, किन्तु वह जान-बूझ कर देर कर रहा था। पर न जाने कौनसी अज्ञात शक्ति उसको अपनी इच्छा के विरुद्ध वहाँ जाने की बार-बार प्रेरणा कर रही थी. अतः एक दिन रविवार को वह ब्राइटन चला ही गया।

मिस जोन्स मदन का स्वागत करने के लिए स्टेशन पर आई। दोनों के हृदय में प्रेम का स्रोत उमड़ रहा था, अत. नमस्कार के बाद ही बातचीत प्रारम्भ हुई। फिर एक बजने पर लंच (Lunch) लिया। इसके पश्चात् दोनों समुद्र-तट पर एकान्त स्थान की ओर घूमने निकल गये। घूमते समय आपस मे खूब हँसी-मजाक की बातें होती रहीं। प्रसंगवश मेरी जोन्स ने मदन से हिन्दुस्तान के बारे में कुछ प्रश्न किये। जिनके उत्तर मदन ने मेरी जोन्स को अच्छी तरह समझा दिये। इस बात-

बनाने के लिए गर्मी के दिनों में तुम्हें और पापा को मैं धूप में सोता हुआ देखती हूँ। मालूम होता है यह लड़का स्पेन देश का रहने वाला है।"

. पिता (लड़की से)—"तू! कुछ जानती तो है नहीं और व्यर्थ ही चीं-चपड़ कर रही है, यह बड़े अफसोस की बात है। वह स्पेन देश का रहने वाला नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान का रहने वाला हिन्दुस्तानी है।"

लड़की—"पापा, हिन्दुस्तान कहाँ है?"

पिता—"वाह! क्या तूने स्कूल में नहीं पढ़ा कि हिन्दुस्तान एक बहुत बड़ा देश है जो ब्रिटिश राज्य के अन्तर्गत, माउन्ट हिमाल्याज् के साउथ में है।"

बेटी—"ऐसा! तब तो पिताजी, मैं वहाँ जरूर जाऊँगी।

माता—"क्या तू नहीं जानती कि हिन्दुस्तान में कितने ही साँप, बिच्छू, अजगर जैसे विषैले जानवर रहते हैं और शेर, चीते, भालू, बन्दर आदि जंगली जानवरों की तो वहाँ गिनती ही नहीं है।"

लड़की—(डरकर)" हाँ तो मम्मी! वे ही सब जानवर तो हमने अजायबघर में नहीं देखे हैं?"

माता—"हाँ, यहाँ तो अजायबघर में हैं, मगर हिन्दुस्तान

में जंगलों और देहातों में फिरते रहते हैं।"

लड़की—(बहुत डर कर) "ओह मम्मी ! तब तो मैं वहाँ हरगिज नहीं जाऊँगी। मुझे भारी डर मालूम हो रहा है।"

माता—"हमने तो यहाँ तक सुना है कि अगर कमरे में जूते पड़े हुए हों तो उनमें बिच्छू आकर बैठ जाते हैं और पलङ्ग पर साँप आकर सो जाते हैं।"

लड़की ऐसी भयानक बातों के सुनने से यहाँ तक डर गई कि उसने दोनों हाथों से अपनी दोनों आँखें बन्द कर लीं और अपनी माँ के आँचल में मुँह डालकर प्रार्थना करने लगी कि वे दोनों कृपा करके अब ऐसी भयानक बातें न करें। यह देख कर वे दोनों स्त्री-पुरुष हँसने लगे।"

मदन, जो इतनी देर से बड़ी दिलचस्पी से इन बातों को सुन रहा था, स्वयम् भी हँस पड़ा। उसने घड़ी की ओर देखा तो ६ बज चुके थे, सिनेमा का टाइम समीप था। अतः मिस जोन्स को लेकर सिनेमा देखने चला गया। अन्य दिनों तो सिनेमा १ बजे दिन से ११ बजे रात तक होता रहता है किन्तु आज रविवार था, इसलिये ६ बजे से ही शुरू हुआ। वे दोनों फर्स्ट क्लास सीटों पर जाकर बैठ गये। फिल्म के शुरू होते ही अन्धेरा हो गया और वे लोग खेल देखने लगे। बीच-बीच में दोनों एक दूसरे की ओर देख कर मुस्करा देते थे।

मदन को अब पूरा विश्वास हो गया कि मिस जोन्स मुझे प्रेम की दृष्टि से देखने लगी है; इतना ही नहीं बल्कि मुझ पर अनुरक्त भी है। अतः अब मुझे भी अपनी ओर से इसके प्रति प्रेम-भाव प्रकट करना चाहिये। किन्तु वह असमञ्जस में था कि किस प्रकार अपने विषय को शुरू करे।

मदन ने फिल्म की ओर से निगाह हटा कर अपना हाथ मेरी के हाथ पर रक्खा और उसे धीरे से दबाया, किन्तु हाथ दबाते समय मदन को रोमाञ्च हो आया था। मेरी धीरे से मुस्कराई और उसने भी मदन के हाथ को इस हरकत से धीरे-धीरे दबाया कि वह प्रेम-विह्वल हो गया। अब मदन से न रहा गया इसलिये मेरी के हाथ का चुम्बन कर ही तो लिया। मेरी पुनः मुस्कराई। इस मुस्कराहट को देख कर मदन का साहस बढ़ गया। उसने अपना बायाँ हाथ मेरी के गले में डाल दिया और उसके मुख-चुम्बन का प्रयत्न करने लगा।

अब मेरी के अकचकाने की बारी थी। उसने अपने मुख को मदन के चुम्बन से बचाने की भरसक कोशिश की, किन्तु मदन के उत्कण्ठित और प्यासे नेत्रों ने दीन होकर मूक-भाषा में प्रेम-याचना की। मद-माती मेरी ने अपने नैन-कटाक्ष से मदन को घायल करते हुए मूक-स्वीकृति देदी। मदोन्मत मदन अपना गाल मेरी के गाल से सटा कर उसके अधर-सुधा का पान करने लगा।

और इसे सर्वोपरि समझता हूँ, क्योंकि यह जाति संसार की सम्पूर्ण जातियों से सदाचार, दूरदर्शिता आत्म-परायणता, सत्य, समय की पाबन्दी, बल, बुद्धि, विवेक, धर्म और निष्ठा आदि में सबसे चढ़ी-बढ़ी है। इन्हीं गुणों के होने से इस जाति ने संसार में एक महान् साम्राज्य स्थापित कर दिया ?"

मिस जोन्स—"यह आपका बड़प्पन है जो ऐसा कहते हैं।"

मदन—"इसमें बड़प्पन की कौनसी बात है।"

मिस जोन्स—"कृपा करके आप एक बात मुझे बतलावें कि क्या आप अंग्रेज जाति का विश्वास करते हैं ?"

मदन—"हाँ, मैं अंग्रेज जाति को सचमुच विश्वसनीय समझता हूँ।"

मिस जोन्स—"धन्यवाद ! आपने हमारी जाति की तारीफ के पुल तो बहुत बाँध दिये। शिष्टाचार की यह पराकाष्ठा आपको नहीं करनी चाहिये थी।"

मदन—"मिस जोन्स ! मुझे बड़ा दुःख है कि तुमने मेरी बातों को शिष्टाचार समझा। मैं जो कह रहा हूँ, बहुत ठीक कह रहा हूँ।"

मिस जोन्स—"खैर ! अब आप यह बतलाइये कि अंग्रेज जाति में किसी किस्म की खराबी तो नहीं है ? कोई दुराचार तो नहीं है ?"

मदन—"मिस जोन्स ! हर एक जाति में अच्छी-बुरी बातें अवश्य होती हैं। परन्तु देखना यह चाहिये कि उसमें कितनी बातें अच्छी और कितनी बुरी हैं। अगर अच्छी बातों की संख्या ज्यादा और बुरी बातों की संख्या कम हो तो वह जाति सर्व-मान्य है। इस जाति में यदि कोई खास कमजोरी है तो वह यह है कि यह जाति दूसरी जातियों को अपने बराबर नहीं समझती। इसी से अन्य जातियाँ इससे ईर्ष्या का भाव रखने लगती हैं। इसके अतिरिक्त इस जाति के शान्त रहने से अन्य जातियाँ इसे मिलनसार नहीं समझतीं। यहाँ पर अपरिचित मनुष्यों से बातचीत करना सामाजिक दोष की दृष्टि से देखा जाता है किन्तु अन्य जातियों में नहीं।

मिस जोन्स—"आपका अभिप्राय यह है कि हमारी प्रकृति के मिलनसार न होने से विदेशी लोग यह समझ बैठे कि हम उन्हें पसन्द नहीं करते।"

मदन—जो आप कह रही हैं वह बिलकुल ठीक है। मेरा निजी विचार भी यही है। ईश्वर से मैं उम्मीद करता हूँ कि हमारी यह आज की मित्रता उत्तरोत्तर वृद्धि प्राप्त करेगी

मिस जोन्स—आपने तो यह बात नहीं कही किन्तु मैं इसे बिना कहे हुए नहीं रह सकती [illegible] [illegible] है कि हम अपने [illegible] से पसन्द करती हैं।"

मदन (मुस्कराते हुए)—"यह तो जरूर है, किन्तु मैं अपने मुँह से कहना नहीं चाहता था।"

मिस जोन्स—"इसके होने के कई एक कारण हैं। फ्रांस में ऐसा पक्षपात (colour prejudice) नहीं पाया जाता है।"

मदन—"हाँ! मैंने ऐसी बात फ्रांस में नोट नहीं की। आपकी जाति के ऐसे पक्षपात ही ने भारत की सभ्यता को कायम रक्खा। भारतीय-निवासियों के साथ आपने शादी-विवाह की प्रथा जारी नहीं की, जिससे हमारा समाज और धर्म बना रहा। इसके लिए मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।"

मिस जोन्स ने धन्यवाद का उत्तर हँसते हुए दिया। इसी समय घड़ी ने टन-टन करके ११ बजाये। इसलिए मदन ने मिस जोन्स से विदा माँगी और लन्दन के लिए प्रस्थान किया।

मदन (मुस्कराते हुए)—"यह तो जरूर है, किन्तु मैं अपने मुँह से कहना नहीं चाहता था।"

मिस जोन्स—"इसके होने के कई एक कारण हैं। फ्रांस में ऐसा पक्षपात (colour prejudice) नहीं पाया जाता है।"

मदन—" हाँ! मैंने ऐसी बात फ्रांस में नोट नहीं की। आपकी जाति के ऐसे पक्षपात ही ने भारत की सभ्यता को कायम रक्खा। भारतीय-निवासियों के साथ आपने शादी-विवाह की प्रथा जारी नहीं की, जिससे हमारा समाज और धर्म बना रहा। इसके लिए मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।"

मिस जोन्स ने धन्यवाद का उत्तर हँसते हुए दिया। इसी समय घड़ी ने टन-टन करके ११ बजाये। इसलिए मदन ने मिस जोन्स से विदा माँगी और लन्दन के लिए प्रस्थान किया।

"मिस जोन्स! क्या तुम वास्तव में मुझ से प्रेम करती हो?"

मिस जोन्स—"क्या, ऐसा कहने की भी आवश्यकता है?"

मदन—"इस कृपा के लिये धन्यवाद। किन्तु मेरी! मुझ से प्रेम करके पछताओगी। कारण, मैं तुम्हारे प्रेम के योग्य नहीं हूँ।"

मिस जोन्स—"नहीं, नहीं, मदन! ऐसा न कहो। मैं तुम्हारे प्रेम की प्यासी हूँ। मुझे न सताओ, रहम करो।"

मदन (दुःखी होकर)—"मेरी! तुम नाराज न हो। मैं तुम से हर्गिज अलग न होता, परन्तु क्या करूँ, मुझको एक साल बाद भारतवर्ष में जाना है फिर न मालूम तुम से मेरी कब मुलाकात होगी। दूसरी बात यह है कि अभी तो हम इतने प्रेमान्ध हो रहे हैं लेकिन इसका फल जानती हो, बहुत हानि-प्रद होगा। तुम यह मत समझो कि मैं तुमको प्यार नहीं करता। मैं तुम्हें जी-जान से चाहता हूँ किन्तु अन्य भारतीय विद्यार्थियों की भाँति धोखा देना नहीं चाहता। मैं तुम्हारे गुणों का उपासक हूँ, सुन्दरता का नहीं। एक कहावत है कि प्रेम झूठ बुलाता है किन्तु मैं इसे नहीं मानता। सच्चा प्रेम वही है जिसे दोनों प्रेमी समझ-बूझ कर अपनावें और अपने गृहस्थ जीवन को सुखी करें।"

मिस जोन्स—"मदन! कृपा करके आप यह बताइये कि दूसरे भारतीय विद्यार्थी क्यों कर धोखेबाज कहलाये?"

मिस जोन्स (हँसकर)—"मैं तो चाहती हूँ कि तुम यहीं रहो।"

मदन—"तब तो मेरी दशा त्रिशंकु के समान हो जायगी क्योंकि न मैं तुम्हें ही खुश कर सकूँगा न अपने माता पिता को ही।"

मिस जोन्स (हँस कर)—'यदि मैं भारतवर्ष को चलना चाहूँ तो ?"

मदन—"तो और भी मुश्किल होगी। तुमको हमारी सभ्यता का पता नहीं है मेरे पिता जी को जब यह बात मालूम होगी कि मदन ने एक श्वेतांगी को अपनाया है, तो खर्चा भेजना बिल्कुल बन्द कर देंगे और भारत में जब तुम मेरे साथ चलोगी तो बिरादरी वाले मुझे जाति-बाहर कर देंगे। पिताजी के क्रोध और दुःख का तो कोई पारावार ही न रहेगा, वे मुझे उसी दृष्टि से देखेंगे जिस दृष्टि से एक कट्टर धर्मावलम्बी एक अछूत को देखता है।"

मिस जान्स—"मदन ! तुम सचमुच एक आदर्श आत्मा हो। तुम झूठ बोल कर मुझे धोखा देना नहीं चाहते। मैं सत्य कहती हूँ कि कोई अंग्रेज लड़का तुम्हारे समान सच्चा और साहसी न होगा, जो इस प्रकार निर्भय होकर बातचीत कर सके।"

मदन—'इस शिष्टाचार के लिए आपको अनेकानेक धन्य-वाद। मेरी ! मैंने तुम से मित्रता करते समय यह नहीं सोचा

था कि इसका फल यहां तक निकलेगा। अब भविष्य में मैं कामना करता हूँ कि अपनी मैत्री उत्तरोत्तर वृद्धि करे और हम दोनों एक दूसरे को चिरस्मरणीय समझते रहें।"

मित्र जैनेन्द्र—"डारलिंग! तुम निश्चिंत रहो! मुझे भी ऐसा ही पाओगे।"

मदन—"अब घूमने का समय होगया है अतः बाहर चलना चाहिये।"

मित्र जैनेन्द्र—"चलो मैं तैयार हूँ।"

इतना कह कर दोनों वायु-सेवनार्थ निकल गये।

में है, एक अन्य मित्र के साथ मदन को भी भोजन के लिए निमन्त्रण दिया है। मदन ने पत्र पढ़कर रख दिया और अपना नियमित कार्य्य करने लगा। जब समय हुआ तो कपड़े पहनकर निश्चित स्थान पर पहुँच गया।

मदन जब रेस्टोरेंट पर पहुँचा तब ५ मिनट समय से अधिक हो गये थे। उसने देखा कि सामने एक मेज पर एक हिन्दुस्तानी बालिका और मि० ऐवर बैठे हुए उसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। समीप ही एक कुर्सी खाली पड़ी हुई है।

मदन ने मि० ऐवर को नमस्कार किया और कुछ समय अधिक हुआ जान, क्षमा माँगता हुआ खाली कुर्सी पर जा डटा। मि० ऐवर ने अपनी मित्र से मदन का परिचय कराया और दोनों के साथ भोजन करने के कमरे—रेस्टोन्ट—में प्रवेश किया।

जब वे तीनों रेस्टोरेन्ट में पहुँचे तो देखा कि सामने की टेबुल पर चार युवक, जो वेश-विन्यास और बात-चीत से पंजाबी ज्ञात होते थे, बैठे हुए हैं। वे चारों इनको देखकर कुछ सतर्क से गये और काना-फूसी करने लगे। मदन जो स्वभाव से ही चतुर था उनकी हरकतों को देखकर बात-चीत सुनने के लिए उत्सुक हो गया और उनकी ओर पीठ फेर कर अनजान की तरह बैठ गया।

मदन को इस प्रकार बैठा हुआ देखकर उनमें से एक [illegible]

कितने सुन्दर, बलिष्ठ और धनाढ्य हैं; किन्तु देख रहे हैं कि यह सुन्दर छोकरी एक दुबले-पतले, काले-कलूटे, मद्रासी के साथ जाना चाहती है।"

तीसरा—"तुम तो मूर्ख हो! क्या तुम स्वयं अंग्रेज लड़कियों के साथ मित्रता नहीं कर रहे हो, जो ऐसी वाहियात बातें सोचते हो? तुम्हें उनके साथ मित्रता करने का क्या हक़ है?"

पहला—"क्यों, हम उनके साथ मित्रता क्यों नहीं कर सकते?"

चौथा (तीसरे विद्यार्थी को सम्बोधन करके)—"वास्तव में तुम ठीक कह रहे हो। जैसे हम अपने प्रान्तवाली लड़कियों की मित्रता किसी दूसरे के साथ नहीं देख सकते, उसी प्रकार अंग्रेज भी अपनी लड़कियों की मित्रता गैरों के साथ क्यों कर देख सकेंगे? क्या यह देखकर उन्हें दुःख न होगा? जलन न होगी?"

पहला—"हाँ भाई! तुम्हारा कहना ठीक मालूम होता है। मगर बात यह है कि उनके जलने की—नाराज होने की, हमें क्या परवाह है। वे हमारा नुकसान कर ही क्या सकते हैं?"

तीसरा—"नुकसान की मत कहो। अगर अंग्रेज चाहें तो उनकी लड़कियों से तुम्हारी मित्रता वे रोक सकते हैं। वे ऐसा कानून बनाकर तुम्हें बदिश में ला सकते हैं। इसके अतिरिक्त यदि वे चाहें तो तुम्हें यहाँ पर आने से रोक सकते हैं। बतलाओ ऐसी हालत में तुम क्या करोगे?"

सुनी तो इनको अत्यन्त क्रोध आया। खास कर ऐयर और लड़की तो आगबबूला हो गये; मगर मदन के समझाने से वे शान्त हुए। तीनों ने भोजन किया और मदन के विशेष आग्रह से सब उनके निवास स्थान पर पहुँचे और आराम के साथ बातें करने लगे। मि० गुप्ता, जो कुछ समय से मदन के समीप ही आकर रहने लग गया था, इस समय अपने मकान पर ही मौजूद था। मि० ऐयर मदन और लड़की को अकेले छोड़कर मि० गुप्ता से मिलने चला गया। अब इन दोनों को बातें करने का सुनहला अवसर मिला। लड़की ने सन्नाटा तोड़ते हुए मदन से कहा—

"मि० मदन! उन चार भारतीय विद्यार्थियों की बातें, जो वे रेस्टोरेन्ट में कर रहे थे, कुछ समझ में आई?"

मदन (घृणा और दुःख प्रकट करता हुआ)—"हाँ, उनकी बातों का कुछ-कुछ सार तो मैंने अवश्य निकाल लिया है। मुझे बड़ा खेद होता है कि भारतीय विद्यार्थी भी अब ऐसे गंदे भावों को अपनाने लगे हैं।"

लड़की— भारतवासी भारतीय नारियों को न स्वतन्त्र देख सकते हैं, न खुद ही स्वतन्त्रता दे सकते हैं, इसीलिए इन लोगों के दिमाग में ऐसी अजीब-अजीब बातें पैदा होती हैं। यदि आज भारत की मातायें बहनें बहुएँ और बेटियें स्वतन्त्र होतीं तो इनके कदापि ऐसे विचार न होते।"

लड़की—"मैं अपने बहनों की बुराई करना नहीं चाहती किन्तु इतना जरूर कहूँगी कि वे भारतीय महिलाये यहाँ आने पर अवश्य सातवें आस्मान पर चढ़ जाती हैं।"

मदन—"माफ कीजिए, इसी कारण से मैंने भारतीय लड़कियो के साथ घनिष्ठता बढ़ाना ठीक न समझा।"

लड़की—"आपने बहुत ठीक कहा, क्योंकि एक अंग्रेज युवती के साथ बात-चीत करने में कोई किसी प्रकार का ख्याल न करेगा और वही बात-चीत यदि एक भारतीय लड़की के साथ होगी तो सब का ध्यान उसकी ओर विशेष रूप से आकर्षित होजायगा और उनकी मैत्री की चर्चा उसके माता-पिता के कानों तक अवश्य पहुँचेगी। अभी बात खतम भी न होने पाई थी कि मिस्टर ऐयर ने प्रवेश किया। अत इन दोनो को अपनी बातचीत बद-करनी पड़ी। कुछ समय और बैठने के पश्चात् लड़की ने मिस्टर ऐयर से विदा मांगी। ऐयर और मदन उसको पहुँचाने के लिए दरवाजे तक गये। जाते वक्त लड़की ने पुन मदन से वादा किया कि समय मिलने पर फिर आप से मिलूँगी और इस विषय पर बातचीत करूँगी

चौथा परिच्छेद

'भाई-बहन'

मदन अपने भारतीय भाइयों की रहन-सहन से तो पूर्णतया परिचित हो गया था, मगर अभी महिलाओं के बीच उसे मिलनसारी प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला। यद्यपि मि० ग्रियर की बदौलत उस लड़की से मदन ने काफी तौर पर परिचय कर लिया, तो भी एकाएक जब कभी उससे सामना हो जाता, वह बिना झेंपे न रहता। धीरे-धीरे उससे अधिकाधिक मुलाकात होने लगी और साथ ही साथ घनिष्ठता भी बढ़ने लगी।

उस लड़की को मदन ने अपनी बहन बनाया और उसने मदन को अपना भाई। धीरे-धीरे यह व्यवहार यहाँ तक बढ़ा कि उनकी मुलाकात प्रतिदिन होने लगी। अब मदन के साथ उसका प्रेम इतना अधिक हो गया था जैसा कि सहोदर भाई-बहनों में हुआ करता है। मदन अन्य भारतीय महिलाओं को भी श्रद्धा

और प्रेम की निगाह से देखता था। उसका विचार था कि वह विद्योपार्जन के बाद भारतवर्ष मे जाकर भारतीय महिला-समाज के विकास के लिए पूर्णतः प्रयत्न करे और भारतवर्ष की सामाजिक कुरीतियों मिटाने में भी अपना हाथ बढ़ावे।

एक दिन मदन ने उस लड़की को चाय पीने के लिए बुलाया। वह मदन के सदाचार और सभ्य व्यवहार से सन्तुष्ट तो थी ही; अतः बुलाते ही चली आई। चाय पीते समय उसने मदन से कहा—

"मि० मदन! मैं चाहती हूँ कि अन्य भारतीय विद्यार्थी भी तुम्हारे ही जैसे विचारों के हों तो कैसा अच्छा हो?"

मि० मदन ने सुनकर मुस्करा दिया।

इन दोनों में इतनी घनिष्ठता हो गई थी कि ये बिना संकोच किये हर एक विषय पर बात-चीत कर सकते थे। जहाँ पर सच्चा प्रेम होता है वहाँ किसी प्रकार का संकोच नहीं रहता और न कभी भय ही उत्पन्न हो सकता है।

हठात् मदन ने अपनी बहन से पूछा— क्या तुम उन चार लड़कियों को—जो मेरे साथ एक ही जहाज से भारत से आई थीं—जानती हो?

लड़की— यदि तुम उनके नाम बोलो तो मैं बता सकती हूँ।

मदन— मैं उनके नाम तो नहीं जानता, हाँ याद आया।

उनमें से एक का नाम मिस दीक्षित है। क्या तुम्हारा उससे परिचय है ?"

"मैं उसे खूब जानती हूँ।" लड़की ने हँसते हुए कहा और उसी मुस्कराहट में फिर बोली—"मुझे पता नहीं था कि वह लड़की तुम्हारे ही साथ जहाज में बैठकर आई है।"

मदन—"हाँ ! इसीलिए तो पूछ रहा हूँ।"

लड़की—"तुमने ऐसी सुन्दरी के साथ मित्रता क्यों नहीं की?"

मदन—"इसलिए कि वह मेरे जैसे कम बोलने वाले से मित्रता रखकर अपना समय खराब करना नहीं चाहती थी।"

लडकी—"यदि आपका उससे परिचय होता तो विशेष लाभदायक होता।"

मदन—"आपका कहना कहाँ तक सत्य है यह आप ही जानें। मेरा तो खयाल है कि ऐसी रूप-गर्विता सुन्दरियाँ मुझसे मित्रता करके कुछ लाभ नहीं उठा सकतीं। उस लड़की का रहन-सहन जैसा जहाज पर था उससे मालूम होता है कि जिस डिग्री के लिए वह यहाँ आई है वह उसे हरगिज प्राप्त नहीं हो सकती।"

लडकी—"मि० मदन ! मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि तुम अच्छे-बुरे की पहचान करना जानते हो।"

मदन (हँसकर)—"आप जो कहती हैं, सम्भव है वह ठीक हो, पर वास्तव में तो मनुष्य-प्रकृति ही ऐसी है कि जब वह

किसी से प्रेम करने लगता है तो उसे हानि-लाभ या अच्छे-बुरे का ज्ञान नहीं रहता।"

लड़की—"हाँ, यह तो होता ही है। आदमी अच्छे बुरे की पहचान ज़रा कम कर पाते है क्योंकि वे तो सुन्दरता पर ही रीझते हैं।"

मदन—"हाँ सुन्दरता तो चीज़ ही ऐसी है कि वह मनुष्य को पागल बना देती है। दिल चाहे काला हो या निष्ठुर, परन्तु यदि बाहरी ढाँचा सुन्दर है, चेहरा आकर्षक है तो मनुष्य उस पर दीवाना हो जाता है। जब उसका रंग-रूप ढलने लगता है तभी उसे अच्छे-बुरे का ज्ञान होता है। लेकिन आगे की बात भविष्य के गर्भ में रही। मनुष्य की प्रकृति वर्त्तमान समय की बातों को ही अधिक ग्रहण करती है।"

लड़की—"अच्छा तो सुनिये—कुछ महिने तक तो वह सीधी-सादी, रही अथवा यों कहिये कि उसकी गुप्त बातें इधर-उधर नहीं फैलीं। किन्तु ज्यों ही उसे समय ने सहायता दी, वह लंदन भर में प्रसिद्ध हो गई। अब तो आप जहाँ जाइये, वहीं भारतीय विद्यार्थियों में उसके सम्बन्ध में कुछ न कुछ बात या मज़ाक अवश्य सुन पावेंगे।"

मदन (हँसते हुए)—"तब तो मैं अभागा ही ठहरा।"

लड़की—"आप जानते हैं कि वह असाधारण सुन्दरी तो है हीं, उस पर यहाँ के वातावरण ने उसे और भी अन्धा कर दिया। नौबत यहाँ तक पहुँची कि उसने प्रतिदिन एक न एक नया मित्र बनाना आरम्भ किया।"

मदन—"उसका यही हाल जहाज़ पर भी था। उसके मित्र उसे हमेशा घेरे रहते थे। प्रति दिन ताश, जुआ और मदिरा-पान में अपना बहुमूल्य समय खोना उसे कुछ बुरा न मालूम होता था।"

लड़की—"यही हालत उसकी यहाँ पर भी रही। अन्त में एक दिन जिस कालेज में वह पढ़ती थी, उसके प्रिन्सिपल ने उसे मजबूर हो कर कॉलिज से निकाल दिया।"

मदन—"उसके माता-पिता को तो इस बात का ज़रूर पता चल गया होगा?"

लड़की—"नहीं, उसने इस होशियारी और दूरन्देशी से काम लिया कि उन्हें साल भर तक पता ही न चलने दिया। जब उसके पिता को यह भेद मालूम हुआ तो वह यहाँ स्वयम् आया और उसे अपने घर ले गया।"

मदन—"उसके पिता को चाहिये था कि खर्चा भेजना बन्द कर देता। ऐसी वाहियात लड़कियों के लिए खर्चा भेज कर उन्हें बिगाड़ने में सहायता करना है। जब रुपये न आते तब अपने आप ठिकाने आ जाती।"

लड़की—"मैंने तो सुना है कि माता-पिता के बेहद प्यार से ही उसका जीवन नष्ट हुआ। उन्होंने उसको बचपन में इतनी स्वतंत्रता दी कि वह आगे चल कर अपने जीवन को सम्हाल न सकी।"

मदन—"स्वतंत्रता एक हद तक ठीक भी है पर इसका यह अर्थ नहीं कि युवक और युवतियों पर उनके माता-पिता की उचित देख-रेख और संरक्षण भी न रहे।"

लड़का—"हमारे माता-पिता बिना सोचे-विचारे हमें यहाँ पर भेज कर निश्चिन्त हो जाते हैं। उन्हें यहाँ का समाज और परिस्थिति का पता नहीं है। इसीलिए तो हमारे जीवन में कितनी ही बाधायें आ पड़ती हैं।

मदन—"मैं आपके विचारों से सहमत हूँ। वास्तव में हम

चार गालियां ! मैंने उससे पूछा कि क्या तुम भारत चलना चाहते हो ? तो उसने लापरवाही और घृणा से उत्तर दिया कि भारत बड़ा असभ्य निर्धन और गर्म मुल्क है। मैं वहां जाना नहीं चाहता।"

लड़की ने हँसते हुए जवाब दिया—"मि० मदन ! इसीलिये तो मैं यहां छोटी उम्र के बालक-बालिकाओं को भेजने का विरोध करती हूँ। मैं चाहती हूँ कि यहाँ पर ऐसी उम्र के भारतीय विद्यार्थी आने चाहिये जो यहाँ आकर विद्योपार्जन के साथ ही साथ यहाँ की अच्छी अच्छी बातें भी सीखें। जिससे वे भारत में पहुँच कर देश की सेवा करते हुए उसे लाभ पहुँचावें। उन लड़कों को यहाँ आने से क्या फायदा होगा जो बिना सोचे-समझे यहां की कुरीतियों को अपना कर पथ-भ्रष्ट हो जाते हैं।"

मदन—"इसी में भारत और इंग्लैण्ड का गौरव है।"

बातें करते हुए काफी समय हो चुका था। लड़की ने अपनी घड़ी को देखा। ६ बज चुके थे। उसे साढ़े छः बजे एक लेक्चर में जाना था इसलिए उसने मदन से विदा का नमस्कार किया।

पांचवाँ परिच्छेद

'मनो-मालिन्य'

अब मिस जोन्स प्रति रविवार को मदन से मिलने लंदन आने लगी। उसके माता-पिता को इस मुलाकात का पता नहीं था। उन्हें मिस जोन्स द्वारा इतना ही मालूम हो सका कि वह अपने कुटुम्बियों से या अन्य अंग्रेज मित्रों से मिलने के लिए जाती है। वह इस प्रकार प्रति रविवार सुबह का भोजन करके रवाना होती और रात को दस ग्यारह बजे घर लौट आती।

जोन्स के माता-पिता बहुधा मदन की प्रशंसा किया करते थे जिसे सुन-सुन कर वह मन ही मन बहुत प्रसन्न होती। एक दिन तो उसने अपनी माता से मदन को छुट्टी में बुलाने के लिए कहा। माता स्वयं मदन के फिलासफी-सम्बन्धी ज्ञान और उसकी बातों

पर मुग्ध थी. फिर भला उसे क्या उज्र होता, अत. निमन्त्रण भेज दिया गया।

निमन्त्रण पाकर मदन प्रसन्नता के मारे फूल उठा। उसे तीन दिन की छुट्टियाँ थीं। उन छुट्टियों का उसने ब्राइटन जाकर सदुपयोग किया।

गर्मी का मौसम था और जौलाई का महीना। ब्राइटन मनुष्यों से भरा था। हर तरफ आनन्द की लहरें उठ रही थीं। समुद्र में जल-क्रीड़ा करने नर-नारियों का समूह उमड़ा पड़ता था। मदन और मेरी भी स्नान करने समुद्र के किनारे पहुँचे। उन्होंने दिन में कई बार स्नान किया और फिर जब सायंकाल हुआ, भगवान भास्कर अपने विश्राम-स्थान की ओर अग्रसर होने लगे तो मदन भी मेरी को साथ लिए हुए घर लौटा। मदन थक-सा गया था। इस कारण अपने कमरे में जाने की शीघ्रता करने लगा। उसके कमरे में जाने का एक कारण और भी था, वह यह कि भोजन करते समय मेरी का एक मित्र उससे मिलने आया था। यद्यपि मेरी ने उसी समय मदन से उसका परिचय करा दिया था तो भी वह जानना चाहता था कि मेरी का उसके साथ घनिष्ट सम्बन्ध है या केवल मित्रता

मेरी जोन्स और उसका मित्र कुछ देर तक मदन के सोने

की प्रतीक्षा करते रहे। जब उन्हें निश्चय हो गया कि मदन अब बेखबरी से खुर्राटे ले रहा होगा तब वे दोनों समुद्र तट की ओर घूमने को निकल गये।

मदन ने—जो बहाना किए हुए पलंग पर लेटा था—उन्हें साथ-साथ जाते हुए अपने कमरे की खिड़की में से देखा। यह पहला ही अवसर था कि उसने मिस मेरी को एक अपरिचित व्यक्ति के साथ इतनी रात गये अकेली घूमने के लिए निकलते हुए देखा। मदन को यह देखकर बड़ा दुःख और क्षोभ हुआ, किन्तु समय न देखकर उसे लोहू का घूंट पीकर रह जाना पड़ा।

उन दोनों का साथ-साथ जाना देखकर मदन के हृदय में उनका विशेष भेद जानने की अभिलाषा बढ़ी। वह कपड़े बदल कर चुपचाप कमरे से बाहर हो गया। उधर मेरी और उसका मित्र समुद्र-तट की एक बैंच पर जाकर बैठ गये। वहाँ कुछ अँधेरा था अतः उन्हें जान-पहचान वाले ही पहचान सकते थे।

मदन धीरे-धीरे टहलता हुआ उनकी ओर बढ़ने लगा। वह इस चतुराई से जा रहा था कि उन्होंने उसको समीप पहुँच जाने पर भी न पहचाना। जब वह बिल्कुल समीप पहुँच गया तो क्या देखता है कि वे दोनों एक दूसरे की बगल में हाथ डाले हुए हैं तथा उनके मुँह एक दूसरे के शरीर में छिपे हुए हैं। इस दृश्य को देखकर मदन का हृदय दुःख, क्षोभ और घृणा से टूक-टूक

मनुष्य क्या-क्या विचार करता है, कैसे-कैसे मन्सूबे बाँधता है, किन्तु ईश्वर कुछ और ही करता है। मेरी ने यह स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि उस लड़के की घनिष्ठता का पता इस प्रकार मदन को लग जावेगा। अस्तु, दूसरे दिन जब मदन की मेरी से भेट हुई तो उसने मदन के चेहरे पर रूखापन पाया। वह इसका कारण जानना चाहती थी। किन्तु मदन ऐसा महान् हृदय का था कि इतना काण्ड हो जाने पर भी उसने यथा-संभव अपने हृदय के भावों को चेहरे पर न आने दिये।

यद्यपि मदन सदा-सर्वदा यही प्रयत्न करता रहता कि वह उस घटना को विस्मृत कर दे किन्तु वह इसमें कृत-कार्य न हो सका। वह अपनी मानसिक व्यथा को गुप्त रखना चाहता था, किन्तु मर्माहत हृदय भेद को गुप्त रखने में असमर्थता प्रकट करता था।

आज शाम की गाड़ी से मदन को लंदन लौटना जरूरी था। पहले जब मदन ब्राइटन आता तो सोचा करता—"क्या ही अच्छा हो यदि उसकी छुट्टियाँ कभी समाप्त न होकर द्रौपदी के चीर की भाँति बढ़ जावें।" पर आज वे ही छुट्टियाँ उसे दुःख-दायी मालूम होने लगीं। यहाँ पर वह अतिथि की हैसियत से ठहरा था इसलिए इच्छा न रहने पर भी वह मेरी से बिना मिले जुदा नहीं हो सकता था और न मित्रता ही तोड़ सकता था।

झूठे प्रेम का ढोंग रच रही थी, वह सब रात को मालूम हो गया।"

मेरी जोन्स (झेंपते हुए)—"क्या मालूम हो गया?"

मदन—"यही कि तुम झूठ बोलती हो।"

जोन्स—"कैसे?"

"ऐसे"—कहते हुए मदन ने एक लम्बी स्पीच झाड़ दी और बोला—

"मिस मेरी! भोली-भाली बनकर तुमने मुझे बड़े भुलावे में डाल रक्खा था लेकिन तुम्हारे वास्तविक रूप का अब पूरा पता लग गया है। यदि मैं चाहता तो तुमको उसी समय, जब कि तुम अपने यार की बगल में बल खाकर बैठी हुई थी, बुरा-भला कह सकता था। किन्तु मैं तुम्हारे आनन्द में बाधा डालना नहीं चाहता। मुझे तो बड़ी प्रसन्नता है कि तुम्हारी ये सब बातें मालूम हो गईं।"

मिस जोन्स (झेंप कर)—"अच्छा! अब मैं जो कुछ कहना चाहती हूँ उसे तो सुन लो।"

मदन—"क्या खाक सुन लूँ। अच्छा! अब आप यह बताइये कि रात को अपने मित्र के साथ बाहर घूमने गई थीं या नहीं?"

मेरी जोन्स— मैं इन्कार नहीं करती। किन्तु यदि आप

खूब सोचेंगे तो पता लगेगा कि इसमें भी आप ही का दोष है। कारण, वह लड़का मेरा बचपन का मित्र है, परन्तु जब आपका आवागमन हुआ और मित्रता बढ़ी तो उसका आना-जाना बन्द हो गया।"

मदन—"यह तुम्हारी कोरी बातें हैं, यदि ऐसा होता तो रात को वह कैसे आता और उसके साथ तुम्हारा जाना एक दम कैसे हो जाता?"

मिस जोन्स—"तुम उस लड़के को मेरे साथ देख कर विना विवेक किये—विना निर्णय किये ही भोजनशाला से भूखे उठकर क्यों भाग आये थे?"

मदन—"न आता तो क्या करता? जब देखा कि तुम्हारी निगाह में मुझसे वह अधिक प्यारा मालूम होने लगा तो मुझे भी वह जगह छोड़नी पड़ी।

मिस जोन्स—"यदि आप मुझसे सच्चा प्रेम करते तो हर-गिज अकेली छोड़ कर यों न भाग आते।"

मदन—"सच्चा प्रेम समय पड़ने पर ही मालूम होता है। सोने की जाँच कसौटी पर या गलाने पर ही होती है। यदि मैं वहाँ बैठा रहता और तुम्हे एकान्त न देता तो मुझे इन बातों का पता कैसे लगता?"

गाड़ी के रवाना होने में थोड़ा समय रह गया था।

सोना दिखाई देता है; बुरा भी अच्छा मालूम होने लगता है और पराये भी अपने ज्ञात होते हैं। वह उस सुख में ऐसा लीन हो जाता है कि उसे अपनी आत्मा की उन्नति करने का अवसर ही नहीं मिलता। किन्तु वही सुख जब दुःख मे रूपान्तर हो जाता है तब उसकी आँखें खुलती हैं लेकिन—"अब पछिताये होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत" के अनुसार फिर कुछ नहीं हो सकता। क्योंकि संसारी प्रवंचना ही ऐसी है।

"आत्मा अमर है और शरीर नश्यमान।" मनुष्य ने जब-जब इस शरीर की ओर—अपने सुख-दुःखो की ओर—निगाह फेरी तभी उसे संसार से घृणा हो गई। किन्तु विरले ही ऐसे हैं जिन्होंने विना सुख-दु:ख उठाये संसार का मोह तिनके के समान तज दिया। योगेन्द्र श्री कृष्ण संयम से रहते हुए उससे अलग रहे; बुद्धदेव ने युवाकाल ही मे राज्य, वैभव और सत्ता को ठुकरा कर इस माया-मोह का त्यागन किया, बालक ध्रुव ने पिता के एक छोटे से अपमान से अकुला कर संसार को छोड़ दिया और शुक्राचार्य्य जी ने तो गर्भावस्था ही मे ज्ञान प्राप्त कर वैराग्य धारण किया।

जिस प्रकार एक तीव्र गति एञ्जिन सामने की दीवार में टकरा कर पीछे की ओर लौटता है, उसी प्रकार—ठीक उसी प्रकार मदन भी मेरी के आचरण से उकता कर एक दूसरे विषय

की ओर झुका। जिसको दूसरे शब्दों में पाणि-ग्रहण या शादी के नाम से सम्बोधन कर सकते हैं। यद्यपि इसकी ओर मदन का ध्यान पुस्तकों के अध्ययन से हुआ था, किन्तु अभी तक उसमें एक विचार पर पहुँचने की क्षमता न आई थी। इस विषय पर प्रत्येक मनुष्य अपने विचार अलग २ रखते हैं। कोई इसे धार्मिक संस्कार मानते हैं, कोई नैतिक और कोई-कोई तो इसे केवल बंधन-मात्र समझते हैं। गरज, विरले ही ऐसे मिलेंगे जो इसकी वास्तविकता से परिचित हो। कई सज्जन ऐसे भी हैं जो समाज से इसको उड़ा देना ही चाहते हैं।

एक दिन समीप के डिबेटिङ्ग हॉल में इसी विषय पर वाद-विवाद हो रहा था। मदन को जब मालूम हुआ, तब वह मि० गुना को (जो थोड़े दिनों से उसी के समीप आ बसा था) लेकर वहाँ जा पहुँचा। मार्ग में दोनों की भेंट ऐयर से हुई। वह भी इनके साथ हो लिया। रास्ते में ऐयर ने डिबेट का विषय पूछा तो उसे मदन द्वारा मालूम हुआ कि आज का विषय—"सामाजिक कुरीतियों के कारण शादी की प्रथा को धार्मिक रूप देना" है।

इस वाद-विवाद सभा में—चूँकि यह भारतीय विद्यार्थियों के रहने के स्थान में हुई थी—भारतीय विद्यार्थियों ने ही अधिकांश भाग लिया था हाँ कुछ अंग्रेज अवश्य सम्मिलित हो गये थे। सबके [illegible] सभापति ने सबसे प्रथम ईश्वर प्रार्थना

की। इसके बाद उन्होंने लोगों को विषय का परिचय दिया और कहा कि आज के विषय पर हरएक बोल सकता है।

सभापति महोदय धीमे स्वर में पुनः बोले—

"एक बात और है कि कोई भी व्यक्ति लगातार दो मिनिट से अधिक न बोल सकेगा।"

सब लोग बैठे हुए आपस में हँसी-मजाक कर रहे थे और इस बात से और भी प्रसन्न हो रहे थे कि अब उन्हें बिना किसी प्रकार की रुकावट के अपने विचारों को प्रकट करने का अवसर मिलेगा।

सभापति के स्थान ग्रहण करने पर बहुत से विद्यार्थी बोलने को उठ खड़े हुए। सभापति ने उनमें से एक को बोलने का इशारा किया।

पहला—"मैं समझता हूँ कि सामाजिक कुरीतियों का मुख्य कारण शादी की प्रथा को सामाजिक रूप देना ही है। हम शादी की प्रथा को धार्मिक संस्कार की निगाह से देखते हैं, परन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि यह क्योंकर है? समाज ने कुरीतियों से बचने के लिये इसे धार्मिक रूप दिया, पर हुआ क्या? आज देखते हैं कि हमारा गृहस्थ जीवन भारी दुःख का आगार बना हुआ है।"

वह इतना बोल चुका था कि सभापति ने उसे बैठाकर दूसरे को खड़ा किया।

तरह पिता के नाम पर घर या वंश चलता है उसी तरह माता के नाम पर भी चलना चाहिये।"

मदन—"आपका मतलब यह है कि स्त्री जब तक चाहे अपने पति को पति के रूप मे माने। क्यों?"

पाँचवें विद्यार्थी ने "हाँ" कह कर गर्दन हिलाई और उसी स्वर में कहता गया—"मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। जिससे आप खूब अच्छी तरह समझ जायेंगे—एक स्त्री है उसकी शादी आपसे हुई है। वह आपकी पत्नी कहलाती है और चाहती है कि उसको आपसे सुन्दर, सुघड़ और बलिष्ट सन्तान उत्पन्न हो। कुछ समयोपरान्त सन्तान पैदा हो गई। अब वह स्त्री यदि चाहे तो आपको अपने घर से जाने के लिए कह सकती है यानी तलाक दे सकती है।"

उक्त महाशय की बात सुनकर सब हँसने लगे। हँसते ही हँसते मि० गुप्ता ने कहा—"जिन महानुभावों ने ऐसे हास्य-जनक विचार दर्शाये हैं, मालूम होता है कि वे जानवरों की तरह रहना पसन्द करते हैं?"

"यदि तलाक बन्द कर दिया जाय तो स्त्रियाँ विवश होकर अपने पति की आज्ञाकारिणी बनेंगी एवम् वश में रहेंगी।" एक अन्य विद्यार्थी बोल उठा।

मदन—"स्त्रियों का पति-भक्त होना अनिवार्य्य है, मगर ऐसा करने के लिए उन पर जोर देना अन्याय है। हाँ, इसके लिये पुरुषों को स्वयं उनके योग्य बनना चाहिये।"

मदन के उत्तर मे पहले विद्यार्थी ने कहा—"मेरा तो विचार है कि अगर कम्पेनियेट मेरेज (Companionate Marriage) हो तो अच्छा है। इससे सब कुरीतियाँ मिट जायँगी। स्त्री-पुरुष में प्रेम-भाव और मित्रता होने को ही मैं वास्तविक विवाह समझता हूँ। जब तक दोनो में प्रेम-भाव बना रहे, तब तक दोनों साथ-साथ रहे। जिस दिन अनबन हो जाय, वे अलग-अलग हो सकते हैं। कोर्ट में जाकर निर्णय कराने की कोई जरूरत ही नहीं।"

मदन—"अगर उनके सन्तान हो गई तो उसे कौन रक्खेगा? कौन उसकी परवरिश करेगा?"

पहला विद्यार्थी—"सन्तान का भार या तो पिता पर होगा या सरकार पर।"

पाँचवें विद्यार्थी ने कहा—"मेरी समझ में तो ऐसा आता है कि स्त्रियों को पूर्ण स्वतन्त्रता दे देना चाहिये। बल्कि जिस

तरह पिता के नाम पर घर या वंश चलता है उसी तरह माता के नाम पर भी चलना चाहिये।"

मदन—"आपका मतलब यह है कि स्त्री जब तक चाहे अपने पति को पति के रूप में माने। क्यों?"

पाँचवें विद्यार्थी ने "हाँ" कह कर गर्दन हिलाई और उसी स्वर में कहता गया—"मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। जिससे आप खूब अच्छी तरह समझ जायेंगे—एक स्त्री है उसकी शादी आपसे हुई है। वह आपकी पत्नी कहलाती है और चाहती है कि उसको आपसे सुन्दर, सुघड़ और बलिष्ट सन्तान उत्पन्न हो। कुछ समयोपरान्त सन्तान पैदा हो गई। अब वह स्त्री यदि चाहे तो आपको अपने घर से जाने के लिए कह सकती है यानी तलाक दे सकती है।"

उक्त महाशय की बात सुनकर सब हँसने लगे। हँसते ही हँसते मि० गुप्ता ने कहा—"जिन महानुभावों ने ऐसे हास्य-जनक विचार दर्शाये हैं मालूम होता है कि वे जानवरों की तरह रहना पसन्द करते हैं।

सातवां-परिच्छेद

'सुन्दर-संध्या'

जिस दिन मेरी से रूठ कर मदन विदा हुआ, उसके दूसरे ही दिन उसे मेरी का एक बहुत लम्बा-चौड़ा पत्र मिला। पत्र का आशय इतना हृदय-द्रावक और करुणा-पूर्ण था कि उसे पढ़ते-पढ़ते मदन को रोमांच हो आया। उसके नेत्रों से कई बार आनन्दाश्रु प्रवाहित हो चले। उसको स्वप्न में भी यह आशा न थी कि एक अंग्रेज युवती ऐसा भावपूर्ण पत्र लिख सकती है। उसने उस पत्र को एक बार पढ़ा दो बार पढ़ा तीन बार पढ़ा पर सन्तोष न हुआ। मदन ज्यों-ज्यों उस पत्र को पढ़ता त्यों-त्यों उसके हृदय में एक अजीब तरह की गुदगुदी पैदा होने लगती थी। उसने पत्र में ठौर-ठौर आँसुओं के सूखे दाग देखे जिन्हें देखकर उसके

कोमल हृदय को बड़ी व्यथा पहुँची। उसकी दबी हुई भावनायें जागृत हो उठीं। रह रह-कर उसके हृदय में विचार उत्पन्न होने लगे—"क्या वास्तव में मेरी मुझसे प्रेम करती है, यदि यह सच है तो अन्य व्यक्तियों से बिना मेरी जानकारी के उसने क्यों घनिष्ठता बढ़ाई? क्या मेरी का उसके अलावा भी कोई अन्य प्रेमी है? इत्यादि, इत्यादि।"

मेरी उसे एक पहेली-सी जान पड़ने लगी। यद्यपि मेरी ने उसे पत्र-द्वारा स्पष्ट समझा दिया था—"तुम जो मुझे उस व्यक्ति के साथ बैठे देख ईर्षा से अधीर हो गये थे और बिना सोचे-विचारे मेरे प्रेम को ठुकरा कर वहाँ से चले आये थे, वह तुम्हारा केवल लड़कपन था। तुम्हें चाहिये था कि जब तुमने मुझे उसके साथ प्रेमालाप करते हुए देखा तो अपने सदुपदेशों द्वारा समझा कर मुझे सुमार्ग पर लाते, बुरा भला कहते, साथ चलने पर जोर देते, यदि इतने पर भी मैं तुम्हारा सहयोग न देती तो तुम्हें उचित था कि उस घटना को अपना अपमान समझ मुझे जबरदस्ती उठा लाते। इसी में तुम्हारी आन और शान थी और यही था तुम्हारा गौरव और कर्त्तव्य।"

मुझे तुम्हारी बुजदिली और कमजोरी पर बड़ा दुःख होता है बल्कि हँसी आती है। मित्रता वहीं निभती है जहाँ एक मित्र अपने दूसरे मित्र के दोषों को देखकर उन्हें मिटाने का निर्मूल

खोल लिया। परन्तु अब वह बेहोश हो चुका था। इसी समय वहां गुमा आया। वह कमरे को खटखटाने लगा। मदन में उतनी ताकत कहाँ कि वह बोल सके अतः गुमा के दरवाजे को धक्का दें ही किवाड़ खुल गये। अंदर ही उसे बेहोश मदन दिखाई दिया। गुमा ने सर्वप्रथम सब किवाड़ खोल दिये, क्योंकि उसमें प्राण-घातक गैस की बदबू आ रही थी। उसने मदन को उठाकर पलंग पर सुलाया और उसके सब कपड़े खोल दिये और हवा करने लगा। जब मदन को कुछ होश हुवा तो गुमा दरवाजे के किवाड़ बन्द करके अपने कमरे मे चला गया, ताकि किसी को इस काण्ड का पता न चले।

मदन को नींद आगई। वह स्वप्न मे क्या देखता है कि उसकी विलायत से रवानगी हो गई। वह बम्बई मे एक विशाल मण्डप के नीचे तीन चार हजार पुरुषो को समाज सुधार पर किसी बडे नेता के सभापत्वि मे धिक्कार धिक्कार करके कह रहा है कि 'हमारा समाज बालू की नींव पर खड़ा हुआ है। वह दुर्बल बहुत ही हो गया है और दुर्बल होकर भी सामाजिक कुरीतियो को प्रकट कर रहा है— हमारी इन्ही विचार धाराओ और भारतीय अनुराग मे क्या-क्या पाप और अत्याचार होते हैं जिन पर कुछ कहना मानो किसी हत्या-काड पर कहना है। हमारे स्त्री समाज को समय की और स्त्रियें मे पीछे रख रक्खा है—हम नवयुवको को भारत मे स्वतन्त्रता नहीं

दी जाती—इसका यह परिणाम होता है कि हम बाहर जाकर जिस देश में रहते हैं—उस देश के विचारों के अनुकूल नहीं चलते, हमें वहाँ मुआफिक बनने में अड़चनें मालूम होती हैं—भारतीय अनुराग आकर घेर लेता है। अगर आप अपने पुत्र पुत्रियों को, भाई-बहिनों को विदेशों में शिक्षा ग्रहण करने को भेजना चाहते हैं तो उन्हें पहले मातृभूमि में ही विचारों की स्वतन्त्रता दो जिससे कि वे उसका बाहर जाकर सदुपयोग करें और वहाँ के किसी आफत में फँसकर अपना जीवन नष्ट न कर डालें। यदि हम चाहें कि हमारा देश उन्नति करे तो हमें अपनी विचार संकीर्णता छोड़नी चाहिए। जिस देश, समाज अथवा जाति में जो जो अच्छी बातें हमें दिखाई दें, उन्हें अवश्य ग्रहण करना चाहिये।"

उपस्थित सज्जनों पर उसकी सरलता सरल भाषा और स्वतन्त्र विचार शैली ने ऐसा प्रभाव पड़ा कि सब लोग ताली पीट-पीट कर उससे कह रहे थे कि बोले जाओ बोले जाओ" "तुम जो कहते हो वह बिल्कुल सच है [illegible] किसी ओर से यह भी आवाज आ रही थी कि [illegible] सामने भारतीय विद्यार्थी जीवन का [illegible] [illegible] 'हम' और न नहीं' तुमने देखा [illegible] [illegible] नवयुवकों और [illegible] को अपना [illegible] [illegible] है—[illegible] और [illegible] है—

बोलते क्यों नहीं"। इतने में मदन ने करवट ली—वह क्या देखता है कि वह लंदन में ही अपने कमरे में सोया हुआ है और यह जो कुछ उसने देखा था, वह केवल स्वप्न मात्र था। पर स्वप्न का प्रभाव अभी तक उसके हृदय पर बना हुआ था। उसे अभी तक सन्देह था कि वह लन्दन के किसी कमरे में है या भारतवर्ष में। इतने में गुप्ता ने प्रवेश किया। जिसको देख कर मदन को आज की सारी घटनायें एक-एक कर याद आने लगीं।

सो कर उठने से मदन के हृदय में एक परम शान्ति निवास कर रही थी। राग और द्वेष की भावनायें उसके हृदय से विलीन हो चुकी थीं। आज की सन्ध्या उसे अत्यन्त सुन्दर और सुखद जान पड़ी, क्योंकि अब उसके हृदय में भ्रम और अंधकार के स्थान पर नूतन प्रकाश की उज्ज्वल किरणें प्रकाशमान हो रही थीं।

॥ समाप्तम् ॥